बिखरे मोती

(जिल्द–3)

इंतिख़ाब व तर्तीब

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

ख़ल्फ़ुर्रशीद

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी

बिखरे मोती

(जिल्द-3)

इंतिख़ाब व तर्तीब

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

ख़ल्फ़ुर्रशीद

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी

नज़रसानी

हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमीन साहब पालनपुरी
(उस्ताद हदीस व फ़िक़्ह दारुल उलूम देवबन्द)

हिन्दी रस्मुल-ख़त व तसहीह

एस० ख़ालिद निज़ामी

बिखरे मोती (जिल्द-3)

लेखक

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

संयोजक

नासिर ख़ान

Bikhre Moti (Vol. 3)

Author

Hazrat Maulana Muhammad Yunus Sb. Palanpuri

Edition: 2015

Pages: 208

प्रकाशक

2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Ph.: 011-23289786, 23289159 Fax: 011-23279998
E-mail: faridexport@gmail.com | Website: faridexport.com

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

विषय-सूची

तहरीर

بسم اللہ الرحمن الرحیم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

نَحْمَدُهٗ وَ نُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ اَمَّا بَعْدُ:

नह मदुहू व नुसल्लि अला रसूलिहिल करीम, अम्मा बअ़द!

"'बिखरे मोती' मेरी पसन्दीदा बातों का मजमूआ है, इसके दो हिस्से उर्दू में प्रकाशित हो चुके हैं, लेकिन उनमें ग़लतियां हैं इसलिए नज़रसानी और मुफ़ीद इज़ाफ़ों के बाद प्रकाशित दोनों हिस्सों और जो हिस्से अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं उन सबको प्रकाशित करने की इजाज़त मैं जनाब नासीर खांन को दे रहा हूँ।

फ़रीद बुक डिपो, नई दिल्ली से जो ऐडीशन प्रकाशित हो रहा है उसमें इग़लात की तस्हीह का पूरा एहतिमाम किया गया है, और मुफ़ीद इज़ाफ़े भी किए गए हैं। इसलिए नाशिर उन कुतुब साबिक़ा को प्रकाशित करने की सई न फ़रमाएँ, वस्सलाम।

अल्लाह की रज़ा का तालिब
मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

तआरुफ़ व तबसिरा

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी, दावत व तब्लीग़ के नामवर ख़तीब व वाइज़ मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी (जिन्होंने अपनी पूरी उम्र दावत व तब्लीग़ के लिए वक़्फ़ फ़रमा दी थी, जो हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के ख़ास तर्बियतयाफ़्ता थे, और हज़रत जी की वफ़ात के बाद तो बड़े इज्तिमाआत को उमूमन मौलाना ही ख़िताब फ़रमाते थे। मौलाना की तक़रीर बड़ी मुवस्सिर और आमफ़हम होती थी। दुआ भी तवील फ़रमाते थे, मौलाना यूनुस साहब इन्हीं) के फ़रजन्द अर्जुमन्द हैं और मौलाना की वफ़ात के बाद अपने वक़्त का बड़ा हिस्सा मर्कज़ निज़ामुद्दीन में गुज़ारते हैं, मौलाना को मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रहमतुल्लाहि अलैहि से बैअत व ख़िलाफ़त का शर्फ़ भी हासिल है जिसकी वजह से हज़रत की तस्नीफ़ात का भी ज़ौक़ व शौक़ के साथ मुतालआ फ़रमाते हैं, बड़े इज्तिमाआत में शिर्कत का पूरा एहतिमाम रहता है। जिस वक़्त ये सतरें लिखीं जा रही हैं दो अहम इज्तिमाआत में शिर्कत के बाद उस वक़्त यानी 9 ज़िल हिज्जा को इश्क़ व सरमस्ती के आलम में अरफ़ात में होंगे। अल्लाह तआला हज्जे मबरूर नसीब फ़रमाए। यह एक दूर इफ़्तादा की दुआ है।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّکَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ.

मौलाना अपनी तक़ारीर में अहादीस शरीफ़ा और तक़ारीर और बुज़ुर्गों के तज़्किरों में मज़्कूर मुवस्सिर वाक़िआत व हिकायात और नसाइह व हुक्म को बयान करते, और सामईन के दिलों को गर्माते, और दीनी ग़ैरत व हमिय्यत को जगाते हैं। मौलाना अर्से से ऐसे मुवस्सिर वाक़िआत, तालीमात और बाज़ ज़रूरी मसाइल व फ़तावा की बयाज़ भी

तैयार करते जाते हैं, जो वाक़ई बिखरे मोतियों का बड़ा दिलकश हार है, जो पढ़ने वाले के दिल को खींचता है और रूह को बालीदगी अता करता है, ख़ूसुसन रमज़ानुल मुबारक में मौलाना मौसूफ़ का तरावीह के बाद बम्बई में दो जगह वाअ्ज़ और तफ़्सीर क़ुरआन पाक बयान करने का मामूल है, जिसका सिलसिला बारह बजे रात तक जारी रहता है और इख़्तिताम गुलूगीर आवाज़ में तवील दुआ पर होता है। लोगों ने दूर-दूर कनेक्शन ले रखे हैं जिससे घरों में मस्तूरात भी शौक़ के साथ मौलाना के मुवस्सिर वाअ्ज़ को सुनती हैं, उन तक़रीरों और बयान में मौलाना इन्हीं बिखरे मोतियों को मौक़ा व मुनासिबत से ज़ीनते बयान व तक़रीर बनाते जाते हैं, जो अब किताबी शक्ल में आ गए हैं उन बिखरे मोतियों का मुताला बड़ा मुफ़ीद और दिल को गरमाने वाला है। ज़बान व बयान असान व रवाँ है, अल्लाह तआला से दुआ है कि उससे ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाए।

मौलाना शम्सुल हक़ साहब नदवी

तक़रीज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَحْدَهٗ، وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی مَنْ لَا نَبِیَّ بَعْدَهٗ، أَمَّا بَعْدُ :

अलहम्दुलिल्लाहि वहदहू, वस्सलातु वस्सलामु अला मन ला बअदहू,
अम्मा बअद :

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी; हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी क़ुद्दस सर्रहू के बड़े साहबज़ादे हैं, मौसूफ़ ने सन् 1393 हि० मुताबिक़ सन् 1973 ई० में मज़ाहिर उलूम सहारनपुर से उलूमे मुतदाविला से फ़राग़त हासिल की है। तालिबे इल्मी के ज़माने से आपका महबूब मशग़ला अस्लाफ़ व अकाबिर की किताबों का मुताला और पसन्दीदा बातों को कापी में महफ़ूज़ करना है।

उलूम मुतदाविला से फ़राग़त के बाद एक तवील अर्से तक वालिद मुहतरम के ज़ेरे-साया दावत व तब्लीग़ के काम में शब व रोज़ लगे रहे, और वालिद मुहतरम के औसाफ़ व कमालात को जज़्ब करते रहे, जिन हज़रात ने हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी क़ुद्दस सर्रहू के बयानात सुने हैं और उसको क़रीब से देखा है, वह उस बात की खुले दिल से गवाही देंगे कि मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब ज़ैद मुजद्दहुम अख़्लाक़ व आदात और औसाफ़ व कमालात में उमरसानी हैं।

दावत व तब्लीग़ के काम से मौलाना ज़ैद मुजद्दहुम जो दिलचस्पी रखते हैं वह 'अज़हर मिनश्शम्स' है, और रमज़ानुल मुबारक में तरावीह के बाद बम्बई में मौसूफ़ के जो बयानात होते हैं उनसे आपकी उलूमे क़ुरआन के साथ मुनासिबत अयाँ है। हज़ारों आदमी अपने घरों में कनेक्शन सिर्फ़ मौलाना के बयानात सुनने के लिए रखते हैं। इस तरह मर्दों के साथ मस्तूरात भी आपके बयानों से ख़ूब इस्तफ़ादा करती हैं।

दूसरी तरफ़ मौलाना ज़ैद मुजद्दुम उन पसन्दीदा बातों को जो आप तालिबे इल्मी के ज़माने से अब तक मुंतख़ब व महफ़ूज़ फ़रमा रहे हैं "बिखरे मोती" के नाम से शाया फ़रमा कर पुरी उम्मते मुस्लिमा को फ़ैज़ पहुँचा रहे हैं। बिलाशुब्हा यह किताब इस्मे बामुसम्मा है। जो ख़ुशक़िस्मत उसको देखता है, ख़त्म किए बग़ैर दम नहीं लेता।

इस किताब के दो हिस्से कई नाशिराने कुतुब ने शाया किए हैं, लेकिन उनमें काफ़ी ग़लतियाँ थीं, इसलिए तस्हीह और मुफ़ीद इज़ाफ़ों के बाद हिन्दी में सभी हिस्से फ़रीद बुक डिपो, नई दिल्ली से शाया हो रहा है। इस हिस्से के तमाम मज़ामीन निहायत क़ीमती हैं, ख़ुसूसन अस्माए हुस्ना के ताल्लुक़ से मौसूफ़ ने बड़ी कारआमद बातें जमा कर दी हैं। अल्लाह तआला इस किताब को उम्मत के लिए रुश्द व हिदायत का ज़रिआ बनाए और मौसूफ़ को अज्रे अज़ीम अता फ़रमाए। आमीन या रब्बल आलमीन!

मौलाना मुफ़्ती अमीन साहब पालनपुरी
उस्ताद हदीस व फ़िक़्ह, दारुल उलूम देवबन्द

तक़रीज़

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ، وَ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ، وَ عَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِيْنَ، أَمَّا بَعْدُ:

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन, वल आक़िबतु लिल्मुत्तक़ीन, वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिदल मुरसलीन, व अला आलिही व सहबिही अजमअीन, अम्मा बअद :

"बिखरे मोती" में जनाब मुकर्रम मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी ने गुलहाए रंग-रंग चुनकर हसीन गुलदस्ता तैयार किया है। यह किताब मौलाना ज़ैद मुजद्दहुम का कश्कूल है जिसमें आपने क़ीमती मोती इकट्ठा किए हैं। एक हसीन दस्तख़्वान है जिस पर अनवाअ व अक़साम के लज़ीज़ खाने चुने गए हैं। इस किताब में जहाँ तफ़्सीरी फ़वाइद व निकात हैं, हदीसी नसीहतें व इर्शादात भी हैं। दावती और तब्लीग़ी चाशनी लिए हुए सहाबा और बाद के अकाबिर के वाक़िआत भी हैं जिनसे दिल जल्द असरपज़ीर होता है। नीज़ ऐसी दुआएँ भी शामिले किताब की गई हैं जो गौना अमलियात का रंग लिए हुए हैं। इस तरह किताब बहुत दिलचस्प बन गई है।

नीज़ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमीन साहब पालनपुरी उस्ताद हदीस व फ़िक़्ह दारुल उलूम देवबन्द की नज़रसानी ने उसकी एतिबारियत में इज़ाफ़ा किया है, गोया किताब में चार चाँद लगाए हैं। इसलिए उम्मीद है किताब लोगों के लिए बेहद मुफ़ीद साबित होगी। अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाए और मुसन्निफ़ के लिए ज़ख़ीर-ए-आख़िरत बनाए और उम्मत को उससे फ़ैज़याब फ़रमाए। वस्सलाम।

सईद अहमद पालनपुरी

(उस्ताद हदीस दारुल उलूम देवबन्द
और शारह हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा)

अरज़े नाशिर

इस किताब (बिखरे मोती) के सभी तसहीह शुदा हिस्से उर्दू में फ़रीद बुक डिपो, नई दिल्ली से शाया हो चुके हैं। हिन्दुस्तान के कई नाशिराने कुतुब ने पाकिस्तानी ऐडीशन को जूं का तूं प्रकाशित किया है। उन ऐडीशनों में बहुत ज़्यादा इग़लात हैं, नीज़ अक्सर अरबी इबारतों पर आराब भी नहीं हैं, और बाज़ जगह सिर्फ़ अरबी इबारत है, उसका तर्जुमा नहीं है। मगर किसी नाशिर ने उसकी इस्लाह की तरफ़ तवज्जोह नहीं की।

बिल आख़िर साहिबे किताब हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम ने नाशिर से राब्ता किया और इग़लात की तस्हीह, अरबी इबारतों पर आराब लगाने और उनके तर्जुमे करने की फ़रमाइश की। इसी फ़रमाइश का नतीजा है कि बिखरे मोती (उर्दू) के सभी हिस्से और हिन्दी के दो हिस्से शाया हो चुके हैं। तीसरा हिस्सा आपके हाथ में है।

अलग़र्ज़ किताब को आसान और उमदा बनाने की पूरी कोशिश की गई है, यह महज़ अल्लाह जल्ले शानुहू का फ़ज़्ल व करम और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम की दुआओं की बरकत है। अल्लाह तआला इस किताब को मौलाना और उनके अहले ख़ाना के लिए सदक़-ए-जारियह और क़ारईन के लिए रुश्द व हिदायत का ज़रिआ बनाए। आमीन या रब्बल आलमीन!

मुहम्मद नासिर ख़ान
फ़रीद बुक डिपो,
नई दिल्ली-2

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हम्द बारी तआला

ज़मीं तेरी ज़मां तेरा, है अम्र कुन फ़कां तेरा
तू ख़ल्लाक़े जहां या रब! है मख़्लूक़ आसमां तेरा

शजर तरे समर तेरे, है और आबे रवां तेरा
फ़लक पर ज़ूफ़िशां वो कारवाने कहकशां तेरा

तू मताओ गुल ख़नदां, गुलों में बूए गुल तेरी
तुयूराने चमन तेरे, निज़ामे गुलसितां तेरा

बहर गोशे बहर जानिब तजल्ली आम है तेरी
बहर सू हैं तेरे जलवे, हर एक शै में निशां तेरा

हैं औसाफ़ो सना तेरे लबे ख़ारे बयाबां पर
वुहूशे दश्त की या रब ज़बां पर है बयां तेरा

दरख़्शां कौकबो शम्सो क़मर हैं नूर से तेरे
उजाला ज़ुल्मतों में हर तरफ़ है ज़ूफ़िशां तेरा

तू पोशीदा में है ज़ाहिर, तू ज़ाहिर में है पोशीदा
हक़ीक़त यह है कि बेशक अयां तेरा निहां तेरा

सनाख़ां सिर्फ़ गुलशन में अनादिल ही नहीं तेरे
गुलों में ख़ार भी पाया गया तस्बीह ख़ां तेरा

हवादिसे मौजो तूफ़ान व भँवर गिरदाब में तेरे
तेरी रहमत मेरी कश्ती है बहरे बेकरां तेरा

क़लम में है न वो क़ुव्वत, ज़बां में है न वो ताक़त
बयां हो वस्फ़ कैसे ऐ मकीने ला मकां मेरा

बवक़्ते मर्ग 'राग़िब' है यह तुझसे इल्तिजा या रब
मयस्सर दीद आक़ा नाम हो विर्दे ज़बां तेरा

☆☆☆

लुग़ात :

हम्द : तारीफ़; **अम्र** : हुक्म, फ़रमान; **कुन फ़कान** : हो जा तो हो गया (इसमें इस आयत की तरफ़ इशारा है : وَاِذَا قَضٰى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ

"व इज़ा क़ज़ा अमरन फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन फ़-य-कूनo"

और जब हुक्म करता है किसी काम का तो यही फ़रमाता है कि होजा, पस वह हो जाता है– सूरा बक़रा, आयत 117); **ख़ल्लाक़े जहां** : दुनिया को पैदा करने वाला; **शजर** : दरख़्त; **समर** : फल; **आबे रवां** : बहता हुआ पानी; **फ़लक** : आसमान; **ज़ूफ़िशां** : रौशन, रौशनी देने वाला; **कारवां** : क़ाफ़िला; **कहकशां** : बारीक-बारीक सितारों की लम्बी सफ़ेदी जो आसमान पर रात के वक़्त लम्बी गली की मानिंद मालूम होती है; **मताअ** : पूंजी; **गुलेख़न्दां** : खिला हुआ फूल; **बुए गुल** : फूल की ख़ुश्बू; **तुयूराने चमन** : बाग़ के परिंदे; **तजल्ली** : रौशनी, चमक, जलवा; **जलवा** : रौशन; **शै** : चीज़; **औसाफ़** : ख़ूबियां; **सना** : तारीफ़; **लब** : होंठ; **ख़ारे बयाबां** : जंगल के कांटे; **वुहूशे दश्त** : जंगली जानवर; **दरख़्शां** : चमकता हुआ, रौशन; **कौकब** : सितारा; **शम्स** : आफ़ताब, सूरज; **क़मर** : चांद; **अयां** : ज़ाहिर, खुला हुआ; **निहां** : पोशीदा, छुपा हुआ; **सनाख़्वां** : तारीफ़ करने वाला; **गुलशन** : चमन, बाग़; **अनादिल** : बुलबुले; **ख़ार** : कांटा; **तस्बीहख़्वां** : पाकी बयान करने वाला; **बहरे बेकरां** : निहायत वसीअ समुन्दर; **मकीने ला मकां** : ऐसा मालिके मकान जो किसी जगह में नहीं यानी अल्लाह तआला; **मर्ग** : मौत; **राग़िब** : शायर का नाम; **इल्तिजा** : गुज़ारिश, दरख़्वास्त; **मुयस्सर** : दस्तयाब, हासिल; **दीदे आक़ा** : ख़ुदा तआला का दीदार; **विर्दे ज़बां** : ज़बान पर चढ़ा हुआ, वह बात जो हर वक़्त ज़बान पर जारी रहे।

मुनाजाते बारी तआला

ढल गया दिन ज़िंदगी का आ गई शामे अजल, ऐ ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल
है सफ़र लम्बा, नहीं दामन में कुछ नक़्द अमल, ऐ ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल

आदमी ही आदमी को कर रहा है ज़लील, ऐ मेरे रब्बे जलील
आदमियत की हदों से जा रहा है यह निकल, ऐ ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल

होते होते ज़िंदगी सारी की सारी कट गई बे अमल बे आगही
मौत बढ़ती आ रही है लम्हा लम्हा, पल ब पल, ऐ ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल

आदमी मुख़्तार भी है आदमी मजबूर भी, पास भी है दूर भी
दूर अपने आप से होने लगा है आजकल, ऐ ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल

दौलते इल्मो यक़ीं से मुझको मालामाल कर, मुझे ख़ुशहाल कर
बे-यक़ीनी को मेरे ईमाने कामिल से बदल, ऐ ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल

बन्द हैं सोचों के दरवाज़े, दरीचे फ़िक्र के या इलाही खोल दे
ज़ेहन है मफ़्लूज, जज़्बात व एहसासात शल, ऐ ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल

हो सफ़र मक्के का मंज़िल हो मदीना आख़िरी, आरज़ू है एक यही
जी दयारे हिन्द में लगता नहीं है आजकल, ऐ ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल

भेज दे इक बार अबाबीलों का लश्कर भेज दे, अपने कअबे के लिए
अबरहा वाले हैं फिर आमाद-ए-शर आजकल, ऐ ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल

मैंने पाबन्दी हमेशा तेरे एहकाम की की है, और दिन रात की
और होती भी रही कोताही-ए-फ़िक्रो अमल, ऐ ख़ुदाए अज्ज़ व जल्ल

मेरी हिम्मत, मेरी क़ुव्वत जो भी कुछ है सब तेरा, कुछ नहीं उसमें मेरा
तूने दी है जो नक़ाहत तूही देगा मुझको बल, ऐ ख़ुदाए अज्ज़ व जल्ल

क्या करे तेरी सना? है 'राही' बे नुत्क़ो नवां, उसकी फिर औक़ात क्या?
हैं सदा मह्वे सना अरज़ो समा, दश्तो जबल, ऐ ख़ुदाए अज्ज़ व जल्ल

लुग़ात :

मुनाजात : दुआ, वह नज़्म जिसमें ख़ुदा की तारीफ़ और अपनी आजिज़ी का इज़्हार करके दुआ मांगी जाए; **अजल** : मौत, क़ज़ा; **ज़लील** : रुसवा; **जलील** : बुज़ुर्ग; **बे-आगही** : बेख़बरी; **दरीचा** : छोटा दरवाज़ा, खिड़की; **मफ़्लूज** : बेहिस; **शल** : बेहिस; **नक़ाहत** : कमज़ोरी; **बल** : ताक़त; **राही** : शायर का तख़ल्लुस है; **नुत्क़** : गोयाई; **नवा** : आवाज़, सदा; **औक़ात** : हैसियत; **सदा** : हमेशा, हर वक़्त; **मह्वे सना** : तारीफ़ में मुंहमिक; **अर्ज़** : ज़मीन; **समां** : आसमान; **दश्त** : जंगल; **जबल** : पहाड़।

परेशानियों से नजात का नबवी नुस्ख़ा

हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स किसी मुसीबत या परेशानी में गिरफ़्तार हो उसे चाहिए कि अज़ान के वक़्त का मुंतज़िर रहे। और अज़ान का जवाब देने के बाद मुंदर्जाज़ैल दुआ पढ़े और उसके बाद अपनी हाजत और ख़ुशहाली की दुआ करे तो उसकी दुआ ज़रूर क़बूल होगी। दुआ-ए-मुबारक यह है :

أَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ الصَّادِقَةِ الْمُسْتَجَابِ لَهَا دَعْوَةِ الْحَقِّ وَكَلِمَةِ التَّقْوٰى أَحْيِنَا عَلَيْهَا وَأَمِتْنَا عَلَيْهَا وَابْعَثْنَا عَلَيْهَا وَاجْعَلْنَا مِنْ خِيَارِ أَهْلِهَا أَحْيَاءً وَّأَمْوَاتًا (حصن حصین ص:١١٨)

ज़बान की तेज़ी का नबवी इलाज

अबू नईम ने हिलियह में हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की यह रिवायत नक़ल की है कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से अपनी ज़बान की तेज़ी की शिकायत की। आप सल्ल० ने फ़रमाया : तुम इस्तिग़फ़ार से कहाँ ग़फ़लत में पड़े हो? मैं तो रोज़ाना सौ (100) मर्तबा इस्तिग़फ़ार करता हूँ– अबू नईम की दूसरी रिवायत में है कि मैंने हुज़ूर अकरम सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मेरी ज़बान घर वालों के लिए तेज़ हो जाती है जिससे मुझे डर है कि यह मुझे आग में दाख़िल कर देगी, आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया है कि "मैं रोज़ाना सौ (100) मर्तबा इस्तिग़फ़ार करता हूँ, तुम भी इस्तिग़फ़ार करो। इस्तिग़फ़ार की कसरत से ज़बान की तेज़ी ज़ायल हो जाएगी।

(हयातुस्सहाबा-3 : 349)

नीयत में भी अज्र है

एक साहब ने घर तामीर करवाया और उसमें रौशनदान भी रखे। फिर अपने घर एक बुज़ुर्ग को हुसूले बरकत और दुआ की ग़र्ज़ से ले गए। बुज़ुर्ग ने पूछा : मकान में रौशनदान क्यों बनवाए? उन्होंने जवाब

दिया इनके ज़रिये रौशनी अन्दर आती है। बुज़ुर्ग ने कहा यह नीयत क्यों न की कि उसके ज़रिये अज़ान की आवाज़ आएगी, रौशनी और हवा तो यूँ ही आ जाती है। (हिकायात रूमी, पेज : 89)

सबसे ज़्यादा महबूब अमल

हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा महबूब अमल सुब्हतुल हदीस है, और अल्लाह को सबसे ज़्यादा नापसन्द अमल तहरीफ़ है। हमने अर्ज़ किया या रसुलुल्लाह! सुब्हतुल हदीस क्या? फ़रमाया : सुब्हतुल हदीस यह है कि लोग बातें कर रहे हों और एक आदमी तस्बीह व तहलील और अल्लाह का ज़िक्र कर रहा हो। फिर हमने पूछा : या रसुलुल्लाह! तहरीफ़ क्या है? आपने फ़रमाया : तहरीफ़ यह है कि लोग ख़ैरियत से हों। अच्छे हाल पर हों, और कोई पड़ोसी या साथी पूछे तो यूँ कह दे कि हम बुरे हाल में हैं।

हज़रत अबू इदरीस ख़ोलानी रह० कहते हैं कि हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : तुम लोगों के साथ बैठते हो तो लोग लामुहाला बातें शुरू कर देते हैं। लिहाज़ा जब तुम देखो कि लोग अल्लाह से ग़ाफ़िल हो गए हैं तो तुम उस वक़्त अपने रब की तरफ़ पूरे ज़ौक़ व शौक़ से मुतवज्जेह हो जाओ। वलीद रावी कहते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद बन जाबिर रह० के सामने इस हदीस को ज़िक्र किया गया तो उन्होंने कहा, यह बात ठीक है और मुझे हज़रत अबू तलहा हकीम बिन दीनार रह० ने बताया कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन कहा करते थे कि मक़बूल दुआ की निशानी यह है कि जब तुम लोगों को ग़ाफ़िल देखो तो उस वक़्त तुम अपने रब की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाओ। (हयातुस्सहाबा 3 : 343)

बाज़ार में भी दुआ क़बूल होती है

हज़रत अबू क़लाबा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : बाज़ार में दो आदमियों की आपस में मुलाक़ात हुई। एक ने दूसरे से कहा, लोग इस वक़्त (अल्लाह से) ग़ाफ़िल हैं, आओ! हम अल्लाह से मग़फ़िरत तलब करें। चुनांचे हर एक ने ऐसा किया। फिर दोनों में से एक का इंतक़ाल हो गया। दूसरे ने उसे ख़्वाब में देखा तो उसने कहा तुम्हें मालूम है कि जब शाम को बाज़ार में हमारी मुलाक़ात हुई थी तो अल्लाह तआला ने उस वक़्त हमारी मग़फ़िरत कर दी थी। (हयातुस्सहाबा 3 : 343)

जिन्नात के शर से हिफ़ाज़त का बेहतरीन नुस्ख़ा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : मैं हिम्स से चला और रात को ज़मीन के एक ख़ास टुकड़े में पहुँचा तो उस इलाक़े के जिन्नात मेरे पास आ गए। उस पर मैंने सूरा आराफ़ की यह आयत आख़िर तक पढ़ी :

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِىْ سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ، يُغْشِى اللَّيْلَ النَّهَارَ. يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا، وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهٖ، أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَ الْأَمْرُ، تَبَارَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ.

(آیت ۵۴)

इस पर उन जिन्नात ने एक-दूसरे से कहा, अब तो सुबह तक इसका पहरा दो (चुनांचे उन्होंने सारी रात मेरा पहरा दिया)। सुबह को मैं सवारी पर सवार होकर वहाँ से चल दिया। (हयातुस्सहाबा 3 : 326)

अपनी औरतों को सूरा नूर सिखाओ

हज़रत मिसवर बिन मख़रमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमाते हुए सुना— सूरा बक़रा, सूरा निसा, सूरा माइदा, सूरा हज और सूरा नूर ज़रूर सीखो

क्योंकि अल्लाह तआला ने जो आमाल फ़र्ज़ किए हैं वे सब इन सूरतों में मज़्कूर हैं। हज़रत हारिसा बिन मुज़रिब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हमें ख़त में यह लिखा कि सूरा निसा, सूरा अहज़ाब और सूरा नूर सीखो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : सूरा बरा-अत सीखो और अपनी औरतों को सूरा नूर सिखाओ और उन्हें चाँदी के ज़ेवर पहनाओ। (हयातुस्सहाबा 3 : 260)

शादी सादी होनी चाहिए

हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : हम लोग तवाफ़ कर रहे थे। मैंने तवाफ के दौरान हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को उनकी बेटी से शादी का पैग़ाम दिया तो वह ख़ामोश रहे और मेरे पैग़ाम का कोई जवाब न दिया। मैंने कहा अगर यह राज़ी होते तो कोई न कोई जवाब ज़रूर देते। अब अल्लाह की क़सम मैं उनसे इस बारे में कोई बात नहीं करूँगा। अल्लाह की शान वह मुझसे पहले मदीना वापस पहुँच गए। मैं बाद में मदीना आया। चुनांचे मैं हुज़ूर अक़दस सल्ल० की मस्जिद में दाख़िल हुआ और जाकर हुज़ूर अकरम सल्ल० को सलाम किया और आप सल्ल० की शान के मुताबिक़ आप सल्ल० का हक़ अदा करने की कोशिश की। फिर हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने ख़ुश आमदीद कहा और फ़रमाया : कब आए हो? मैंने कहा अभी पहुँचा हूँ। उन्होंने फ़रमाया : हम लोग तवाफ़ कर रहे थे और अल्लाह तआला को अपनी आँखों के सामने होने का ध्यान जमा रहे थे, उस वक़्त तुमने मुझसे (मेरी बेटी) सौदा बिन्त अब्दुल्लाह का ज़िक्र किया था। हालांकि तुम मुझसे इस बारे में किसी और जगह भी मिल सकते थे। मैंने कहा ऐसा होना मुक़द्दर था, इसलिए ऐसा हो गया। उन्होंने फ़रमाया : अब तुम्हारा इस बारे में क्या ख़्याल है? मैंने कहा : अब तो पहले से भी ज़्यादा तक़ाज़ा है। चुनांचे उन्होंने अपने दोनों बेटों हज़रत सालिम और हज़रत अब्दुल्लाह को बुलाकर मेरी शादी कर दी। (हयातुस्सहाबा 3 : 354)

एक तारीख़ी शादी

एक बाप जब अपनी लड़की को किसी के हवाले करता है तो यह उसके लिए नाज़ुकतरीन वक़्त होता है, उसका अंदाज़ा शायद वही लोग कर सकते हैं जो ख़ुद इस तजुर्बे से गुज़रे हों। बड़े बड़े लोगों के क़दम इस मक़ाम पर आकर फिसल जाते हैं।

इन हालात में बज़ाहिर यह नामुमकिन मालूम होता है कि एक बाप अपनी बेटी के निकाह के लिए अमीर कबीर शहज़ादे के बजाए एक ग़रीब तालिबे इल्म को पसन्द करे। मौजूदा ज़माने में तो इसको सोचा भी नहीं जा सकता। मगर तारीख़ का एक दौर ऐसा भी गुज़रा है जब यह नामुमकिन चीज़ न थी बल्कि वक़ूअ पर आई थी।

सईद बिन मुसय्यिब एक जलीलुल क़द्र ताबई गुज़रे हैं। वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के दूसरे साल मदीना के एक सहाबी के घर में पैदा हुए, और पछत्तर (75) साल की उम्र में सन् 94 हि० में इंतिक़ाल फ़रमाया।

सईद बिन मुसय्यिब को बड़े बड़े सहाबा रज़ि० से फ़ैज़ हासिल करने का मौक़ा मिला। मशहूर हाफ़िज़े हदीस सहाबी हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु उनके ख़ुस्र थे। इस वजह से ख़ुसूसियत के साथ उनसे इस्तिफ़ादा का मौक़ा मिला। चुनांचे सईद बिन मुसय्यिब की मरवियात का बड़ा हिस्सा अबू हुरैरा ही की अहादीस पर मुशतमिल है। वह अपने वक़्त के बहुत बड़े बुज़ुर्ग और आलिम थे। मैमून बिन मेहरान का बयान है कि मैं जब मदीना गया और वहाँ के सबसे बड़े फ़क़ीह को पूछा तो लोगों ने मुझे सईद बिन मुसय्यिब के घर पहुँचा दिया। इब्ने हिब्बान के अल्फ़ाज़ हैं : "वह तमाम अहले मदीना के सरदार थे"। हज़रत हसन बसरी रह० जैसे बुज़ुर्ग को जब किसी मसले में इश्काल पेश आता तो वह उनके पास लिख भेजते थे।

ज़ुहद व तक़वा का यह आलम था कि अब्दुल्लाह बिन उमर

रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने आपके बारे में फ़रमाया : "अगर रसूलुल्लाह सल्ल० उस शख़्स को देखते तो बहुत ख़ुश होते"। नमाज़ बाजमाअत का इतना एहतिमाम था कि चालीस साल तक एक वक़्त की भी नमाज़ बाजमाअत नाग़ा नहीं हुई। मदीना की तारीख़ में "हर्रा" का वाक़िआ निहायत मशहूर वाक़िआ है। यह वाक़िआ यज़ीद और अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि० के इख़्तिलाफ़ के ज़माने में पेश आया। अहले मदीना ने जब अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की हिमायत में अब्दुल्लाह बिन हंज़ला को सरदार बिनाकर यज़ीद की बैअत तोड़ दी, उस वक़्त यज़ीद की फ़ौजें तीन दिन तक बराबर मदीनतुर्रसूल में क़त्ले आम करती रहीं और उसको लूटती रहीं। इस पुरआशूब ज़माने में कोई शख़्स घर से बाहर क़दम रखने की हिम्मत न करता था। मस्जिदों में बिल्कुल सन्नाटा रहता था। ऐसे नाज़ुक वक़्त में भी सईद बिन मुसय्यिब मस्जिद ही में जाकर नमाज़ पढ़ते थे। लोग उन्हें देखकर कहते : "ज़रा इस बूढ़े मजनून को देखो कि इस हालत में भी मस्जिद नहीं छोड़ता।"

उमवी हुकूमत का बानी मरवान बिन हकम अपने बाद अलत-तर्तीब अब्दुल मलिक और उसके भाई अब्दुल अज़ीज़ को ख़लीफ़ा बना गया था। मरवान के बाद अब्दुल मलिक की नीयत में फ़ुतूर हुआ। उसने अब्दुल अज़ीज़ को वली अहदी से ख़ारिज करके अपने लड़कों वलीद और सुलैमान को वली अहद बनाना चाहा, लेकिन फिर क़बीअह बिन ज़ुवैब के समझाने से रुक गया। अब्दुल मलिक की ख़ुशक़िस्मती से जल्द ही अब्दुल अज़ीज़ का इंतिक़ाल हो गया।

अब अब्दुल मलिक के लिए मैदान साफ़ था। उसने वलीद और सुलैमान को वली-अहद बनाकर उनकी बैअत के लिए सूबेदारों के नाम फ़रमान जारी कर दिए। हिशाम बिन इसमाईल जो मदीना का वाली था, उसने अहले मदीना से बैअत के लिए सईद बिन मुसय्यिब को बुलाया। उन्होंने जवाब दिया : "मैं अब्दुल मलिक की ज़िंदगी में दूसरी बैअत नहीं कर सकता।"

यह एक बहुत संगीन मामला था, क्योंकि सईद बिन मुसय्यिब की मुख़ालिफ़त के मानी यह थे कि मदीना से एक भी हाथ बैअत के लिए न बढ़े। चुनांचे हिशाम ने सईद बिन मुसय्यिब को कोड़े से पिटवाया और उनको सख़्त सज़ाएँ दीं। उसके बाद अबू बक्र बिन अब्दुर्रहमान को उनसे गुफ़्तुगू के लिए भेजा गया। वापसी के बाद हिशाम ने पूछा : क्या सईद मार के बाद कुछ नर्म पड़े, अबू बक्र ने जवाब दिया : तुम्हारे इस सुलूक के बाद ख़ुदा की क़सम वह पहले से ज़्यादा सख़्त हो गए हैं। अपना हाथ रोक लो।

अब अब्दुल मलिक ने तदबीर सोची, और जो शख़्स कोड़ों की मार से राज़ी नहीं हुआ था, उसको दुनिया की लालच से मोह लेने का मंसूबा बनाया। सईद बिन मुसय्यिब की एक लड़की जो सूरत और सीरत दोनों में बहुत मुमताज़ थी और आला तालीमयाफ़ता भी थी, उसने सोचा कि वली-अहद से उसका निकाह करके उसको अपनी बहू बना ले। इस तरह बाप ख़ुद नर्म पड़ जाएगा। उसने अमीरे मदीना हिशाम बिन इसमाईल अल मख़ज़ूमी (जो सईद बिन मुसय्यिब के अज़ीज़ भी थे) के ज़िम्मे सईद बिन मुसय्यिब को राज़ी करने का काम सुपुर्द किया।

हिशाम को अपनी नाकामी की पूरी उम्मीद थी। लेकिन ख़लीफ़ा के हुक्म की तामील में सईद बिन मुसय्यिब की ख़िदमत में हाज़िर हुए, लेकिन इधर उधर की बातें करते रहे। उसके बाद कहा :

"जैसा कि आपको इल्म है। अब्दुल मलिक बिन मरवान ने अपने दोनों बेटों वलीद और सुलैमान के लिए अवाम से बैअ्त लेने का इरादा किया है। बैअ्त लेने से पहले अमीरुल मोमिनीन यह भी चाहते हैं कि वलीद को आप अपनी दामादी का शर्फ़ बख़्शें।"

यह सुनते ही सईद बिन मुसय्यिब के चेहरे का रंग गुस्से से मुतग़ैयर हो गया। उन्होंने कहा : "मुझे इन दोनों में से कुछ भी मंज़ूर नहीं।"

इस इनकार के नतीजे में सईद बिन मुसय्यिब को दोबारा मुख़्तलिफ़ क़िस्म की सख़्तियाँ झेलनी पड़ीं और तरह-तरह से उन पर दबाव डाले

गए। मगर वह अपने इंकार पर बराबर क़ायम रहे— और दूसरी तरफ़ यह सोचते रहे कि कोई मुनासिब रिश्ता सामने आए तो लड़की का अक़्द कर दिया जाए। उसके बाद क़ुरैश के एक गुमनाम और ग़रीब आदमी अबू वदाआ के साथ उसकी शादी कर दी।

मशहूर मुवर्रिख़ इब्ने ख़ल्क़ान ने ख़ुद अबू वदाआ की ज़बानी यह वाक़िआ निहायत तफ़सील से नक़ल किया है। जिसका तर्जुमा ये है :

"मैं सईद बिन मुसय्यिब के हलक़े में पाबन्दी से बैठा करता था। एक मर्तबा कुछ मुद्दत तक हाज़िर न हो सका। उसके बाद जब गया तो उन्होंने पूछा इतने दिनों तुम कहाँ थे? मैंने जवाब दिया कि मेरी बीवी का इंतिक़ाल हो गया था इस वजह से हाज़िर न हो सका। उन्होंने कहा : फिर हमें क्यों न तुमने ख़बर की? हम भी उस तजहीज़ व तक्फ़ीन में शरीक होते। उसके बाद जब मैं उठने लगा तो उन्होंने कहा : तुमने दूसरी बीवी का कोई इंतिज़ाम किया? मैंने कहा : ख़ुदा आप पर रहम फ़रमाए, कौन मेरे साथ शादी करेगा जबकि मैं दो-चार दिरहम से ज़्यादा की हैसियत का आदमी नहीं हूँ। उन्होंने कहा अगर मैं करूँ तो तुम करने के लिए तैयार हो? मैंने कहा : बहुत ख़ूब! इससे बेहतर क्या है। इसके बाद उन्होंने अल्लाह की हम्द बयान की और नबी सल्ल० पर दुरूद भेजा और उसी वक़्त दो या तीन दिरहम पर मेरे साथ अपनी लड़की का निकाह पढ़ा दिया।

अबू वदाआ कहते हैं कि मैं उसके बाद वहाँ से उठा और मेरी ख़ुशी का आलम यह था कि मेरी समझ में नहीं आता था कि मैं क्या करूँ? मैं अपने मकान पहुँचा और इस फ़िक्र में पड़ गया कि अब रुख़्सती वग़ैरह के लिए क़र्ज़ कहाँ से हासिल करूँ? मैंने मग़रिब की नमाज़ पढ़ी, उस दिन मैं रोज़े से था। नमाज़ के बाद मैंने चाहा कि खाना खाऊँ, जौ की रोटी थी और ज़ैतून का तेल। इतने में दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ आई। मैंने पूछा कौन है? आवाज़ आई सईद। मैंने सईद बिन मुसय्यिब को छोडकर उस नाम के हर शख़्स का तसव्वुर किया, क्योंकि सईद बिन मुसय्यिब तो चालीस साल से अपने घर और मस्जिद के अलावा कहीं देखे

नहीं गए। उठकर दरवाज़ा खोला तो वहाँ सईद बिन मुसय्यिब खड़े थे। उनको देखकर मअन ख़्याल हुआ कि शायद उनका ख़्याल बदल गया है और वह फ़िस्ख़ निकाह कराने आए हैं। मैंने कहा : ऐ अबू मुहम्मद (इब्ने मुसय्यिब की कुन्नियत) आपने क्यों ज़ेहमत फ़रमाई, मुझे बुला भेजा होता। उन्होंने कहा : इस वक़्त मुझी को तुम्हारे पास आने की ज़रूरत थी। मैंने कहा : फिर क्या हुक्म है? उन्होंने कहा : मुझे ख़्याल आया कि तुम अपने घर में तंहा होगे। हालांकि अब तो तुम्हारी शादी हो चुकी है। मुझे गवारा नहीं हुआ कि तुम तंहा रात बसर करो, यह है तुम्हारी बीवी। उस वक़्त इब्ने मुसय्यिब की साहबज़ादी ठीक उनके पीछे खड़ी थीं। उन्होंने साहबज़ादी को दरवाज़े के अंदर करके बाहर से ख़ुद ही दरवाज़ा बन्द कर दिया और वापस चले गए।

मेरी बीवी शर्म के मारे गिर पड़ी, फिर मैंने अंदर से दरवाज़ा बन्द किया, और उसके बाद छत पर चढ़कर पड़ोसियों को आवाज़ दी। वे लोग जमा हुए और पूछा क्या क़िस्सा है? मैंने कहा : सईद बिन मुसय्यिब ने आज अपनी लड़की का अक़्द मेरे साथ कर दिया और आज ही अचानक वह उसे मेरे घर भी पहुँचा गए, और यहाँ वह घर में मौजूद है। लोगों ने आकर उसे देखा, मेरी माँ को ख़बर हुई तो वह भी आ गईं, और उन्होंने कहा : उसको छूना तुम्हारे लिए हराम है जब तक कि मैं हस्बे दस्तूर तीन दिन तक उसे बना संवार न लूँ। चुनांचे मैं तीन दिन तक रुका रहा। उसके बाद उसके पास गया, मैंने पाया कि वह एक हसीन व जमील ख़ातून है, किताबुल्लाह की हाफ़िज़ा और सुन्नत रसूलुल्लाह की आलिमा है और शौहर के हुक़ूक़ को ख़ूब पहचानने वाली है।

अबू वदाआ बयान करते हैं कि उसके बाद एक माह तक मैं घर ही पर रह गया। उस दौरान में सईद बिन मुसय्यिब का न कोई हाल मालूम हुआ, और न उनसे मुलाक़ात हुई। फिर एक महीने के बाद उनकी सोहबत में हाज़िर हुआ, उस वक़्त वहाँ मज्लिस क़ायम थी। मैंने सलाम किया। उन्होंने सलाम का जवाब दिया। उसके बाद कोई बातचीत न की, यहाँ तक कि जो लोग मस्जिद में थे सब चले गए। उसके बाद जब मेरे

सिवा कोई वहाँ नहीं रह गया तो उन्होंने पूछा तुम्हारे साथी का क्या हाल है? मैंने कहा, बेहतरीन हाल है। उन्होंने कहा :

"इन्न राब-क शैउन फ़लअसा"। यानी वह कोई नापसन्दीदा हरकत करे तो उसे मारो।

फिर मैं अपने घर लौट आया—और यह सईद बिन मुसय्यिब की लड़की थी जिसके लिए ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान ने अपने लड़के वलीद का पैग़ाम दिया था— जब उसने उसको वली अहद बनाया था तो सईद बिन मुसय्यिब ने शहज़ादा वलीद से रिश्ता करने से इंकार किया जिसकी वजह से अब्दुल मलिक सईद बिन मुसय्यिब के पीछे पड़ गया, यहाँ तक कि सख़्त सर्दी के दिन में उन्हें कोढ़े से पीटा गया और ठण्डा पानी डाला गया।

(माहनामा रिज़वान, लखनऊ, अक्टूबर 1966 ई० पे. : 8-11)

आसमान की तरफ़ सिर उठाकर इस्तिग़फ़ार कीजिए, अल्लाह मुस्कुरा कर माफ़ कर देंगे

हज़रत अली बिन रबीआ रह० कहते हैं मुझे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने पीछे बिठाया और हर्रह की तरफ़ ले गए, फिर आसमान की तरफ़ सिर उठाकर फ़रमाया : ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा! क्योंकि तेरे अलावा और कोई गुनाहों को माफ़ नहीं करता। फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जेह होकर मुस्कुराने लगे। मैंने कहा : ऐ अमीरुल मोमिनीन! पहले आपने अपने रब से इस्तिग़फ़ार किया फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जेह होकर मुस्कुराने लगे, यह क्या बात है?

उन्होंने फ़रमाया : हुज़ूर अकरम सल्ल० ने एक दिन मुझे अपने पीछे बिठाया था, फिर मुझे "हर्रह" की तरफ़ ले गए थे। फिर आसमान की तरफ़ सिर उठाकर फ़रमाया : ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा। क्योंकि तेरे अलावा और कोई गुनाहों को माफ़ नहीं करता। फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जेह होकर मुस्कुराने लगे थे। मैंने कहा या रसूलल्लाह! पहले

आपने अपने रब से इस्तिग़फ़ार किया फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जेह होकर मुस्कुराने लगे, इसकी क्या वजह है?

फ़रमाया : मैं इस वजह से मुस्कुरा रहा हूँ कि मेरा रब अपने बन्दे पर ताज्जुब करके मुस्कुराता है (और कहता है) इस बन्दे को मालूम है कि मेरे अलावा और कोई गुनाहों को माफ़ नहीं करता।

(हयातुस्सहाबा 3 : 350)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ का घर के तमाम कोनों में आयतुल कुर्सी पढ़ने का मामूल था

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबैदा बिन उमैर रह० कहते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु जब अपने घर में दाख़िल होते तो उसके तमाम कोनों में आयतुल कुर्सी पढ़ते।

(हयातुस्सहाबा 3 : 327)

चन्द नसीहत आमूज़ अश्आर

عَلَيْكَ بِتَقْوَى اللّٰهِ إِنْ كُنْتَ غَافِلاً
يَأْتِيْكَ بِالْأَرْزَاقِ مِنْ حَيْثُ لَاتَدْرِىْ

ज़रूरी है कि तुम तक़वा इख़्तियार करो अगर तुम ग़फ़लत में हो
वह तुम्हें ऐसी जगह से रोज़ी देगा जिसकी तुम्हें ख़बर भी नहीं

فَكَيْفَ تَخَافُ الْفَقْرَ وَاللّٰهُ رَازِقًا
فَقَدْ رَزَقَ الطَّيْرَ وَالْحُوْتَ فِى الْبَحْرِ

जब अल्लाह राज़िक़ है तो तुम्हें फ़क्र का ख़ौफ़ क्या है?
वह तो परिंदे को और मछली को दरिया में खिलाता है

وَمَنْ ظَنَّ أَنَّ الرِّزْقَ يَاتِى بِقُوَّةٍ
مَا أَكَلَ الْعُصْفُوْرُ شَيْئًا مَعَ النَّسْرِ

और जो यह समझे कि रोज़ी ताक़त से मिलती है
(अगर यह बात होती तो) गधे के होते हुए गोरय्या को कुछ भी न मिलता

تَــزَوَّدْ مِــنَ الــدُّنْيَــا فَــاِنَّكَ لَا تَــدْرِىْ
اِذَا جَـنَّ عَـلَيْكَ الـلَّيْلُ هَلْ تَعِيْشُ اِلٰى الفَجْرِ

दुनिया को बक़द्र तोशा हासिल करो इसलिए कि तुम्हें ख़बर नहीं
कि जब रात की तारीकी तुमपर छा गई तो तुम सुबह तक ज़िंदा रह सकोगे

فَـكَـمْ مِـنْ صَـحِيْـحٍ مَـاتَ مِنْ غَيْـرِ عِلَّةٍ
وَكَـمْ مِـنْ سَقِيْـمٍ عَاشَ حِيْـنًـا مِّنَ الـدَّهْـرِ

कितने सेहतमंद बिला किसी मर्ज़ के मौत के मुँह में चले गए
और बहुत से बीमार मुद्दतों तक ज़िंदा रहे

وَكَـمْ مِـنْ فَتًـى أَمْسٰـى وَاَصْبَـحَ ضَـاحِـكًـا
وَأَكْفَـانُـهٗ فِىْ الْغَيْـبِ تُـنْسَـجُ وَهُوَ لَايَدْرِىْ

और कितने ही नौजवान सुबह व शाम हँसते रहते है
लेकिन उन्हें ख़बर नहीं कि उनके कफ़न की तैयारी ऊपर हो रही है

فَـــمَـــنْ عَـــاشَ اَلْـــفًـــا وَّاَلْـــفَيْـــنِ
فَلَابُـــدَّمِـــنْ يَـــوْمٍ يَسِيْـــرُ اِلَـــى الْـقَبْـــرِ

जो हज़ार दो हज़ार साल तक ज़िंदा रहा
उसको भी ज़रूर एक न एक दिन क़ब्र में जाना है

(दीवान हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु)

फ़ित्नों से नहीं बल्कि गुमराह करने वाले फ़ित्नों से पनाह माँगनी चाहिए

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी को सुना कि फ़ित्ने से पनाह माँग रहा था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः ऐ अल्लाह! इसकी दुआ के अल्फ़ाज़ से तेरी पनाह चाहता हूँ। फिर उस आदमी से कहा : क्या777 तुम अल्लाह से यह माँग रहे हो कि वह तुम्हें बीवी-बच्चे और माल न दे? (क्योंकि क़ुरआन में माल और औलाद को फ़ित्ना कहा गया है) तुममें से जो भी फ़ित्ने से पनाह माँगना चाहता है उसे चाहिए कि वह गुमराह करने वाले फ़ित्नों से पनाह माँगे।

(हयातुस्सहाबा 3 : 360)

शैतान से हिफ़ाज़त का अजीब नुस्ख़ा

हज़रत शअबी रह० कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : जो रात को किसी घर में सूरह बक़रा की दस (10) आयतें पढ़ेगा उस घर में सुबह तक कोई शैतान दाख़िल नहीं होगा। वह दस (10) आयतें यह हैं : सूरा बक़रा की शुरू की चार (4) आयतें, आयतुल कुर्सी, उसके बाद की दो (2) आयतें और सूरा बक़रा की आख़िरी तीन (3) आयतें। (हयातुस्सहाबा 3 : 325)

क़िस्तों में ज़्यादा क़ीमत पर फ़रोख़्त करना जाइज़ है

आपने देखा होगा कि जो दुकानदार क़िस्तों में अशया फ़रोख़्त करते हैं वह आम बाज़ारी क़ीमत से ज़्यादा क़ीमत पर फ़रोख़्त करते हैं। मसलन एक मोटर साईकल की क़ीमत आम बाज़ार में तीस हज़ार (30000) रुपये है। लेकिन क़िस्तों पर फ़रोख़्त करने वाले पैंतीस हज़ार (35000) रुपये उसकी क़ीमत लगाएंगे। अब अगर उसकी क़ीमत तै हो जाए और क़िस्तें मुतय्यन हो जाएँ कि कितनी क़िस्तों में उसकी अदायगी की जाएगी

तो यह सूरत जाइज़ है। अलबत्ता अगर ख़रीदार ने कोई क़िस्त वक़्त पर अदा न की तो उसकी वजह से क़ीमत में इज़ाफ़ा नहीं होगा। इसलिए कि जब एक मर्तबा क़ीमत मुतय्यन हो गई तो उसमें इज़ाफ़ा करना बाद में जाइज़ नहीं है। (दर्स तिर्मिज़ी 4 : 104, मौलाना तक़ी उसमानी)

ज़ालिम और मज़्लूम के दर्मियान अल्लाह सुलह कराएगा

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हमने एक दफ़ा नबी करीम सल्ल० को देखा कि आप मुस्कुरा रहे हैं, तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा, या रसुलुल्लाह! कौन-सी चीज़ हँसी का सबब हुई? फ़रमाया कि मेरे दो उम्मती ख़ुदा के सामने घुटने टेककर खड़े हो गए हैं। एक ख़ुदा से कहता है कि या रब! इसने मुझ पर ज़ुल्म किया है, मैं बदला चाहता हूँ। अल्लाह पाक उस (ज़ालिम) से फ़रमाता है कि अपने ज़ुल्म का बदला अदा कर दो।

ज़ालिम जवाब देता है, या रब! अब मेरी कोई नेकी बाक़ी नहीं रही कि ज़ुल्म के बदले में उसे दे दूँ। तो वह मज़्लूम कहता है कि ऐ ख़ुदा! मेरे गुनाहों का बोझ इस पर डाल दे। यह कहते हुए हुज़ूर सल्ल० आबदीदा हो गए और फ़रमाने लगे कि वह बड़ा ही सख़्त दिन होगा। लोग इस बात के हाजतमंद होंगे कि अपने गुनाहों को बोझ किसी और के सिर धर दें।

अब अल्लाह पाक तालिबे इंतिक़ाम से फ़रमाएगा कि नज़र उठाकर जन्नत की तरफ़ देख! वह सिर उठाएगा, जन्नत की तरफ़ देखेगा, और अर्ज़ करेगा या रब! इसमें तो चाँदी और सोने के महल हैं, मोतियों के बने हुए हैं। या रब! यह महल किस नबी और किस सिद्दीक़ और शहीद के हैं? अल्लाह तआला फ़रमाएगा, जो उसकी क़ीमत अदा करता है उसको दे दिए जाते हैं। वह कहेगा : या रब! कौन इसकी क़ीमत अदा कर सकता है? अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि तू इसकी क़ीमत अदा कर सकता है।

अब वह अर्ज़ करेगा या रब! किस तरह? अल्लाह जल्ले शानुहू इरशाद फ़रमाएगा : इस तरह कि तू अपने भाई को माफ़ कर दे। वह कहेगा : या रब! मैंने माफ़ किया। अल्लाह पाक फ़रमाएगा : अब तुम दोनों एक-दूसरे का हाथ थामे जन्नत में दाख़िल हो जाओ। उसके बाद आपने फ़रमाया कि :

"ख़ुदा से डरो, आपस में सुलाह क़ायम रखो, क्योंकि क़ियामत के दिन अल्लाह पाक भी मोमिनों के दर्मियान आपस में सुलाह कराने वाला है।" (तफ़सीर इब्ने कसीर 2 : 269)

सअद बिन मुआज़ का अजीब क़िस्सा

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब (मशहूर अंसारी सहाबी) सअद बिन मुआज़ की वफ़ात हुई, तो हम लोग रसुलल्लाह सल्ल० के साथ उनके जनाज़े पर गए। फिर जब रसुलल्लाह सल्ल० ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, और उनको क़ब्र में उतार कर क़ब्र बराबर कर दी गई तो रसुलल्लाह सल्ल० ने सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह कहा : (आपको देखकर आपकी इत्तिबाअ में) हम भी देर तक सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह कहते रहे। फिर आपने अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर कहना शुरू किया। तो हम भी आप की इत्तिबाअ में अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर कहने लगे। फिर आपसे पूछा गया कि या रसूलुल्लाह! इस वक़्त आपकी इस तस्बीह और तकबीर का क्या ख़ास सबब था? आप सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह के इस नेक बन्दे पर उसकी क़ब्र तंग हो गई थी (जिससे उसको तकलीफ़ थी) यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने तंगी की उस कैफ़ियत को दूर फ़रमा कर कुशादगी पैदा फ़रमा दी और उसकी तकलीफ़ दूर कर दी। (मुस्नद अहमद)

तौज़ीह :— सअद बिन मुआज़ अंसारी रसूलुल्लह सल्ल० के मशहूर व मुमताज़ सहाबा में से थे :

1. ग़ज़वा बद्र में शिरकत की फ़ज़ीलत व सआदत उन्हें हासिल थी।

2. सत्तर हज़ार (70000) फ़रिश्तों ने उनके जनाज़े में शिरकत की।

3. आसमान के दरवाज़े उनके लिए खोले गए।

4. उनकी वफ़ात पर रहमान का अर्श हरकत में आ गया।

5. हुज़ूर सल्ल० के सीना या रान पर उनका विसाल हुआ।

6. हुज़ूर सल्ल० ने अपने हाथों से उनके लिए क़ब्र खोदी।

7. हर फावड़े की चोट पर उनकी क़ब्र से मुश्क की ख़ुश्बू निकलती थी।

8. बनूं क़ुरैज़ा के बारे में सअद बिन मुआज़ ने जो फ़ैसला किया, उस फ़ैसले पर हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : ऐ सअद! तूने जो फ़ैसला किया है यही फ़ैसला अल्लाह ने आसमानों के ऊपर किया है।

9. क़ब्र से मुश्क की ख़ुश्बू जब निकलती थी तो आप सल्ल० फ़रमाते जाते थे, वाह! वाह! कितनी अच्छी है मर्दे मोमिन की क़ब्र की ख़ुश्बू।

10. जिस कमरे में सअद बिन मुआज़ की लाश रखी हुई थी वह कमरा फ़रिश्तों से खचाखच भरा हुआ था। एक फ़रिश्ते ने पर हटाया तब जाकर हुज़ूर सल्ल० को बैठने की जगह मिली।

11. जब जनाज़ा उठा तो हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : फ़रिश्ते इसके जनाज़े को उठाए हुए हैं– बावजूद इसके कि क़ब्र की तंगी की तकलीफ़ से उनको भी वास्ता पड़ा (अगरचे फ़ौरन ही वह उठा ली गई)। इसमें हम जैसों के लिए बड़ा इंतिबाह और बड़ा सबक़ है।

"अल्लाहुम-मरहमना अल्लाहुम-महफ़ज़ना"

"ऐ अल्लाह! हम पर रहम फ़रमा, ऐ अल्लाह! हमारी अज़ाबे क़ब्र से हिफ़ाज़त फ़रमा।"

रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में दूमतुल जिंदल के अमीर ने एक रेशमी जुब्बा भेजा था। सहाबा किराम ने ऐसा क़ीमती और शानदार जुब्बा कभी न देखा था। सहाबा उसको बार-बार छूते और उसकी नर्मी व नज़ाकत पर ताज्जुब का इज़्हार करते थे। आपने सहाबा किराम के इस अमल को देखकर फ़रमाया : क्या तुमको यह बहुत अच्छा मालूम हो रहा है? जन्नत में सअ़द बिन मुआज़ के रूमाल इससे बहुत ज़्यादा बेहतर और नर्म व नाज़ुक हैं। (सीयरि आलामुन नबला, पेज : 284-296, सही मुस्लिम, फ़ज़ाइल सअ़द बिन मुआज़, सुनन नसई फ़िल जनाइज़, जामेअ तिर्मिज़ी फ़िल लिबास, हयातुस्सहाबा)

बीवी कैसी होनी चाहिए

औरत में दर्जे ज़ेल उमदा ख़ुसूसियात का होना ज़रूरी है। इससे निकाह में मुदावमत और ख़ैर व बरकत होती है।

1. औरत नेकबख़्त और दीनदार हो, यह ख़स्लत बहुत ही ज़रूरी है। अगर औरत अपनी ज़ात में और शर्मगाह की हिफ़ाज़त में कच्ची होगी तो मामला बिगड़ जाएगा। इसी लिए हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया :

   تُنْكَحُ الْمَرْأَةُ لِأَرْبَعٍ لِمَا لِهَا وَلِحَسَبِهَا وَلِجَمَالِهَا وَلِدِيْنِهَا فَاظْفَرْ بِذَاتِ الدِّيْنِ تَرِبَتْ يَدَاكَ. (بخاری و مسلم بروایت ابو ہریرہ، مشکوٰۃ ص:٢٦٧)

   "औरत से चार चीज़ों की वजह से निकाह किया जाता है :

   (1) उसके माल की वजह से, (2) उसके ख़ानदान की वजह से, (3) उसके जमाल की वजह से, (4) और उसके दीन की वजह से, पस तेरे हाथ ख़ाक आलूद हों, तू दीनदार को इख़्तियार कर।"

2. औरत ख़ुश-खुल्क़ हो, जो शख़्स फ़ारिग़ुल-बाल रहने का तालिब और दीन पर मदद का ख़ाहां हो उसके लिए ख़ुशखुल्क़ औरत का होना ज़रूरी है, मिल जाए तो बसा ग़नीमत।

किसी अरब ने कहा है : छः क़िस्म की औरतों से निकाह न करो :

(1) أَنَّانَةٌ: वह औरत जो हर वक़्त कराहती रहे। थोड़ी-सी परेशानी पर बावीला शुरू कर दे।

(2) مَنَّانَةٌ: वह औरत जो ख़ानदान पर हर वक़्त एहसान जताए कि मैंने तेरी ख़ातिर यह किया और वह किया।

(3) حَنَّانَةٌ: वह औरत जो पहले शौहर पर या पहले शौहर की औलाद पर फ़रेफ़्ता हो।

(4) حَدَّاقَةٌ: वह औरत जो हर चीज़ की ख़्वाहिश रखे और अपने शौहर से माँगे।

(5) بَرَّاقَةٌ: वह औरत जो हर वक़्त बनाव श्रृंगार में लगी रहे।

(6) شَدَّاقَةٌ: वह औरत जो ज़्यादा बकती रहे।

इन छः क़िस्म की औरतों से निकाह न करे। हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया है कि :

إِنَّ اللّٰهَ يَبْغَضُ الثَّرْثَارِيْنَ الْمُتَشَدِّقِيْنَ (ترمذی بروایت جابرؓ)

"अल्लाह तआला बुग़्ज़ रखते हैं ज़्यादा बकने वालों और मुँह फैला फैलाकर बातें करने वालों से।"

3. ख़ूबसूरत औरत से निकाह करे। औरत ख़ूबसूरत होगी तो किसी और तरफ़ निगाह नहीं जाएगी। इसलिए निकाह से पहले देख लेना मुस्तहब है। अल्लाह तआला ने जन्नत की हूरों की तारीफ़ में फ़रमाया है : "ख़ैरातुन हिसानुन" (यानी ख़ुशख़ुल्क़ और ख़ूबसूरत औरतें) और "क़ासिरातुत-तरफ़ि" (नीची निगाह रखने वाली औरतें)। लिहाज़ा जिस औरत में ये ख़ूबियां होंगी वह जन्नत की हूर है।

4. मह्र थोड़ा हो। हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया कि उमदा बीबियाँ

वे हैं जो ख़ूबसूरत हों और उनका मह्र थोड़ा हो। और फ़रमाया कि औरत में ज़्यादा बरकत वाली औरत वह है जिसका मह्र कम हो। जिस तरह औरत की जानिब से मह्र में ज़्यादती का होना मकरूह है उसी तरह मर्द का औरत के माल का हाल दरयाफ़्त करना और उससे माल हासिल करना भी बुरा है। माल की ख़ातिर औरत से निकाह न करना चाहिए। हज़रत सुफ़यान सौरी रह० फ़रमाते हैं कि जब कोई आदमी निकाह करे और यह पूछे कि औरत के पास क्या है? कितना माल है? तो जान लो कि वह चोर है, और जब मर्द कुछ तोहफ़ा सुसराल में भेजे तो यह नीयत न करे कि उनके यहां से उसके बदले में ज़्यादा मिले, इसी तरह लड़की वाले यह नीयत न करें कि लड़के वालों के यहाँ से ज़्यादा मिले। यह नीयत ख़राब है, बाक़ी रहा हदिया भेजना तो यह दोस्ती का सबब होता है। आंहज़रत सल्ल० का फ़रमान है : "तहादव तहाब्बू" यानी एक दूसरे को हदिया देते रहो बाहम मुहब्बत होगी।

5. औरत बांझ न हो, अगर उसका बांझ होना मालूम हो जाए तो उससे निकाह न करे। हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया है कि : "अलैकुम बिल वलूदिल वलूदि" यानी निकाह ऐसी औरत से करो जिससे औलाद होती हो और वह शौहर से मुहब्बत रखती हो।

6. औरत कुँवारी हो। कुँवारी होने से शौहर को औरत के साथ मुहब्बत कामिल हो जाती है।

7. औरत हसब-नसब वाली हो, यानी ऐसे ख़ानदान वाली हो जिसमें दयानत और नेकबख़्ती पाई जाए। क्योंकि ऐसे ख़ानदान की औरत अपनी औलाद की अच्छी तर्बियत कर सकती है, कमज़र्फ़ ख़ानदान की औरत नहीं कर सकती। (मुख़्तसर मज़ाकुल आरफ़ीन 2 : 142)

काम-काज सवेरे शुरू करो, इंशाअल्लाह बरकत होगी

सख़्रुल ग़ामदी रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दुआ फ़रमाई : 'ऐ अल्लाह! सवेरे में मेरी उम्मत के लिए बरकत अता फ़रमा।' चुनांचे ख़ुद आँहज़रत सल्ल० जब कोई लश्कर जिहाद के लिए रवाना फ़रमाते तो सुबह सवेरे रवाना फ़रमाते। कहते हैं कि हज़रत सख़र रज़ियल्लाहु अन्हु एक ताजिर थे, वह अपना तिजारती माल हमेशा सुबह-सवेरे भेजा करते थे। उसकी बरकत से वह ख़ुशहाल और सरमायादार हो गए। (इब्ने माजा, तरजुमाननुस्सुन्नह, जिल्द 4, सफ़हा : 478)

किसी क़ौम का सरदार अगर तुम्हारे पास आए तो उसका इकराम करना चाहिए

(हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ाइल व अहवाल)

हज़रत जरीर रज़ि० अगरचे बहुत ताख़ीर से इस्लाम लाए, लेकिन उनका शुमार अअयाने सहाबा में होता है। यह अपनी क़ौम के सरदार थे, उनके मदीना तय्यिबा हाज़िर होने से पहले ही रसूलुल्लाह सल्ल० ने उनकी आमद की इत्तिलाअ दे दी थी। उनके ईमान लाने के वाक़िये से भी उनकी अज़्मत और जलालत का पता चलता है, यह जिस वक़्त मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुए उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल० ख़ुत्बा दे रहे थे । और मस्जिद भरी हुई थी, उनको बैठने के लिए जगह नहीं मिली। रसूलुल्लाह सल्ल० ने उनके लिए अपनी चादर मुबारक जिसको आप ज़ेबतन फ़रमाए हुए थे भेज दी और फ़रमाया : इसपर बैठो। उन्होंने वह चादर उठाकर अपने सीने से लगा ली और अर्ज़ किया :

أَكْرَمَكَ اللّٰهُ كَمَا أَكْرَمْتَنِيْ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ

"या रसूलुल्लाह! अल्लाह आपको भी ऐसे ही इकराम व एज़ाज़ से नवाज़े जैसे कि आपने मुझे इकराम व एज़ाज़ से नवाज़ा है।"

आपने उनसे उस चादर पर बैठने का इसरार फ़रमाया और यह भी इरशाद फ़रमाया :

أَشْهَدُ أَنَّكَ لَاتَبْغِیْ عُلُوًّا فِیْ الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا.

"मैं गवाही देता हूँ कि तुम ज़मीन में न बरतरी के तालिब हो और न फ़साद करना चाहते हो।"

इसी मज्लिस में हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम ले आए। इस वाक़िये की बाज़ रिवायात में यह भी ज़िक्र है कि सहाबा किराम ने आपके इस ग़ैर-मामूली इकराम के मुताल्लिक़ आपसे सवाल किया तो आपने फ़रमाया :

إِذَا أَتَاكُمْ كَرِيْمُ قَوْمٍ فَأَكْرِمُوْهُ

"अगर किसी क़ौम का सरदार तुम्हारे पास आए तो उसका इकराम करना चाहिए।"

बाद में भी रसूलुल्लाह सल्ल० का तर्ज़े अमल उनके इकराम व एज़ाज़ ही का रहा है। ख़ुद हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

مَاحَجَبَنِیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم مُنْذُ أَسْلَمْتُ وَلَا رَآنِیْ إِلَّا تَبَسَّمَ

"इस्लाम लाने के बाद जब भी मैं हाज़िरे ख़िदमत होता और आपसे अंदर हाज़िर होने की इजाज़त चाहता, आप हमेशा मुझे अंदर आने की इजाज़त दे देते और हमेशा मुझे देखकर तबस्सुम फ़रमाते।"

ज़मान-ए-जाहिलियत में अहले यमन ने अपने यहां एक नक़ली काबा बना लिया था। जिसका नाम "ज़ुल ख़लसा" था। उसको वे लोग काबा यमानिया कहते थे। उसमें कुछ बुत रख छोड़े थे जिनकी पूजा करते थे। रसूलुल्लाह सल्ल० के क़ल्बे मुबारक में उसकी तरफ़ से मुसलसल ख़लिश रहती थी। आपने हज़रत जरीर रज़ि० से फ़रमाया : तुम इस झूठे और नक़ली काबा को मुंहदिम कर दो तो मेरे दिल को सुकून नसीब हो जाए।

हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने आपके हुक्म की तामील में एक सौ पचास (150) ताक़तवर शहसवारों को लेकर यमन के सफ़र का इरादा कर लिया। लेकिन मेरा हाल यह था कि मैं घोड़े की सवारी से वाक़िफ़ न था और घोड़े पर से गिर जाया करता था। मैंने अपना यह हाल आप सल्ल० से अर्ज़ कर दिया। आपने अपना दस्ते मुबारक मेरे सीने पर मारा, और दुआ की :

اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَّهْدِيًّا

"ऐ अल्लाह! जरीर को घोड़े की कमर पर जमा दीजिए और उसको हिदायत देने वाला और हिदायतयाफ़्ता बना दीजिए।"

हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उस दुआ की बरकत से मैं ऐसा शहसवार हो गया कि फिर कभी भी घोड़े से नहीं गिरा। और फिर मैंने और मेरे साथियों ने जाकर उस "ज़ुल ख़लसा" यानी नक़ली काबा को मुंहदिम कर दिया और उसमें आग लगाकर उसको राख कर दिया। जब रसूलुल्लाह सल्ल० को मेरी कामयाबी की इत्तिलाअ हुई तो आपने मेरे लिए और मेरे साथियों के लिए पांच मर्तबा बरकत की दुआ फ़रमाई।

हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु हिज्जतुल विदाअ में भी आप सल्ल० के साथ शरीक हुए हैं और आप सल्ल० ने उनसे एक ख़ुत्बा के वक़्त फ़रमाया था कि लोगों को ख़ामोश कर दो।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में उनको इराक़ की जंगों में शिर्कत के लिए भेज दिया था। उन्होंने उन जंगों में कारहाए नुमायां अंजाम दिए। फ़तह क़ादसिया में भी उनका बड़ा दख़ल था। उन जंगों से फ़ारिग होकर वह कूफ़ा में ही क़यामपज़ीर हो गए थे और वहीं उनकी वफ़ात हुई है।

हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु को अहले मदीना ख़ुसूसन अंसारी सहाबा किराम से बड़ी मुहब्बत थी। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक सफ़र में मैं हज़रत जरीर रज़ि० के साथ था, वह रास्ते

में मेरी ख़िदमत करते थे। मेरे मना करने पर फ़रमाने लगे मैंने हज़रात अंसार सहाबा किराम का जो तर्ज़े अमल रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ देखा है उसके बाद से मैंने क़सम खाली है कि जब भी मुझे किसी सारी सहाबी की सोहबत का मौक़ा नसीब होगा मैं उनकी ख़िदमत ज़रूर करूंगा— सहीह मुस्लिम में इस रिवायत के रावी मुहम्मद बिन अलमुसना और मुहम्मद बिन बशार रह० ने रिवायत नक़ल करने के बाद यह भी ज़िक्र किया है कि हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से उम्र में बड़े थे।

बातिनी कमालात के साथ अल्लाह ने (उनको) हुस्ने ज़ाहिरी से भी बहुत नवाज़ा था। वह इंतिहाई हसीन व जमील थे। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु उनको 'यूसुफ़ु हाज़िहिल उम्मह' कहते थे। मतलब यह था कि वह इस उम्मत में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरह हसीन व जमील हैं। (मआरिफ़ुल हदीस 8 : 682)

दुनिया की तकलीफ़ में पांच चीज़ें बहुत सख़्त हैं

शर्फ़ुद्दीन अहमद यहया मनेरी (रह०) ने कहा है कि हमने दुनिया की तकलीफ़ और मुसीबत को देखा तो पांच चीज़ें बहुत सख़्त नज़र आईं : 1. परदेस में बीमारी, 2. बुढ़ापे में मुफ़्लिसी, 3. जवानी की मौत, 4. बीनाई के बाद आंखों की रौशनी का चला जाना, 5. वस्ल के बाद जुदाई। (मक्तूबात सदी, पेज : 259)

हज़रत मुआविया रज़ि० के अख़्लाक़ हज़रत वाइल बिन हजर रज़ि० के साथ

हज़रत वाइल बिन हजर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अक़दस सल्ल० ने उनको "हज़र मौत" में ज़मीन का एक टुकड़ा बतौर जागीर अता फ़रमाया। और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर अक़दस सल्ल० ने उनके साथ भेजा था कि वह ज़मीन उनके हवाले कर दें।

हज़रत वाइल बिन हजर रज़ियल्लाहु अन्हु "हज़र मौत" के बड़े नवाब और बड़े सरदार थे। वाक़िआ लिखा है कि जब हुज़ूर अक़दस सल्ल० ने हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को उनके साथ "हज़र मौत" की तरफ़ रवाना किया तो हज़रत वाइल बिन हजर रज़ि० ऊँट पर सवार थे और हज़रत अमीर मुआविया रज़ि० के पास कोई सवारी नहीं थी, इसलिए वह पैदल उनके साथ रवाना हुए। रास्ते में जब सहरा (रेगिस्तान) में धूप तेज़ हो गई और गर्मी पढ़ गई तो हज़रत मुआविया रज़ि० के पांव जलने लगे, उन्होंने हज़रत वाइल बिन हजर रज़ि० से फ़रमाया कि गर्मी बहुत है और मेरे पांव जल रहे हैं, तुम मुझे अपने ऊंट पर पीछे सवार कर लो, ताकि मैं गर्मी से बच जाऊं। तो उन्होंने जवाब में कहा :

لَسْتَ مِنْ أَرْدَافِ الْمُلُوْكِ

"तुम बादशाहों के साथ उनके पीछे बैठने के क़ाबिल नहीं हो।"

लिहाज़ा तुम ऐसा करो कि मेरे ऊंट का साया ज़मीन पर पड़ रहा है तुम उस साये में चलते हुए मेरे साथ आ जाओ। चुनांचे हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदीना मुनव्वरा से यमन तक पूरा रास्ता इसी तरह तै किया इसलिए कि हुज़ूर अक़दस सल्ल० ने साथ जाने को हुक्म दिया था। चुनांचे वहां पहुंच कर उनको ज़मीन दी फिर वापस तशरीफ़ ले आए।

बाद में अल्लाह तआला का करना ऐसा हुआ कि हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुद ख़लीफ़ा बन गए। उस वक़्त यह हज़रत वाइल बिन हजर हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मुलाक़ात के लिए यमन से दमिश्क़ तशरीफ़ लाए तो हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने बाहर निकल कर उनका इस्तक़बाल किया और उनका बड़ा इकराम किया और हुस्ने सुलूक फ़रमाया। (दर्स तिर्मिज़ी 4 : 347)

ख़ुदकुशी करने वाला काफ़िर नहीं है उसकी भी मग़फ़िरत हो सकती है

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि तुफ़ैल बिन अम्र दौसी (अपने क़बीले की तरफ़ हिजरत करने की दरख़्वास्त लेकर) रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आप एक मज़बूत क़िला और मुहाफ़िज़ जमाअत की तरफ़ हिजरत करना मंज़ूर फ़रमा सकते हैं?—रावी कहता है कि ज़मान-ए-जाहिलियत में क़बीला दौस के पास एक क़िला था—रसूलुल्लाह सल्ल० ने उस .ख़ुशनसीबी की वजह से जो अल्लाह तआला ने अंसार के लिए मुक़द्दर फ़रमा दी थी उनके साथ जाने से इंकार कर दिया।

जब आंहज़रत सल्ल० ने मदीना हिजरत की तो तुफ़ैल बिन अम्र और उनकी क़ौम के एक और शख़्स ने भी साथ-साथ हिजरत की। इत्तिफ़ाक़ यह कि मदीना की आब व हवा उन्हें मुवाफ़िक़ न आई, उनका रफ़ीक़ बीमार पड़ गया और तकलीफ़ बरदाश्त न कर सका। उसने अपने तीर का पीकान (भाला) निकाल कर अपनी उंगलियों के जोड़ काट डाले। उसके हाथों से ख़ून बह निकला यहां तक कि उसकी वफ़ात हो गई।

तुफ़ैल बन अम्र ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो सूरत उनकी बहुत अच्छी थी मगर हाथ ढके हुए थे। दरयाफ़्त किया कि तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हारे साथ क्या मामला किया? उन्होंने जवाब दिया कि आंहज़रत सल्ल० के साथ हिजरत करने की बरकत से मुझे बख़्श दिया गया। फिर उनसे पूछा कि तुम अपने हाथ ढांके हुए क्यों नज़र आ रहे हो? उसने कहा मुझसे यह कह दिया गया है कि तुमने जो ख़ुद बिगाड़ा—हम उसे नहीं संवारेंगे—तुफ़ैल ने यह ख़्वाब रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया। आपने दुआ फ़रमाई : ऐ अल्लाह! उसके हाथों की भी बख़्शिश फ़रमा दे।

तौज़ीह :— इस हदीस से मालूम हुआ कि मग़फ़िरत में भी तज्ज़िया (तक़सीम व बंटवारा) हो सकता है, यहां मग़फ़िरत ने तुफ़ैल के रफ़ीक़ के सारे जिस्म को तो घेर लिया था मगर अमानते इलाहिया में

बेजा दस्तअंदाज़ी की वजह से उसके हाथों को छोड़ दिया गया—यह शख़्स क्या ही ख़ुशनसीब था कि उसका मुक़द्दमा रहमतुल लिल आलमीन के सामने आ गया और आपके मुबारक हाथ उसकी सिफ़ारिश के लिए उठ गए। फिर क्या था, रहमत ने उसकी रग रग को घेर लिया।

(मुस्लिम, तर्जुमानुस्सनह 2 : 124)

दस मर्तबा सूरा इख़्लास पढ़ लो गुनाहों से महफ़ूज़ रहोगे

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जो सुबह की नमाज़ के बाद दस मर्तबा "क़ुलहु वल्लाहु अहद" (यानी सूरा इख़्लास) पढ़ेगा वह सारा दिन गुनाहों से महफ़ूज़ रहेगा। चाहे शैतान कितना ही ज़ोर लगाए।

आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया : सुबह और शाम तीन मर्तबा "क़ुलहु वल्लाहु अहद" (यानी सूरा इख़्लास) और मुअव्विज़तैन (सूरा फ़लक़ और सूरा नास) पढ़ा करो, उनका पढ़ना हर चीज़ से किफ़ायत करेगा।

(हयातुस्सहाबा 3 : 324)

शबे मेराज़ में फ़रिश्तों ने पुछना लगाने की ताकीद फ़रमाई थी मगर आज लोगों ने उसे बिल्कुल छोड़ दिया है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने मेराज में पेश आने वाली जो बातें बयान फ़रमाईं, उनमें एक बात यह भी थी कि आप फ़रिश्तों की जिस जमाअत पर भी गुज़रे उन्होंने कहा कि आप अपनी उम्मत को हजामत यानी पछने लगाने का हुक्म दीजिए।

(मिश्कातुल मसाबीह सफ़हा : 389)

अरब में पछने लगाने का बहुत रिवाज था। इससे ज़ायद ख़ून और फ़ासिद ख़ून निकल जाता है। बलड प्रेशर का मर्ज़ जो आम हो गया

है, उसका बहुत अच्छा इलाज है। लोगों ने इसे बिल्कुल ही छोड़ दिया है। रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने सिर पर और मोंढों के दर्मियान पछने लगवाए थे। (हवाला बाला)

जिन्नात के शर से बचने का बेहतरीन नुस्ख़ा

मुवत्ता इमाम मालिक में बरिवायत यह्या बिन सईद (मुर्सलन) नक़ल किया है कि जिस रात रसूलुल्लाह सल्ल० को सैर कराई गई तो आपने जिन्नात में से एक अफ़्रियत को देखा जो आग का शोला लिए हुए आपका पीछा कर रहा था। आप जब भी (दाएं बाएं) इल्तिफ़ात फ़रमाते वह नज़र पड़ जाता था, जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया : क्या मैं आपको ऐसे कलिमात न बताऊं कि उनको आप पढ़ लेंगे तो उसका शोला बुझ जाएगा और यह अपने मुंह के बल गिर पड़ेगा। आपने फ़रमाया कि हाँ बताओ! इस पर जिब्रील अमीन ने कहा कि यह कलिमात पढ़ें :

أَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْكَرِيْمِ وَ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ اللَّاتِیْ لَا يُجَاوِزُ هُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ مِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَشَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَشَرِّ مَا ذَرَأَ فِی الْأَرْضِ، وَشَرِّمَا يَخْرُجُ مِنْهَا، وَمِنْ فِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمِنْ طَوَارِقِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَّا رَحْمَانُ!

जहन्नम की आग से बचने का बेहतरीन नुस्ख़ा

रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं, जो शख़्स बीमारी में मुंदर्जाज़ेल कलिमात पढ़े फिर वह मर जाए तो जहन्नम की आग उसे चखेगी भी नहीं—

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ (ترمذی شریف حدیث نمبر ۳۴۳۰)

तर्के ख़्वाहिश आदमी को अमीर बना देती है और ख़्वाहिश की पैरवी अमीर को असीर बना देती है

ख़्वाहिश से मुंह फेर लेना सरदारी की बातें हैं— ख़्वाहिश का तर्क करना पैग़म्बर की ताक़त है—जब तेरी तबीअत का घोड़ा तेरा फ़रमांबरदार हो जाए तो इख़्लास का सिक्का तेरे नाम हो जाएगा।

ख़्वाहिश की दो (2) क़िस्में हैं एक लज़्ज़त व शहवत की ख़्वाहिश। दूसरे मर्तबा व ओहदा और रियासत की ख़्वाहिश। जिसको लज़्ज़त व शहवत की ख़्वाहिश है वह मैख़ाने में मुक़ीम होता है और दूसरे लोग उसके फ़ित्ना व शर से महफ़ूज़ रहते हैं, मगर जिसको रियासत व मंसब की ख़्वाहिश होती है वह इबादतगाहों, ख़ानक़ाहों और दायरों में रहता है और मख़्लूक़ के लिए फ़ित्ना होता है। ख़ुद भी गुमराह होता है और मख़्लूक़ को भी गुमराह करता है।

जिसके तमाम अफ़आल ख़्वाहिश के मुताबिक़ हों और नफ़्स की रज़ामंदी ही उसका मक़सूद हो, वह अगर आसमान पर भी पहुंच जाए तो वह ख़ुदा से दूर ही रहेगा। (जब तेरी गुदड़ी में सैकड़ों बुत छुपे हुए हैं तो ख़ुद को लोगों के सामने सूफ़ी क्यों ज़ाहिर करता है।)

और जो कोई ख़्वाहिश से दूर होगा और नफ़्स की मुताबिअत से किनाराकशी इख़्तियार करेगा, वह अगर बुतख़ाने में भी होगा तो ख़ुदा के साथ होगा। (जिसने उस कुत्ते को भारी ज़ंजीर में जकड़ दिया, उसकी ख़ाक दूसरों के ख़ून से बेहतर है।)

ख़्वाजा इबराहीम ख़ास रह० कहते हैं। मैंने एक दिन सुना कि रोम का एक राहिब साठ (60) वर्ष से रहबानियत के तरीक़े पर क़ायम है। मुझको ताज्जुब हुआ कि रहबानियत की शर्त तो चालीस (40) साल से ज़्यादा नहीं है। वह किस मक़्सद को लेकर अब तक दैर (गिरजा) में ठहरा हुआ है। मैंने उससे मिलने का इरादा किया। जब उसके पास पहुंचा तो उसने खिड़की खोली और कहा, "ऐ इबराहीम! तुम जिस काम के

लिए आए हो मैं जानता हूं। मैं यहां रहबानी के लिए नहीं बैठा हूं बल्कि मेरे पास शूरीदा (बुरी) ख़्वाहिशात रखने वाला एक कुत्ता है, उसको यहां बन्द करके उसकी निगहबानी कर रहा हूं। ताकि उसकी शरारत मख़्लूक़ तक न पहुंचे, वरना मैं वह नहीं जैसा तुमने मुझे समझा है'' (यह नफ़्स काफ़िर सख़्त नाफ़रमान है। उसका मार डालना कोई आसान काम नहीं है)।

ख़्वाजा इबराहीम कहते हैं कि उसकी यह बातें सुनकर मैंने कहा : ''ख़ुदावंद! तू ऐसा क़ादिरे मुतलक़ है कि ऐन गुमराही में बन्दे को सीधा रास्ता दिखाता है और यह दर्जा इनायत फ़रमाता है।''

उसने मुझसे कहा : ''ऐ इबराहीम! तू कब तक आदमियों को ढूंढ़ा करेगा। जा अपने आपको तलाश कर। और जब पा जाए तो ख़ुद अपना निगहबान बन जा।''

यही हवाए (ख़्वाहिशे) नफ़्स रोज़ाना उलूहियत के तीन सौ साठ (360) लिबास पहनकर सामने आती है और बन्दों को गुमराही की तरफ़ बुलाती है।

أَفَرَئَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهُ هَوَاهُ. (سورہ جاثیہ آیت ۲۳)

"क्या तुमने उन लोगों को देखा जो अपनी ख़्वाहिशात को अपना माबूद बना लेते हैं?"

यही राज़ है कि अज़ीज़ों के दिल उसमें ख़ून होकर रह गए हैं। हज़ारों दिल इस ग़म से कुश्ता हो गए मगर यह काफ़िर ख़ूंख़ार कुत्ता एक साअत भी न मरा।

तर्के ख़्वाहिश बन्दे को अमीर बना देती है और ख़्वाहिश की पैरवी अमीर को असीर बना देती है जिस तरह ज़ुलेख़ा ने ख़्वाहिश की पैरवी की, अमीर थी असीर हो गई। और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ख़्वाहिश को तर्क किया, असीर थे अमीर हो गए।

(मक्तूबात सदी, पेज : 497)

एक औरत ने अपना ख़्वाब हुज़ूर सल्ल० के सामने बयान किया

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० को ख़्वाब पसन्द था। बसा औक़ात आप पूछ लिया करते थे कि किसी ने ख़्वाब देखा है? अगर कोई ज़िक्र करता और फिर हुज़ूर अकरम सल्ल० उस ख़्वाब से ख़ुश होते तो उसे बहुत अच्छा लगता।

एक मर्तबा एक औरत आपके पास आई और कहा या रसूलुल्लाह! मैंने आज एक ख़्वाब देखा है कि गोया मेरे पास कोई आया और मुझे मदीना से ले चला और जन्नत में पहुंचा दिया, फिर मैंने एक धमाका सुना जिससे जन्नत में हलचल मच गई। मैंने जो नज़र उठाकर देखा तो फ़लां बिन फ़लां को देखा। बारह शख़्सों के नाम लिए– उन्हीं बारह शख़्सों का एक लश्कर बनाकर आंहज़रत सल्ल० ने कई दिन हुए एक मुहिम पर रवाना किया हुआ था– फ़रमाती हैं उन्हें लाया गया। यह अतलस (रेशम) के कपड़े पहने हुए थे उनकी रगें जोश मार रही थीं। हुक्म हुआ कि इन्हें नहर "बीदख़" में ले जाओ– या नहर बीज़ख़ कहा– जब उन लोगों ने उस नहर में ग़ौता लगाया तो उनके चेहरे चौदहवीं रात के चांद की तरह चमकने लग गए। फिर एक सोने की सीनी (थाली) में गदरी (नीम पुख़्ता) खजूरें आईं जो उन्होंने अपनी हस्बे मंशा खाईं, और साथ ही हर तरह के मेवे जो चौतरफ़ चुने हुए थे, जिस मेवे को उनका जी चाहता था लेते थे और खाते थे। मैंने भी उनके साथ शिरकत की और वह मेवे खाए—मुद्दत के बाद एक क़ासिद आया और कहा फ़लां-फ़लां अश्ख़ास जिन्हें आपने लश्कर में भेजा था शहीद हो गए। ठीक बारह शख़्सों के नाम लिए और यह वही नाम थे जिन्हें उस बीबी साहिबा ने अपने ख़्वाब में देखा था। हुज़ूर अकरम सल्ल० ने उन नेकबख़्त सहाबिया को फिर बुलवाया और फ़रमाया अब अपना ख़्वाब दोबारा बयान करो। उसने फिर बयान किया और उन्हीं लोगों के नाम लिए जिनके नाम क़ासिद ने लिए थे। (तफ़सीर इब्ने कसीर उर्दू, 5 : 251)

खाने में शैतानी तसर्रुफ़ात के वाक़िआत हक़ीक़त पर मब्नी हैं

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि तुम्हारे हर काम के वक़्त यहां तक कि खाने के वक़्त भी शैतान तुममें से हर एक के साथ रहता है। लिहाज़ा जब खाने खाते वक़्त किसी के हाथ से लुक़मा गिर जाए तो उसे चाहिए कि उसको साफ़ करके खा ले और शैतान के लिए छोड़ न दे। फिर जब खाने से फ़ारिग़ हो तो अपनी उंगलियों को भी चाट ले क्योंकि वह नहीं जानता कि खाने के किस जुज़ में ख़ास बरकत है। (सही मुस्लिम)

हदीस के आख़िरी हिस्से में तो खाने के बाद उंगलियों को चाटकर साफ़ कर लेने की हिदायत फ़रमाई गई है जिसके बारे में अभी अर्ज़ किया जा चुका है। और इब्तिदाई हिस्से में फ़रमाया गया है कि अगर खाते वक़्त किसी के हाथ से लुक़मा गिर जाए तो उसको मुस्तग़ना और मुतकब्बिर लोगों की तरह न छोड़ दे बल्कि ज़रूरतमंद और क़द्रदान बन्दे की तरह उसको उठा ले, और अगर नीचे गिर जाने की वजह से उसपर कुछ लग गया हो तो साफ़ करके उस लुक़मे को खा ले। उसमें मज़ीद यह भी फ़रमाया गया है कि खाने के वक़्त भी शैतान साथ होता है, अगर गिरा हुआ लुक़मा छोड़ दिया जाएगा तो वह शैतान के हिस्से में आएगा।

जैसा कि अर्ज़ किया जा चुका है कि फ़रिश्ते और शयातीन अल्लाह की वे मख़्लूक़ हैं जो यक़ीनन अक्सर औक़ात में हमारे साथ रहते हैं लेकिन हम उनको नहीं देख सकते। रसूलुल्लाह सल्ल० ने उनके बारे में जो कुछ बतलाया है अल्लाह तआला के बख़्शे हुए इल्म से बतलाया है और वह बिल्कुल हक़ है, और आप को कभी कभी उनका इस तरह मुशाहिदा भी होता था जिस तरह हम इस दुनिया की माद्दी चीज़ों को देखते हैं, जैसा कि बहुत-सी अहादीस से मालूम होता है। इसलिए ऐसी हदीसों को जिनमें मसलन खाने के वक़्त शयातीन के साथ होने, और

खाने पर अल्लाह का नाम न लिया जाए तो उसमें शयातीन के शरीक हो जाने, या गिरे हुए लुक़मे का शैतान का हिस्सा हो जाने का ज़िक्र है तो उन हदीसों को मजाज़ पर महमूल करने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं। हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० ने इस हदीस की शरह करते हुए हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा में यह वाक़िआ बयान फ़रमाया है कि एक दिन हमारे दोस्त (शागिर्द या मुरीद) हमारे यहां आए, उनके लिए खाना लाया गया, वह खा रहे थे कि उनके हाथ से एक टुकड़ा गिर गया और लुढ़ककर ज़मीन में चला गया। उन्होंने उसको उठा लेने की कोशिश की और उसका पीछा किया मगर वह उनसे और दूर होता चला गया यहां तक कि जो लोग वहां मौजूद थे (और इस तमाशे को देख रहे थे) उन्हें इस पर ताज्जुब हुआ, और वह साहब जो खाना खा रहे थे उन्होंने जिद्दोजुहद करके आख़िरकार उसको पकड़ लिया और अपना निवाला बना लिया। चन्द रोज़ के बाद किसी आदमी पर एक जिन्नी शैतान मुसल्लत हो गया और उस आदमी की ज़बान से बातें कीं और हमारे उस मेहमान दोस्त का नाम लेकर यह भी कहा कि फ़लां आदमी खाना खा रहा था मैं उसके पास पहुंचा मुझे उसका खाना बहुत अच्छा मालूम हुआ मगर उसने मुझे नहीं खिलाया तो मैंने उसके हाथ से अचक लिया (और गिरा दिया) लेकिन उसने मुझसे फिर छीन लिया।

इसी सिलसिले में दूसरा वाक़िआ अपने घर ही का शाह साहब ने यह बयान फ़रमाया है कि एक मर्तबा हमारे घर के कुछ लोग गाजरें खा रहे थे। एक गाजर उनमें से गिर गई। एक आदमी उस पर झपटा और उसने जल्दी से उठाकर उसको खा लिया, थोड़ी ही देर बाद उसके पेट और सीने में सख़्त दर्द उठा फिर उस पर शैतान यानी जिन्न का असर हो गया तो उसने उस आदमी की ज़बान में बताया कि उस आदमी ने मेरी गाजर उठाकर खा ली थी।

यह वाक़िआ बयान फ़रमाने के बाद शाह साहब रह० ने लिखा है कि इस तरह के वाक़िआत हमने बकसरत सुने हैं, और उनसे हमें मालूम हो गया है कि यह अहादीस (जिनमें खाने, पीने वग़ैरह के सिलसिले में

शयातीन की शिरकत और उनके अफ़आल व तसर्रुफ़ात का ज़िक्र आया है) मजाज़ के क़बील से नहीं हैं, वही हक़ीक़त है। वल्लाहु आलम

(मआरिफ़ुल हदीस 6 : 269)

सूरा बक़रा की आख़िरी दो आयतों की अजीब व ग़रीब फ़ज़ीलत

1. सही बुख़ारी में है कि जो शख़्स इन दोनों आयतों को रात को पढ़ ले उसे यह दोनों काफ़ी हैं।
2. मुस्नद अहमद में है कि मैं सूरा बक़रा के ख़ात्मे की आयतें अर्श तले के ख़ज़ाने से दिया गया हूं मुझसे पहले किसी नबी को यह नहीं दिया गया।
3. सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि जब हुज़ूर अकरम सल्ल० को मेराज कराई गई और आप सिदरतुल मुंतहा तक पहुंचे, जो सातवें आसमान में है— जो चीज़ आसमान की तरफ़ चढ़ती है वह यहीं तक पहुंचती है फिर यहां से ले ली जाती है, और जो चीज़ ऊपर से उतरती है वह भी यहीं तक पहुंचती है, फिर यहां से ले ली जाती है— उसे सोने की टिड्डियां ढके हुए थीं, वहां हुज़ूर अकरम सल्ल० को तीन चीज़ें दी गईं : (1) पांचों वक़्त की नमाज़ें, (2) सूरा बक़रा की ख़ात्मे की आयतें, (3) और तौहीद वालों के तमाम गुनाहों की बख़्शिश।
4. मुस्नद अहमद में है कि हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रसूले अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : सूरा बक़रा की इन दोनों आख़िरी आयतों को पढ़ते रहा करो, मैं इन्हें अर्श के नीचे के ख़ज़ानों से दिया गया हूं।
5. इब्ने मर्दूया में है कि हमें लोगों पर तीन फ़ज़ीलतें दी गई हैं, मैं सूरा

बक़रा की यह आख़िरी आयतें अर्श तले के ख़ज़ानों से दिया गया हूं जो न मुझसे पहले किसी को दी गईं न मेरे बाद किसी को दी जाएंगी।

6. इब्ने मर्दूया में है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : मैं नहीं जानता कि इस्लाम के जानने वालों में से कोई शख़्स आयतुल कुर्सी और सूरा बक़रा की आख़िर की आयतें पढ़े बग़ैर सो जाए। यह वह ख़ज़ाना है जो तुम्हारे नबी सल्ल० को अर्श तले के ख़ज़ाने से दिए गए हैं।

7. तिर्मिज़ी की हदीस में है कि अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन को पैदा करने से दो हज़ार साल पहले एक किताब लिखी। जिसमें से दो आयतें उतार कर सूरा बक़रा ख़त्म की। जिस घर में यह तीन रातों तक पढ़ी जाएं उस घर के क़रीब भी शैतान नहीं जा सकता। इमाम तिर्मिज़ी रह० उसे ग़रीब बतलाते हैं लेकिन हाकिम अपनी मुस्तदरक में इसे सहीह कहते हैं।

8. इब्ने मर्दूया में है कि जब हुज़ूर अकरम सल्ल० सूरा बक़रा का ख़ात्मा और आयतुल कुर्सी पढ़ते तो हंस देते और फ़रमाते यह दोनों रहमान के अर्श तले का ख़ज़ाना हैं, और जब आयत ﴿مَنْ يَّعْمَلْ سُوْءً يُّجْزَبِه﴾ "मँय यअमल सूअँय युज-ज़ बिही" और आयत ﴿وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَاسَعٰى وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ثُمَّ يُجْزٰهُ الْجَزَاءَ الْاَوْفٰى﴾ "व अल-लैसा लिल इंसानि इल्ला मा सआ व अन्ना सअयहू सौ-फ़ युरा सुम-म युजज़ाहुल जमाअल औफ़ा०" पढ़ते ज़बान से इन्ना लिल्लाह आख़िर तक निकल जाता और सुस्त हो जाते।

9. इब्ने मर्दूया में है कि मुझे सूरा फ़ातिहा और सूरा बक़रा की आख़िर की आयतें अर्श के नीचे से दी गईं हैं। और मुफ़स्सल की सूरतें और ज़्यादा हैं।

10. हदीस में है कि हम हुज़ूर अकरम सल्ल० के पास बैठे हुए थे, हज़रत

जिब्रील अमीन अलैहिस्सलाम भी थे कि अचानक एक दहशतनाक बहुत बड़े धमाके की आवाज़ आसमान से आई, हज़रत जिब्रील अमीन ने ऊपर को आंखें उठाईं और फ़रमाया कि आसमान का यह वह दरवाज़ा खुला है जो आज तक कभी नहीं खुला था, उससे एक फ़रिश्ता उतरा, उसने आंहज़रत सल्ल० से कहा : आप ख़ुश हो जाइए! आपको वह दो (2) नूर दिए जाते हैं जो आपसे पहले किसी नबी को नहीं दिए गए। सूरा फ़ातिहा और सूरा बक़रा की आख़िरी आयतें, उनमें से एक-एक हर्फ़ पर आपको नूर दिया जाएगा (मुस्लिम) पस ये दस हदीसें इन मुबारक आयतों की फ़ज़ीलत में हैं।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर 1 : 383)

मुसलमान को कपड़ा पहनाने वाला अल्लाह की हिफ़ाज़त में रहता है

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास एक साइल आया (और उसने कुछ मांगा)। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने उससे कहा : क्या तुम इस बात की गवाही देते हो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, और मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं? उसने कहा, जी हां! हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने पूछा : रमज़ान के रोज़े रखते हो? उसने कहा, जी हां! हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा : तुमने मांगा है और मांगने वाले का हक़ होता है, और यह हम पर हक़ है कि हम तुम्हारे ऊपर एहसान करें। फिर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने उसे कपड़ा दिया और फ़रमाया :

मैंने हुज़ूर अकरम सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो मुसलमान भी किसी मुसलमान को कपड़ा पहनाता है तो जब तक उसके जिस्म पर उस कपड़े का एक टुकड़ा रहेगा उस वक़्त तक वह पहनाने वाला अल्लाह की हिफ़ाज़त में रहेगा। (हयातुस्सहाबा 2 : 272)

क़ुरआन की एक दुआ जिसके हर जुमले के जवाब में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : "मैंने क़बूल किया, अच्छा मैंने दिया"

हज़रत अबू बरज़ा असलमी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ रहा हूं। आपकी आसानियां बख़्शने का ख़ूब मुशाहिदा कर चुका हूं। अगली उम्मतों में बड़ी सख़्तियां थीं। इस उम्मत पर वह अहकाम हल्के कर दिए गए हैं। इसी लिए आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला मेरी उम्मत से दिल के ख़्यालात और इरादों पर गिरफ़्त नहीं करता जब तक वह ज़बान से बोल न चुकें या अमल न कर चुकें। फ़रमाया कि मेरी उम्मत से ख़ता और निस्यान माफ़ कर दिया गया है। भूलचूक से अगर कुछ किया हो या बहालत जब्र किया हो तो उसको क़ाबिले माफ़ी समझा गया है। इसी लिए अल्लाह तआला ने इस दुआ के मांगने की हिदायत फ़रमाई है :

رَبَّنَا لَاتُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا، رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا، رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَالَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ، وَاعْفُ عَنَّا، وَاغْفِرْلَنَا، وَارْحَمْنَا، اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ

(سورۂ بقرہ کی آخری آیت)

(1) ऐ हमारे रब! हम पर दारोगीर न फ़रमाइए अगर हम भूल जाएं या चूक जाएं। (2) ऐ हमारे रब! और हम पर कोई सख़्त हुक्म न भेजिए जैसे हमसे पहले लोगों पर आपने भेजे थे। (3) ऐ हमारे रब! और हम पर कोई ऐसा बार न डालिए जिस (के उठाने) की हममें सकत न हो। (4) और दरगुज़र कीजिए हमसे। (5) और बख़्श दीजिए हमको। (6) और रहम कीजिए हम पर। (7) और आप हमारे कारसाज़ हैं, सो मदद कीजिए हमारी (और ग़ालिब कीजिए हमको) काफ़िर लोगों पर।

(सूरा बक़रा की आख़री आयत)

सही मुस्लिम से साबित है कि इस दुआ के ज़रिये ख़ुदा से मांगा जाता है तो हर सवाल पर अल्लाह तआला फ़रमाता है "अच्छा मैंने दिया, मैंने क़बूल किया"। (तफ़्सीर इब्ने कसीर 2 : 231)

मिरगी की बीमारी पर सब्र करने वाली ख़ातून को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बशारत

कहते हैं कि एक औरत नबी सल्ल० के पास आई उसको मिरगी की बीमारी थी। हुज़ूर अकरम सल्ल० के पास आकर अर्ज़ करने लगी! या रसूलुल्लाह! ख़ुदा तआला से मेरी शिफ़ा के लिए दुआ फ़रमाइए! आपने फ़रमाया : अगर यही तेरी मर्ज़ी है तो मैं ख़ुदा से दुआ करता हूं वह तुझे शिफ़ा दे देगा, और अगर तू चाहे तो सब्र कर और बरोज़े क़ियामत हिसाब तुझ पर से उठ जाए। वह कहने लगी : अच्छा मैं बीमारी पर सब्र कर लूंगी जबकि मुझे हिसाब से आज़ाद किया जा सकता है। वह यह कह रही थी कि मुझे मिरगी की बीमारी है। होश व हवास रुख़्सत हो जाते हैं जिस्म से कपड़ा खुल जाता है, बरहना हो जाती हूँ। बीमारी दूर न हो तो न हो, दुआ कीजिए कि कम से कम मेरा कपड़ा न खुलने पाए। आपने दुआ फ़रमाई और फिर कभी बहालते मिरगी कपड़ा उसके जिस्म से न हटा। (तफ़्सीर इब्ने कसीर 2 : 262)

क़ब्र से आवाज़ आई कि ऐ उमर! ख़ुदा ने मुझे दोनों जन्नतें बख़्शी हैं

कहते हैं कि एक नौजवान एक मस्जिद में बैठा इबादत करता रहता था। एक औरत उसकी दीवानी हो गई, उसको अपनी तरफ़ माइल करती रहती थी, यहां तक कि एक दिन वह उसके घर आ ही गया, अब फ़ौरन उसको यह आयत याद आ गई :

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طَآئِفٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَاهُمْ مُّبْصِرُوْنَ
(سورۂ اعراف آیت ۲۰۱)

"जो लोग ख़ुदातरस हैं जब उनको कोई ख़तरा शैतान की तरफ़ से आ जाता है तो वह (फ़ौरन ख़ुदा की) याद में लग जाते हैं, सो यकायक उनकी आंखें खुल जाती हैं।"

(सूरा आराफ़, आयत 201)

और साथ ही वह ग़श खाकर गिर पड़ा। जब होश आया तो फिर यही आयत पढ़ने लगा, पढ़ते पढ़ते जान दे दी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आए, उसके बाप से ताज़ियत की, वह रात को दफ़न कर दिया गया था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने बाज़ साथियों को लेकर उसकी क़ब्र पर गए, उसकी नमाज़ मग़फ़िरत पढ़ी, फिर क़ब्र से मुख़ातिब होकर यूं बोलने लगे : ऐ नौजवान!

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتَانِ (سورۂ رحمٰن آیت ۴۶)

"जो ख़ुदा तआला से डर गया उसके लिए ख़ुदा तआला की तरफ़ से दो जन्नतें हैं।" (सूरा रहमान, आयत 46)

इस आयते करीमा को सुनकर क़ब्र के अंदर से आवाज़ आई कि ऐ उमर! ख़ुदा ने मुझे दोनों जन्नतें बख़्शी हैं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर 2 : 262)

दुनिया क़ियामत के दिन ख़तरनाक बुढ़िया की शक्ल में लाई जाएगी

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया : दुनिया क़ियामत के दिन ऐसी बुढ़िया की शक्ल में लाई जाएगी जिसके सर के बाल खिचड़ी हो रहे होंगे, जिसकी आंखें नीलगों होंगी, जो दांत फाड़ रही होगी, जो निहायत बदशक्ल होगी, वह मख़्लूक़ात को झांक कर देखेगी। लोगों से दरयाफ़्त किया जाएगा : इसे जानते हो? लोग जवाब देंगे, पनाह बख़ुदा! जो हम इसे जानें, उन्हें जतलाया जाएगा कि यह वह दुनिया है जिसकी ख़ातिर तुम बाहम झगड़ते थे, रिश्तों को तोड़ते थे। एक-दूसरे पर चलते थे, और बाहम बुग़्ज़ व नफ़रत रखते थे और धोखे में रहते थे। फिर उसको जहन्नम में डाल दिया जाएगा। वह पुकारेगी, "मेरे रब! मेरे पैरू और मेरे चेले कहां हैं? अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल हुक्म देंगे कि "उसके मुरीदों और चेलों को उसके साथ मिला दो।" (रहमतुल्लाहिल वासिआ 1 : 821)

यह बता कि तुझसे मिलूं कहां?

तेरी अज़्मतों से हूँ बे ख़बर ☆ यह मेरी नज़र का क़ुसूर है
तेरी राह गुज़र में क़दम-क़दम ☆ कहीं अर्श है, कहीं तूर है
यह बजा है मालिके बन्दगी ☆ मेरी बन्दगी में क़ुसूर है
यह ख़ता है मेरी ख़ता मगर ☆ तेरा नाम भी तो ग़फ़ूर है
यह बता कि तुझसे मिलूं कहां ☆ मुझे तुझसे मिलना ज़रूर है
कहीं दिल की शर्त न डालना ☆ अभी दिल निगाहों से दूर है

बेहक़ीक़त नाम

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने जब तब्लीग़ का आग़ाज़ किया तो क़ौम के अफ़राद ने उनको बेवक़ूफ़ और झूठा कहा, क़ौम की समझ में नहीं आता था कि अल्लाह वाहिद की इबादत के क्या मानी? सिर्फ़ एक हस्ती इतने बड़े निज़ामे कायनात का इंतिज़ाम क्योंकर कर सकती है?

उन लोगों का ख़्याल था कि क़ायनात के लाखों शोबों के लिए एक ख़ुदा की कारसाज़ी मुमकिन नहीं इसलिए उन्होंने दुनिया के मुख़्तलिफ़ उमूर के लिए अलग-अलग माबूद क़रार दे लिए थे और उनके मुख़्तलिफ़ नाम भी गढ़ लिए थे। हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने उनकी इस तजवीज़ पर बारहा एतिराज़ किया कि ऐ क़ौम! क्या तुम मुझसे उन नामों पर झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं? जिनके लिए अल्लाह ने कोई सनद व दलील नाज़िल नहीं की है।

यानी यह सिर्फ़ नाम ही नाम हैं जिनकी तुम इबादत करते हो, इन नामों के पीछे कोई ताक़त व इख़्तिदार नहीं। तुम किसी को बारिश का रब और किसी को हवा का, किसी को पानी का, किसी को दौलत का,

किसी को सेहत व बीमारी का ख़ुदा कहते हो, हालांकि उनमें से कोई भी फ़िल हक़ीक़त किसी चीज़ का भी रब नहीं है। लेकिन क़ौम इस हक़ीक़त को तस्लीम करने पर क़तअन आमादा न हुई। उन्हें किसी तरह भी यक़ीन नहीं आता कि सिर्फ़ एक हस्ती इतने बड़े निज़ामे कायनात को क्योंकर क़ायम रख सकती है? कायनात के लिए तक़्सीम-कार ज़रूरी है, यह क़ौम अल्लाह तआला के लिए अहल-कार तजवीज़ करती थी, मगर अल्लाह तआला के वुजूद का इंकार नहीं करती थी। कायनात के लिए अल्लाह का वुजूद जानते व मानते हुए भी चन्द फ़र्ज़ी हस्तियों को हाजतरवाई के लिए पुकारा करती थी। उनके नाम पर नज़र व नियाज़ भी की जाती थी, उनसे दुख-दर्द में इस्तग़ासा व फ़रियाद भी करते थे और ख़ुशी व मसर्रत में उनके नाम का वज़ीफ़ा भी पढ़ते थे, और यह इतना क़दीम तरीक़ा था कि उसको छोड़ना उनके लिए तक़रीबन नामुमकिन हो गया था। इस तरीक़े पर उनकी पुश्तें गुज़र गई थीं।

मौजूदा ज़माने में भी बाज़ लोग किसी इंसान को "मुश्किलकुशा" कहते हैं हालांकि मुश्किलकुशाई की कोई ताक़त उसके पास नहीं होती है—किसी को "गंजबख़्श" के नाम से याद करते हैं, हालांकि उसके पास कोई गंज नहीं कि किसी को बख़्शे—किसी को "दाता" कहते हैं हालांकि वह किसी भी चीज़ का मालिक ही नहीं कि दाता बन सके— किसी को "ग़रीब-नवाज़" कहा जाता है हालांकि वह ग़रीब इस इक़्तिदार में कोई हिस्सा नहीं रखता कि किसी ग़रीब को नवाज़ सके— किसी को "ग़ौस" (फ़रियादरस) कहा जाता है हालांकि वह कोई ज़ोर नहीं रखता कि किसी की फ़रियाद को पहुंच सके— किसी को "बन्दा-नवाज़" समझा जाता है हालांकि वह ख़ुद बन्दा है, बन्दगी के बन्धनों में कसा हुआ— किसी को "दस्तगीर" कहा जाता है बावजूद यह कि वह ख़ुद दस्तनिगरी (हाजतमंद) था किसी की क्या दस्तगीरी करता? दर हक़ीक़त यह और ऐसे सब नाम महज़ नाम ही नाम हैं जिनके पीछे कोई इक़्तिदार, क़ुदरत और ताक़त नहीं। जो उनके लिए झगड़ा करता है वह दरअस्ल सिर्फ़ नामों के लिए झगड़ता है न कि किसी हक़ीक़त के लिए। सय्यदना हूद अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को यही हक़ीक़त समझानी चाही लेकिन इतनी खुली हक़ीक़त समझी न गई।

यह दुनिया का अजूबा नहीं तो और क्या है कि मजबूर और बेबस इंसानों ने अपने ही वहम व गुमान से ख़ुदाई का जितना हिस्सा जिसको चाहा दे डाला और उसको अपना मज़हब व ईमान भी बना लिया।

﴿فَسُبْحَانَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ﴾ (हिदायत के चिराग़ 1 : 122)

बुरी सोहबत का अंजाम

बुरी सोहबत ज़हर से ज़्यादा मुहलिक होती है जिसका अंजाम ज़िल्लत व रुसवाई के सिवा और कुछ नहीं होता। इसी तरह नेक सोहबत तिरयाक़ होती है जो सैकड़ों बुराइयों से हिफ़ाज़त का ज़रिया बनती है।

अक़्लमंद इंसान को जैसे नेकी की तलाश रहती है वैसे ही बदी से इज्तिनाब (परहेज़) रहता है। इंसान को जिस तरह नेकी की ज़रूरत है उससे कहीं ज़्यादा नेक सोहबत की ज़रूरत है, और जिस तरह बदी से बचना ज़रूरी है इससे कहीं ज़्यादा बुरों की सोहबत से बचना ज़रूरी है। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का बेटा जिसने आग़ोशे नुबुव्वत में परवरिश पाई, और बीवी जो ज़िंदगी भर रफ़ीक़े-हयात रही दोनों का काफ़िरों की सोहबत से कुफ़्र पर ख़ात्मा हुआ।

शैख़ सादी रह० ने इस मज़्मून को अपनी रुबाई में बड़ी ख़ूबसूरती के साथ अदा किया है 'उसका तर्जुमा हस्बे ज़ैल है :

1. हज़रत नूह का बेटा बुरों के साथ बैठा तो उससे नुबुव्वत का ख़ानदान छूट गया।
2. असहाबे कहफ़ के कुत्ते ने चन्द रोज़ नेकों की सोहबत इख़्तियार की तो आदमी बन गया।
3. नेकों की सोहबत तुझको नेक बना देती है, बुरों की सोहबत तुझे बुरा बना देती है।

नमाज़ जनाज़ा सीखो और पढ़ो

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुकर्रम व मुहतरम मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब मद्देज़िल्लहुल आली

अस्सलामु अलैकुल व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

बाद सलाम मसनून व तहिय्यात अर्ज़ है कि बनदे को एक बात पूछनी है कि जब किसी शख़्स का इंतिक़ाल होता है तो शरीअत में उसके औलिया में जो क़रीबतरीन होता है उसको नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने का हक़ है। मस्लन बेटा है या बाप है वग़ैरह, तो सवाल है कि इसकी क्या वजह है? मुत्तला फ़रमाकर ममनून व मशकूर फ़रमाएं।

जवाब : आपने जो सवाल किया है कि वली अक़रब को ज़्यादा हक़ है, इसकी क्या वजह है? तो मेरे ज़ेहन में इसकी वजह यह है कि चूंकि नमाज़ में मरहूम के लिए मग़फ़िरत की दुआ होती है तो वली अक़रब जिस दर्द व ग़म और दिल से दुआ करेगा, उतना कोई और नहीं कर सकता, और जब कोई दुआ दिल से की जाती है तो कुबूल होती है– उलमा ने और भी वजूहात लिखी होंगी लेकिन बन्दे के ज़ेहन में यही वजह है।

आजकल बहुत-से लोग नमाज़े जनाज़ा नहीं जानते, उनको नमाज़े जनाज़ा सीखनी चाहिए ताकि वक़्त आने पर मरहूम आपकी दुआए मग़फ़िरत से महरूम न रहे।

नमाज़ कब गुनाहों से रोकती है?

सवाल : बाद सलाम यह अर्ज़ है कि मैं नमाज़ पढ़ता हूँ और गुनाहों से बचाव नहीं होता। हालांकि क़ुरआन में है कि नमाज़ बेहयाइयों और बुराइयों से रोकती है?

जवाब : इसको एक मिसाल से समझिए कि जिस तरह दवाओं की

मुख़्तलिफ़ तासीरात हैं कहा जाता है कि फ़लाँ दवा फ़लाँ बीमारी को रोकती है और वाक़िअतन ऐसा होता है लेकिन कब? जब दो बातों का इल्तिज़ाम किया जाए :

1. दवा को पाबन्दी से उस तरीक़े और शराइत के साथ इस्तेमाल किया जाए जो हकीम या डॉक्टर बतलाए।
2. परहेज़ यानी ऐसी चीज़ों से इज्तिनाब किया जाए जो उस दवा के असरात को ज़ायल करने वाली हों।

इसी तरह नमाज़ के अंदर भी यक़ीनन अल्लाह ने ऐसी रूहानी तासीर रखी है कि यह इंसान को बेहयाई और बुराई से रोकती है, लेकिन उसी वक़्त जब नमाज़ को सुन्नते नबवी के मुताबिक़ उन आदाब व शराइत के साथ पढ़ा जाए जो उसकी सेहत व क़बूलियत के लिए ज़रूरी हैं।

जिस घर में सूरा बक़रा पढ़ी जाती है उस घर में शैतान क़दम नहीं रख सकता

सवाल : काफ़ी अर्सा से परेशान हूँ। घर में जिन्नात बहुत परेशान करते हैं। क़ुरआन व हदीस की रौशनी में इसका हल बताइए?

जवाब : इसका हल यह है कि :

1. नमाज़ की पाबन्दी, क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत, सुबह व शाम की मसनून दुआओं का एहतिमाम करें।
2. घर में दाख़िल होकर घर के चारों कोनों में आयतुल कुर्सी पढ़कर दम करें। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु घर में दाख़िल होते ही घर के चारों कोनों में आयतुल कुर्सी पढ़कर दम करते थे।
3. सूरा बक़रा घर में पढ़ें, इसकी ताईद में तेरह (13) हदीसें नक़ल करता हूँ। ग़ौर से हदीसों को पढ़िए और उन पर अमल कीजिए :

(1) हज़रत माक़िल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह

सल्ल० ने फ़रमाया : सूरा बक़रा क़ुरआन की कोहान है और उसकी बुलन्दी है। उसकी एक-एक आयत के साथ अस्सी (80) फ़रिश्ते नाज़िल हुए थे और बिलख़ुसूस आयतुल कुर्सी तो ख़ास अर्श तले से नाज़िल हुई और इस सूरा के साथ मिलाई गई। सूरा यासीन क़ुरआन का दिल है, जो शख़्स उसे अल्लाह तआला की रज़ाजोई और आख़िरत-तल्बी के लिए पढ़े उसे बख़्श दिया जाता है। इस सूरा को मरने वालों के सामने पढ़ा करो।

(2) मुस्नद अहमद, सही मुस्लिम, तिर्मिज़ी और नसई में लिखी हदीस है कि अपने घरों को क़ब्रें न बनाओ, जिस घर में सूरा बक़रा पढ़ी जाए वहां शैतान दाख़िल नहीं हो सकता।

(3) एक और हदीस में है कि जिस घर में सूरा बक़रा पढ़ी जाए वहां से शैतान भाग जाता है।

(4) इब्ने मर्दूया में है कि हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : मैं तुममें से किसी को ऐसा न पाऊं कि पैर पर पैर चढ़ाए पढ़ता चला जाए लेकिन सूरा बक़रा न पढ़े। सुनो! जिस घर में यह मुबारक सूरा पढ़ी जाती है वहां से शैतान भाग खड़ा होता है, सब घरों में बदतरीन और ज़लीलतरीन घर वह है जिसमें किताबुल्लाह की तिलावत न की जाए।

(5) मुस्नद दारमी में हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जिस घर में सूरा बक़रा पढ़ी जाए उस घर से शैतान गोज़ मारता हुआ भाग जाता है। हर चीज़ की ऊंचाई होती है और क़ुरआन की ऊंचाई सूरा बक़रा है। हर चीज़ का लुबाब होता है और क़ुरआन का लुबाब मुफ़स्सल की सूरतें हैं।

(6) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़रमान है कि जो शख़्स सूरा बक़रा की चार पहली आयतें और आयतुल कुर्सी और दो आयतें उसके बाद की और तीन आयतें सबसे आख़िर की। कुल मिलाकर दस आयतें रात के वक़्त पढ़ले तो उस घर में शैतान

उस रात नहीं जा सकता और उसके घर वालों को उस दिन शैतान या कोई और बुरी चीज़ सता नहीं सकती। यह आयतें मजनून पर पढ़ी जाएं तो उसका दीवानापन भी दूर हो जाता है। हुज़ूर अकरम सल्ल० फ़रमाते हैं : जिस तरह हर चीज़ की बुलन्दी होती है, क़ुरआन की बुलन्दी सूरा बक़रा है। जो शख़्स रात के वक़्त इसे अपने घर में पढ़े तो तीन रातों तक शैतान उस घर में नहीं जा सकता और दिन को अगर घर में पढ़ ले तो तीन दिन तक शैतान उस घर में क़दम नहीं रख सकता।

(7) तबरानी, इब्ने हिब्बान, इब्ने मर्दूया, तिर्मिज़ी, नसई और इब्ने माजा में है कि हुज़ूर अकरम सल्ल० ने एक छोटा-सा लश्कर एक जगह भेजा और उसकी सरदारी आप सल्ल० ने उन्हें दी जिन्होंने फ़रमाया था कि मुझे सूरा बक़रा याद है। उस वक़्त एक शरीफ़ शख़्स ने कहा : मैं भी इसे याद कर लेता, लेकिन मुझे डर लगा कि ऐसा न हो मैं इस पर अमल न कर सकूं। हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : क़ुरआन सीखो, क़ुरआन को पढ़ो। जो शख़्स उसे सीखता है पढ़ता है फिर उस पर अमल भी करता है तो उसकी मिसाल ऐसी है जैसे मुश्क भरा हुआ बर्तन जिसकी ख़ुश्बू हर तरफ़ महक रही है— उसे सीखे हुए सो जाने वाले की मिसाल उस बर्तन की-सी है जिसमें मुश्क तो भरी हुई है लेकिन ऊपर से मुंह बन्द कर दिया गया है।

(8) सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक मर्तबा रात को सूरा बक़रा की तिलावत शुरू की। उनका घोड़ा जो उनके पास ही बंधा हुआ था उसने उछलना, कूदना और बिदकना शुरू किया। आपने क़िरात छोड़ दी, घोड़ा भी सीधा हो गया। आपने फिर पढ़ना शुरू किया, घोड़े ने फिर बिदकना शुरू किया। आपने फिर पढ़ना मौक़ूफ़ किया, घोड़ा भी ठीक-ठाक हो गया। तीसरी मर्तबा भी यही हुआ। चूंकि उनके साहबज़ादे यह्या घोड़े के पास ही लेटे हुए थे इसलिए डर मालूम हुआ कि कहीं बच्चे को चोट न आ जाए, क़ुरआन का पढ़ना बन्द करके उसे उठा

लिया। आसमान की तरफ़ देखा कि जानवर के चमकने की क्या वजह है? सुबह हुज़ूर अकरम सल्ल० की ख़िदमत में आकर वाक़िआ बयान करने लगे। आप सुनते जाते और फ़रमाते जाते : उसैद! पढ़ते चले जाओ। हज़रत उसैद ने कहा : हुज़ूर! तीसरी मर्तबा के बाद तो यह्या की वजह से पढ़ना मैंने बिल्कुल बन्द कर दिया। अब जो निगाह उठी तो देखता हूं कि एक नूरानी चीज़ सायादार अब्र (बादल) की तरह है और उसमें चिराग़ों की तरह की रौशनी है। बस मेरे देखते ही देखते वह ऊपर को उठ गई। आप सल्ल० ने फ़रमाया : जानते हो यह क्या चीज़ थी? यह फ़रिश्ते थे जो तुम्हारी आवाज़ को सुनकर क़रीब आ गए थे, अगर तुम पढ़ना बन्द न करते तो वह सुबह तक यूं ही रहते और हर शख़्स उन्हें देख लेता, किसी से न छुपते।

(9) इसके क़रीब-क़रीब वाक़िआ हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास रज़ियल्लाहु अन्हु का है कि एक मर्तबा लोगों ने हुज़ूर अकरम सल्ल० से कहा कि गुज़िश्ता रात हमने देखा कि सारी रात हज़रत साबित का घर नूर का बक़आ (मकान) बना रहा और चमकदार रौशन चिराग़ों से जगमगाता रहा। हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : शायद उन्होंने रात को सूरा बक़रा पढ़ी होगी, जब उनसे पूछा गया तो उन्होंने कहा : सच है रात को मैं सूरा बक़रा की तिलावत में मशग़ूल था।

10. नबी करीम सल्ल० फ़रमाते हैं कि सूरा बक़रा सीखो, उसका लेना बरकत है और उसका छोड़ना हसरत है, जादूगर इसकी ताक़त नहीं रखते—फिर कुछ देर चुप रहने क बाद फ़रमाया : सूरा बक़रा और सूरा आले इमरान सीखो यह दोनों नूरानी सूरतें हैं, अपने पढ़ने वाले पर सायबां या बादल या परिंदों के झुंड की तरह क़ियामत के दिन साया करेंगी।

11. मुस्नद अहमद की एक और हदीस में है कि क़ुरआन और क़ुरआन पढ़ने वालों को क़ियामत के दिन बुलवाया जाएगा, आगे-आगे सूरा बक़रा और सूरा आले इमरान होंगी बादल की तरह या सायबां की

तरह, या पर खोले परिंदों की झुरमुट की तरह। ये दोनों परवरदिगार से डटकर सिफ़ारिश करेंगी।

12. एक शख़्स ने अपनी नमाज़ में सूरा बक़रा और सूरा आले इमरान पढ़ी। उसके फ़ारिग होने के बाद हज़रत कअ़ब ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है। इनमें ख़ुदा का वह नाम है कि उस नाम के साथ जब कभी उसे पुकारा जाए तो वह क़बूल फ़रमाता है। अब उस शख़्स ने हज़रत कअ़ब से अर्ज़ किया कि मुझे बतलाइए कि वह नाम कौन-सा है? हज़रत कअ़ब रज़ि० ने उसे इंकार किया और फ़रमाया : अगर मैं बता दूं तो ख़ौफ़ है कि कहीं तू उस नाम की बरकत से ऐसी दुआ न मांग ले जो मेरी और तेरी हलाकत का सबब बन जाए।

13. हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : तुम्हारे भाई को ख़्वाब में दिखलाया गया कि गोया लोग एक बुलन्द व बाला पहाड़ पर चढ़ रहे हैं। पहाड़ की चोटी पर दो सरसब्ज़ दरख़्त हैं। और उनमें से आवाज़ें आ रही हैं कि क्या तुममें से कोई सूरा बक़रा का पढ़ने वाला है? जब कोई कहता है कि हां तो वह दोनों दरख़्त अपने फलों समेत उसकी तरफ़ झुक आते हैं, और यह उसकी शाख़ों पर बैठ जाता है, और वह उसे ऊपर ले लेते हैं।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर 1 : 59)

एक दुआ जिसका सवाब अल्लाह ने छुपा रखा है

इब्ने माजा में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : एक शख़्स ने एक मर्तबा कहा : (يَا رَبِّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا يَنْبَغِي لِجَلَالِ وَجْهِكَ وَعَظِيمِ سُلْطَانِكَ) "या रब्बि ल-कल हम्दु कमा यम्बग़ी लि जलालि वजहि-क व अज़ीमि सुलतानि-क" फ़रिश्ते घबरा गए कि हम इसका कितना अज्र लिखें। आख़िर अल्लाह तआला से उन्होंने अर्ज़ किया कि तेरे एक बन्दे ने एक ऐसा कलिमा कहा है कि हम नहीं जानते कि उसे किस तरह लिखें? परवरदिगार ने बावजूद जानने के

उनसे पूछा कि उसने क्या कहा है? उन्होंने बयान किया कि उसने यह कलिमा कहा है। फ़रमाया : तुम यूं ही इसे लिख लो, मैं आप उसे अपनी मुलाक़ात के वक़्त इसका अज्र दे दूंगा। (तफ़्सीर इब्ने कसीर 1 : 46)

मुजामअत (हमबिस्तरी) की रुकावट दूर करने के लिए मुजर्रब अमल

सवाल : एक ख़ुफ़िया मर्ज़ में मुब्तला हूँ। किसी के सामने ज़ाहिर नहीं कर सकता और ज़ाहिर करते हुए शर्म भी महसूस होती है। और ज़िंदगी बहुत परेशानी में गुज़र रही है, आप बराए करम मेरा नाम न बताएं और इसका हल बताएं। वह ख़ुफ़िया मर्ज़ यह है कि बीवी से रोक दिया गया हूं। डॉक्टरी बहुत इलाज करवाया, मर्ज़ नहीं है, मुझे ऐसा महसूस होता है कि मुझ पर जादू का असर है।

जवाब : बन्दा आमिल नहीं है। मगर हदीस शरीफ़ में या अक़वाले सलफ़ में कोई बात बन्दे को मिल जाती है तो। बन्दा बता देता है। तफ़्सीर इब्ने कसीर में है :

हज़रत वहब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : कि बेरी के सात पत्ते लेकर सिलबट्टे पर कूट लिए जाएं और पानी मिला लिया जाए, फिर आयतुल कुर्सी पढ़कर उस पर दम कर दिया जाए, और जिस पर जादू किया गया है उसे तीन घूंट पिला दिया जाए, और बाक़ी पानी से गुस्ल करा दिया जाए, इंशाअल्लाह जादू का असर जाता रहेगा। यह अमल ख़ुसूसियत से उस शख़्स के लिए बहुत ही अच्छा है जो अपनी बीवी से रोक दिया गया हो।

जादू दूर करने और उसके असर को ज़ाइल करने के लिए सबसे आला चीज़ "क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास" और "क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़" सूरतें हैं। हदीस में है कि इन जैसा कोई तावीज़ नहीं—इसी तरह आयतुल कुर्सी भी शैतान को दफ़ा करने में आला दर्जे की चीज़ है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर 1 : 177)

हज़रत इब्राहीम को ख़लीलुल्लाह का लक़ब कैसे मिला?

इब्ने अबी हातिम में है हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आदत थी कि मेहमानों के साथ खाएं। एक दिन आप मेहमान की जुस्तुजू में निकले। कोई न मिला, वापस आए, घर में दाख़िल हुए तो देखा कि एक शख़्स खड़ा हुआ है। पूछा, ऐ अल्लाह के बन्दे! तुझे मेरे घर में आने की इजाज़त किसने दी? उसने कहा इस मकान के हक़ीक़ी मालिक ने। पूछा, तुम कौन हो? कहा, मैं मलकुल मौत हूं! मुझे अल्लाह तआला ने अपने एक बन्दे के पास इसलिए भेजा है कि मैं उसे यह बशारत सुना दूं कि ख़ुदा ने उसे अपना ख़लील कर लिया है। यह सुनकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा : फिर तो मुझे ज़रूर बताइए कि वह बुज़ुर्ग कौन है? ख़ुदा की क़सम चाहे वह ज़मीन के किसी दूर के गोशे में हों, मैं ज़रूर उनसे जाकर मुलाक़ात करूंगा। फिर अपनी बाक़ी ज़िंदगी उनके क़दमों में ही गुज़ार दूंगा। यह सुनकर हज़रत मलकुल मौत ने कहा : वह शख़्स ख़ुद आप हैं। आपने फिर दरयाफ़्त फ़रमाया क्या सचमुच मैं ही हूं? फ़रिश्ते ने कहा : हां आप ही हैं। आपने फिर दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या आप मुझे यह भी बताएंगे कि किस बिना पर और किन उमूर पर अल्लाह तआला ने मुझे अपना ख़लील बनाया? फ़रिश्ते ने फ़रमाया : इसलिए कि तुम हर एक को देते रहते हो। और किसी से ख़ुद कुछ तलब नहीं करते।

और रिवायत में है कि जब से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़लीले ख़ुदा के मुमताज़ और मुबारक लक़ब से ख़ुदा ने मुलक़्क़ब किया तब से उनके दिल में इस क़द्र ख़ौफ़े ख़ुदा और हैबते रब समा गई कि उनके दिल का उछलना दूर से इस तरह सुना जाता था जिस तरह फ़िज़ा में परिंदे की परवाज़ की आवाज़। (तफ़्सीर इब्ने कसीर 1 : 644)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक के अहवाल व अक़वाल

1. मेहमान के साथ जो खाना खाया जाता है अल्लाह तआला उसका हिसाब नहीं लेता

मेहमान नवाज़ी इस्लामी ज़िंदगी की एक इम्तियाज़ी ख़ुसूसियत है। उसमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक मारूफ़ थे, उनका दस्तरख़्वान उनके अहबाब, अइज़्ज़ा, पड़ोसी और अजनबी सबके लिए ख़्वान यग़मा (माले ग़नीमत) था, वह कभी बग़ैर मेहमान के खाना नहीं खाते थे। इस बारे में किसी ने उनसे पूछा तो फ़रमाया कि मेहमान के साथ जो खाना खाया जाता है अल्लाह तआला उसका हिसाब नहीं लेता, साल के बेशतर हिस्से में वह रोज़ा रखते थे। जिस दिन वह रोज़ा से होते उस दिन दूसरों को उमदा खाना पकवाकर खिलाते। अबू इसहाक़ का बयान है कि किसी सफ़रे जिहाद या हज में जा रहे थे तो उनके साथ दो ऊंटनियों पर भुनी हुई मुर्ग़ियां लदी हुई थीं। यह सब सामान उन मुसाफ़िरों का था जो उनके हम सफ़र थे। (सियरे सहाबा 8 : 319)

2. सिर्फ़ एक क़लम लौटाने के लिए इब्ने मुबारक ने सैकड़ों मील का सफ़र किया

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने एक बार शाम में किसी शख़्स से क़लम मुस्तआर लिया। इत्तिफ़ाक़ से क़लम उस शख़्स को वापस करना भूल गए। जब "मरू" पहुंचे तो क़लम पर नज़र पड़ी, "मरू" से शाम फिर वापस गए और क़लम साहिबे क़लम को वापस किया। तंहा यह वाक़िआ उनकी अख़्लाक़ी ज़िंदगी का बेहतरीन मज़हर है, और दुनिया की अख़्लाक़ी तारीख़ का ग़ैर-मामूली वाक़िआ है। "मरू" शाम से सैकड़ों मील दूर है और फिर यह वाक़िआ उस ज़माने का है जब रसल-रसाइल के ज़राये सिर्फ़ घोड़े, ऊंट और ख़च्चर होते थे। (सीयरे सहाबा 8 : 318)

३. मुसलमान के दिल को अचानक ख़ुश करो अल्लाह तआला आपके गुनाह बख़्श देगा

एक शख़्स सात सौ (700) दिरहम का मक़रूज़ था। कुछ लोगों ने अब्दुल्लाह बिन मुबारक से कहा कि आप उसका क़र्ज़ अदा कर दें, उन्होंने मुंशी को लिखा कि फ़लां शख़्स को सात हज़ार दिरहम दे दिए जाएं। यह तहरीर लेकर मक़रूज़ उनके मुंशी के पास पहुंचा, उसने ख़त पढ़कर हामिल रुक़आ से पूछा कि तुमको कितनी रक़म चाहिए, उसने कहा : मैं सात सौ का मक़रूज़ हूं। और इसी रक़म के लिए लोगों ने इब्ने मुबारक से मेरी सिफ़ारिश की है, मुंशी को ख़्याल हआ कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक से सबक़त क़लम हो गई है, और वह सात सौ के बजाय सात हज़ार लिख गए हैं। मुंशी ने हामिल रुक़आ से कहा कि ख़त में कुछ ग़लती मालूम होती है, तुम बैठो! मैं इब्ने मुबारक से दोबारा दरयाफ़्त करके तुमको रक़म देता हूं। उसने अब्दुल्लाह बिन मुबारक को लिखा कि ख़त लाने वाला तो सिर्फ़ सात सौ दिरहम का तालिब है और आपने सात हज़ार देने की हिदायत की है, सबक़त क़लम तो नहीं हो गई है? उन्होंने जवाब में लिखा कि जिस वक़्त तुमको यह ख़त मिले उसी वक़्त उस शख़्स को तुम चौदह (14) हज़ार दिरहम दे दो, मुंशी ने अज़राहे हमदर्दी उनको दोबारा लिखा कि अगर इसी तरह आप अपनी दौलत लुटाते रहे तो जल्द ही सारा सरमाया ख़त्म हो जाएगा। मुंशी की यह हमदर्दी और ख़ैरख़्वाही उनको नापसन्द हुई और उन्होंने ज़रा सख़्त लहजे में लिखा कि अगर तुम मेरे मातहत व मामूर हो तो मैं जो हुक्म देता हूं उस पर अमल करो। और अगर तुम मुझे अपना मामूर व महकूम समझते हो तो फिर तुम आकर मेरी जगह पर बैठो, उसके बाद जो तुम हुक्म दोगे मैं उस पर अमल करूंगा, मेरे सामने माद्दी दौलत व सरवत से ज़्यादा क़ीमती सरमाया आख़िरत का सवाब और नबी सल्ल० का वह इरशाद गिरामी है जिसमें आपने फ़रमाया है कि :

"जो शख़्स अपने किसी मुसलमान भाई को अचानक और ग़ैर-मुतवक़्क़े तौर पर ख़ुश कर देगा तो अल्लाह तआला उसे बख़्श देगा।"

उसने मुझसे सात सौ दिरहम का मुतालबा किया था, मैंने सोचा कि उसको सात हज़ार मिलेंगे तो यह ग़ैर-मुतवक़्क़े रक़म पाकर बहुत ज़्यादा ख़ुश होगा, और फ़रमाने नबवी के मुताबिक़ में सवाब का मुस्तहिक़ हूंगा, दोबारा रुक़आ में चौदह (14) हज़ार उन्होंने इसलिए कराया कि ग़ालिबन लेने वाले को सात हज़ार का इल्म हो चुका था। इसलिए अब ज़ायद ही रक़म उसके लिए ग़ैर मुतवक़्क़े हो सकती थी। (सीयरे सहाबा 8 : 322)

4. बाख़बर होकर बेख़बर होना, अब्दुल्लाह बिन मुबारक की छुपी हुई नेकी

मुहम्मद बिन ईसा का बयान है कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक तरतूस (शाम) अक्सर आया करते थे, रास्ते में "रिक्क़ा" पड़ता था (ख़ुलफ़ाए अब्बासिया अमूमन "रिक्क़ा" में गर्मी गुज़ारते थे। यह मक़ाम निहायत ही सरसब्ज़ और शादाब है)।

यहां जिस सराय में वह क़याम करते थे उसमें एक नौजवान भी रहा करता था, जब तक उनका क़याम रहता यह नौजवान उनसे हदीस सुना करता और उनकी ख़िदमत में लगा रहता था। एक बार यह पहुंचे तो उसको नहीं पाया। दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि वह क़र्ज़ के सिलसिले में क़ैद कर दिया गया है। उन्होंने क़र्ज़ की मिक़्दार और साहिबे क़र्ज़ के बारे में मालूम किया तो पता चला कि वह फ़लां शख़्स का दस (10) हज़ार का मक़रूज़ था। उसने दावा किया था और अदम अदायगी की सूरत में वह क़ैद कर दिया गया। अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने क़र्ज़-ख़्वाह को तंहाई में बुलाया और उससे कहा कि भाई अपने क़र्ज़ की रक़म मुझसे ले लो, उस नौजवान को रिहा कर दो। यह कहकर उससे यह क़सम भी ली कि वह उसका तज़्किरा किसी से न करेगा, उसने उसे मंज़ूर कर लिया— उधर आपने उसकी रिहाई का इंतिज़ाम किया और इसी रात रख़्ते सफ़र बांधकर वहां से रवाना हो गए, नौजवान रिहा होकर सराय में पहुंचा तो उसको आपकी आमद व रफ़्त की इत्तिलाअ मिली, उसको मुलाक़ात न होने का इतना रंज हुआ कि उसी वक़्त तरतूस की तरफ़

रवाना हो गया, कई मंज़िल के बाद आपसे मुलाक़ात हुई तो आपने उसका हाल दरयाफ़्त किया। उसने अपने क़ैद होने और रिहा होने का ज़िक्र किया। आपने पूछा : रिहाई कैसे हुई? बोला कि कोई अल्लाह का बन्दा सराय में आकर ठहरा था। उसी ने अपनी तरफ़ से क़र्ज़ अदा करके मुझे रिहा कर दिया, मगर मैं उसे जानता नहीं। फ़रमाया कि ख़ुदा का शुक्र अदा करो कि उस मुसीबत से तुम्हें नजात मिली। मुहम्मद बिन ईसा का बयान है कि उनकी वफ़ात के बाद क़र्ज़ ख़्वाह ने इस वाक़िये को लोगों से बयान किया। (सियारे सहाबा 8 : 323)

5. इब्ने मुबारक कई लोगों को अपने ख़र्चे से हज कराते थे

उनकी ज़िंदगी का एक ख़ास मामूल ज़ियारत हरमैन-शरीफ़ भी था। क़रीब-क़रीब हर साल इस सआदत को हासिल करने की कोशिश करते, सफ़रे हज के मौक़े पर उनका मामूल था कि सफ़र से पहले अपने तमाम रुफ़क़ाए सफ़र से कहते कि अपनी-अपनी रक़म सब लोग मेरे हवाले कर दें। जब वे लोग हवाले कर देते तो हर एक की रक़म को अलग अलग एक-एक थैली में हर एक का नाम लिखकर संदूक़ में बन्द कर देते, और पूरे सफ़र में जो कुछ ख़र्च करना होता वह अपनी जेब से करते, उनको अच्छे से अच्छा खाना खिलाते, उनकी दूसरी ज़रूरियात पूरी करते। जब फ़रीज़-ए-हज अदा करके मदीना मुनव्वरा पहुंचते तो साथियों से कहते कि अपने अहल व अयाल के लिए जो चीज़ें पसन्द हों ख़रीद लें। सफ़र हज ख़त्म करके जब घर वापस आते तो तमाम रुफ़क़ाए सफ़र की दावत करते, फिर वह संदूक़ खोलते जिसमें लोगों की रक़में रखी हुई थीं, और जिस थैली पर जिसका नाम होता उसके हवाले कर देते। रावी का बयान है कि ज़िंदगी भर उनका यही मामूल रहा।

(सियरे सहाबा 8 : 324)

6. इब्ने मुबारक ने एक साथी को दर्द भरा ख़त लिखा कि तुम ख़ुद मजनून हो गए जबकि तुम मजनूनों के मआलिज थे

इब्ने उलैयह उस वक़्त के मुमताज़ मुहद्दिस और इमाम थे। वह अब्दुल्लाह बिन मुबारक के ख़ास अहबाब में थे। तिजारत में भी वह उनके शरीक थे। उठना, बैठना भी साथ था। मगर उन्होंने बाज़ उमरा की मजालिस में जाना शुरू कर दिया था, अब्दुल्लाह बिन मुबारक को जब इसकी इत्तिलाअ हुई तो उन्होंने नाराज़गी का इज़्हार किया, और एक रोज़ मज्लिस में आए तो उनसे मुख़ातिब नहीं हुए। इब्ने उलैयह बहुत परेशान हुए, मज्लिस में तो कुछ न कह सके। घर पहुंचे तो बड़े इज़्तरार की हालत में अब्दुल्लाह बिन मुबारक को यह ख़त लिखा :

ऐ मेरे सरदार! मुद्दतों से आपके एहसानात में डूबा हुआ हूं। क़सम है ख़ुदा की! उन एहसानात को मैं अपने मुताल्लिक़ीन के हक़ में बरकत शुमार करता था। आपने मुझको न जाने क्यों अपने से जुदा कर दिया? और मुझको मेरे हमनशीनों में कम रुत्बा बना दिया। मैं आपके दौलतकदा पर हाज़िर हुआ, लेकिन आपने मेरी तरफ़ तवज्जोह तक न की। इसी अदम तवज्जे से मुझे आपकी नाराज़गी का इल्म हुआ और मुझे अब तक मालूम नहीं हो सका कि मेरी कौन-सी ग़लती आपके ग़ज़ब व ग़ुस्से का सबब बनी है।

ऐ मेरे मुहतरम! मेरी आंखों के नूर! मेरे उस्ताद! ख़ुदा की क़सम! आपने क्यों नहीं बतलाया कि वह क्या ख़ता हुई जिसकी बिना पर मैं आपकी उन तमाम नवाज़िशों और करम फ़रमाइयों से, जो मेरी ग़ायत तमन्ना थीं, महरूम हो गया।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने यह पुरअसर ख़त पढ़ा, मगर उनपर उसका कोई असर नहीं हुआ। चन्द अश्आर जवाबन उनके पास लिखकर भेज दिए : उन अश्आर का तर्जुमा यह है :

1. ऐ इल्म को एक ऐसा बाज़ बनाने वाले जो ग़रीबों का माल समेटकर खा जाता है।
2. तुमने दुनिया और उसकी लज़्ज़तों के लिए ऐसी तदबीर की है जो दीन को मिटाकर रख देगी।
3. तुम ख़ुद मजनून हो गए जबकि तुम मजनूनों का इलाज थे।
4. वह तमाम रिवायतें आपकी क्या हुईं जो इब्ने औन और इब्ने सीरीन से आप बयान करते हैं।
5. वे रिवायतें कहां गईं जिनमें सलातीन से रब्त व ज़ब्त रखने की वईद आई है— अगर तुम कहो मैं इस पर मजबूर किया गया तो ऐसा क्यों हुआ?

इब्ने उलैयह के पास क़ासिद ये अश्आर लेकर पहुंचा और उन्होंने पढ़ा तो उन पर रिक़्क़त तारी हो गई और उसी वक़्त अपने ओहदे से इसतीफ़ा लिखकर भेज दिया। (सियरे सहाबा 8 : 327)

7. इब्ने मुबारक के इस्तक़बाल के लिए पूरा शहर दौड़ पड़ा

एक बार अब्दुल्लाह बिन मुबारक "रिक़्क़ा" आए, इसका इल्म हुआ तो पूरा शहर इस्तक़बाल के लिए टूट पड़ा। हारून रशीद की एक लौंडी महल से यह तमाशा देख रही थी। उसने लोगों से दरयाफ़्त किया कि यह क्या मा'मला है? लोगों ने उसे बताया कि ख़ुरासान के एक आलिम अब्दुल्लाह बिन मुबारक यहां आए हैं। उन्हीं के इस्तक़बाल के लिए यह मज्मा उमड़ आया है। उसने बेसाख़्ता कहा कि :

هُوَ الْمَلِكُ لَا مَلِكَ هَارُوْنُ الَّذِىْ لَا يَجْتَمِعُ النَّاسُ عَلَيْهِ إِلَّا بِشُرُوْطٍ وَأَعْوَانٍ.

हक़ीक़त में ख़लीफ़ए-वक़्त ये हैं, हारून नहीं, इसलिए कि उसके गिर्द कोई मज्मा बग़ैर पुलिस, फ़ौज और आवान व अंसार इकट्ठा नहीं होता।

(सियरे सहाबा 8 : 329)

8. ख़्वास के बिगाड़ से अवाम में बिगाड़ पैदा होता है

उम्मते मुहम्मदिया के पांच तब्क़े हैं, जब उनमें ख़राबी पैदा हो जाती है तो सारा माहौल बिगड़ जाता है

एक रोज़ मुसय्यिब बिन वाज़ेह से अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने पूछा कि तुमको मालूम है कि आम बिगाड़ और फ़साद कैसे पैदा होता है? मुसय्यिब ने कहा कि मुझे इल्म नहीं। फ़रमाया कि : ख़्वास के बिगाड़ से अवाम में बिगाड़ पैदा होता है। फिर फ़रमाया कि उम्मते मुहम्मदिया के पांच तब्क़े हैं, जब उनमें फ़साद और ख़राबी पैदा हो जाती है तो सारा माहौल बिगड़ जाता है।

1. उलमा : ये अंबिया के वारिस हैं, मगर जब दुनिया की हिर्स व तमा में पड़ जाएं तो फिर किस को अपना मुक़्तदा बनाया जाए?
2. तज्जार : ये अल्लाह के अमीन हैं, जब यह ख़ियानत पर उतर आएं तो फिर किसको अमीन समझा जाए?
3. मुजाहिदीन : ये अल्लाह के मेहमान हैं जब यह माले ग़नीमत की चोरी शुरू करें तो फिर दुश्मन पर फ़तह किसके ज़रिये हासिल की जाए?
4. जुह्हाद : ये ज़मीन के असल बादशाह हैं। जब ये लोग बुरे हो जाएं तो फिर किसकी पैरवी की जाए?
5. हुक्काम : ये मख़्लूक़ के निगरां हैं, जब यह गल्लाबान ही भेड़िया सिफ़त हो जाए तो गल्ला को किस के ज़रिये बचाया जाए?

क्या औरतें मक्र व फ़रेब की पैकर हैं?

सवाल : बाद सलाम यह अर्ज़ है कि बहुत-से लोग औरतों को ताना देते हैं और मक्र व फ़रेब की पैकर बतलाते हैं और दलील में

क़ुरआन पाक की आयत ﴿ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ﴾ "इन-न कैदकुन-न अज़ीम०" (बेशक तुम्हारी चालबाज़ी बहुत बड़ी है) पेश करते हैं, क्या यह सही है? बराए करम मुत्तला फ़रमाएं। (एक दीनी बहन)

जवाब : यह अज़ीज़ मिस्र का क़ौल है जो उसने अपनी बीवी की हरकते क़बीहा (बुरी हरकत) देखकर औरतों की बाबत कहा है। अल्लाह ने सूरा यूसुफ़ में इसको ज़िक्र किया है। यह न अल्लाह का क़ौल है और न हर औरत के बारे में सही है, इसलिए इसे हर औरत पर चस्पां करना और इस बुनियाद पर औरत को मक्र व फ़रेब का पुतला बावर करना क़ुरआन का हरगिज़ मंशा नहीं है। वल्लाहु आलम!

दीन में ज़्यादा बारीकियां निकालना किसके लिए मुनासिब हैं और किसके लिए नामुनासिब

यहां एक बात समझ लेनी ज़रूरी है और वह यह कि शुब्हात के बारे में ज़्यादा बारीकियां निकालना उस शख़्स के लिए मुनासिब है जिसके और हालात भी बुलन्द हों। उसके वरअ व तक़वा का मेयार भी ऊंचा हो। लेकिन जो शख़्स खुल्लम-खुल्ला मुहर्रिमात का इरतिकाब करे उसके बाद बारीकियां निकाल-निकाल कर मुत्तक़ी बनने का शौक़ रखे तो उसके लिए यह सिर्फ़ नामौज़ूं ही नहीं बल्कि क़ाबिले मज़म्मत होगा।

एक मर्तबा हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से एक इराक़ी शख़्स ने पूछा कि अगर हालते इहराम में मच्छर मार दे तो उसकी क्या जज़ा देनी चाहिए? आपने फ़रमाया : हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को तो शहीद कर डाला, अब मुझसे मच्छर के ख़ून का फ़तवा पूछने चले हैं। मैंने आंहज़रत सल्ल० से अपने कानों से सुना है कि दुनिया में वे मेरे दो फूल हैं।

इसी तरह बशर बिन अल-हारिस से मसला पूछा गया कि एक शख़्स की वालिदा यह कहती है कि तू अपनी बीवी को तलाक़ दे दे। अब उसे क्या करना चाहिए? फ़रमाया : अगर वह शख़्स अपनी वालिदा के तमाम हुक़ूक़ अदा कर चुका है और उसकी फ़रमांबरदारी इस मामले के सिवा

और कोई बात बाक़ी नहीं रही तो उसे तलाक़ दे देनी चाहिए, और अगर अभी कुछ और मराहिल भी बाक़ी हैं तो तलाक़ न देनी चाहिए।

(तर्जुमानुस्सुन्नह 2 : 222)

एक पेचीदा मुक़द्दमा और उसका फ़ैसला

यह वाक़िआ अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली (रज़ि०) के दौरे मुबारक का है– दो मुसाफ़िर काफ़ी चलने के बाद थक गए तो उन्हें शिद्दत से भूख महसूस हुई। दोनों एक सायेदार दरख़्त के नीचे इत्मीनान से बैठ गए और अपने-अपने तोशे दस्तरख़्वान पर रख दिए। एक के पास पांच रोटियां थीं और दूसरे के पास तीन। अभी खाना शुरू भी नहीं किया था कि एक तीसरा मुसाफ़िर पास से गुज़रा। उसने उन्हें सलाम किया। उन्होंने सलाम का जवाब दिया और उसे खाने की दावत दी, वह बे-तकल्लुफ़ होकर शरीक हो गया। तीनों ने रोटियां बराबर खाईं। खाना ख़त्म होने के बाद वह साहब खड़े हुए और उन दोनों के पास आठ दिरहम रखते हुए कहा : मैंने आप दोनों साहिबान का जो खाना तनावुल किया है उसके एवज़ यह दिरहम रख लीजिए।

वह साहब तो दाम देकर चले गए मगर उन दोनों हज़रात के दर्मियान बंटवारे को लेकर तनाज़ा (झगड़ा) शुरू हो गया। जिन साहब की पांच रोटियां थीं उनका कहना था कि "पांच दिरहम मेरे और तीन तुम्हारे"–उन्होंने यह फ़ैसला शायद इसलिए किया कि वह समझ रहे थे कि रक़म देने वाले ने आठ दिरहम इसलिए दिए कि हर रोटी के एवज़ एक दिरहम दिया जाए। इसलिए पांच रोटी के मालिक अपने हक़ में पांच दिरहम रखना चाहते थे और दूसरे साहब को तीन रोटी के एवज़ तीन दिरहम देना चाहते थे।

मगर दूसरे साहब तीन दिरहम लेने के लिए तैयार नहीं थे, उनका कहना था कि यह रक़म चूंकि दोनों को एक साथ दी है, इसलिए इसके बराबर हिस्से कीजिए। इस तरह मेरे हिस्से में चार दिरहम आने चाहिएं। वह चार दिरहम लेने के लिए बज़िद थे।

आख़िर कहने-सुनने से मसला हल न हो सका तो वे अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की बारगाह में फ़ैसले के लिए हाज़िर हुए। दोनों ने पूरा वाक़िआ तफ़्सीलन बयान कर दिया। पूरा वाक़िआ सुनने के बाद आपने तीन रोटी वाले से फ़रमाया कि जब तुम्हारा साथी तीन दिरहम तुम्हें देने के लिए तैयार है तो तुम तीन दिरहम पर राज़ी हो जाओ। लेकिन वह चार पर ही अड़ गया। आपने उससे फ़रमाया : वैसे वह तुम्हें तीन दिरहम देकर तुम पर एहसान ही करना चाहता है, वरना इंसाफ़ का तक़ाज़ा यह है कि तुम्हें एक ही दिरहम मिलना चाहिए। उस शख़्स ने बहुत ही अदब से कहा सुब्हानल्लाह! अगर इंसाफ़ का यही तक़ाज़ा है तो मुझे इसकी वजह बताइए, मैं उसे क़बूल कर लूंगा।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे समझाते हुए फ़रमाया : रोटियां आठ थीं, और खाने वाले तीन। ज़ाहिर है कि तीन पर आठ बराबर तक़्सीम नहीं हो सकते। इसलिए माना यह जाएगा कि सबने बराबर रोटियां खाई हैं तो सबको मुसावी करने के लिए रोटियों के हिस्से या टुकड़े माने जाएं। हर रोटी को तीन टुकड़ों में तक़्सीम किया जाए। इस तरह आठ रोटियों के चौबीस (24) टुकड़े हुए। इस हिसाब से हर शख़्स ने रोटी के आठ टुकड़े खाए। अब चूंकि तुम्हारी तीन रोटियां थीं। इसलिए उसके नौ (9) टुकड़े हुए जिसमें से आठ टुकड़े तुमने खा लिए। बाक़ी बचा एक टुकड़ा जो तीसरे शख़्स ने खाया। तुम्हारे साथी के पास पांच रोटियां थीं उनके पन्द्रह टुकड़े हुए जिनमें से आठ टुकड़े उसने खाए, बाक़ी बचे सात टुकड़े जो तीसरे साहब ने खाए। तो मालूम हुआ कि उस शख़्स ने तुम्हारी रोटी का सिर्फ़ एक टुकड़ा ही खाया। इसलिए तुम्हारा हक़ सिर्फ़ एक दिरहम है, और तीसरे ने उस साथी की रोटी के सात टुकड़े खाए इसलिए उसका हक़ सात दिरहम है। वह शख़्स इस फ़ैसले पर राज़ी हो गया– ग़ौर फ़रमाइए! मुक़द्दमा कितना पेचीदा था और कितनी आसानी से फ़ैसला हो गया।

(तारीख़ ख़ुलफ़ाए सुयूती, पेज : 59)

यहूदियों के शर से बचने के लिए हज़रत जिब्रील ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को एक दुआ सिखाई

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरफ़ूअन मरवी है कि जब यहूदी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल करने के लिए जमा हुए तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हज़रत ईसा अलैस्सिलाम के पास आए और उनसे फ़रमाया कि यह दुआ पढ़ो!

أَللّٰهُمَّ إِنِّىٓ أَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الْوَاحِدِ الْأَحَدِ أَدْعُوكَ، أَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ الصَّمَدِ أَدْعُوكَ، أَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ الْعَظِيْمِ الْوِتْرِ الَّذِىْ مَلَأَ الْأَرْكَانَ كُلَّهَا إِلَّا مَا فَرَّجْتَ عَنِّىْ مَا أَمْسَيْتُ فِيْهِ وَمَا أَصْبَحْتُ فِيْهِ.

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने यह दुआ मांगी तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को अल्लाह तबारक व तआला ने हुक्म दिया कि मेरे बन्दे को मेरे पास ले आओ। (अल-अर्ज फ़िल-फ़र्ज लिस्सुयूती, पेज : 41)

काफ़िर सात आंतों से खाता है और मोमिन एक आंत से खाता है

हज़रत मैमूना बिन्त हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक साल क़हत पड़ा तो देहाती लोग मदीना मुनव्वरा आने लगे। हुज़ूर अकरम सल्ल० के फ़रमाने पर हर सहाबी उनमें से एक आदमी का हाथ पकड़कर ले जाता और उसे अपना मेहमान बना लेता और उसे रात का खाना खिलाता।

चुनांचे एक रात एक देहाती आया (उसे हुज़ूर अकरम सल्ल० अपने यहां ले आए) हुज़ूर सल्ल० के पास थोड़ा-सा खाना और कुछ दूध था। वह देहाती ये सब कुछ खा-पी गया और उसने हुज़ूर अकरम सल्ल० के

लिए कुछ न छोड़ा। हुज़ूर अकरम सल्ल० एक या दो रातें और उसको साथ लाते रहे और वह हर रोज़ सब कुछ खा जाता, इस पर मैंने अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह! इस देहाती में बरकत न कर क्योंकि यह हुज़ूर सल्ल० का सारा खाना खा जाता है और हुज़ूर अकरम सल्ल० के लिए कुछ नहीं छोड़ता, फिर वह मुसलमान हो गया और उसे फिर हुज़ूर अकरम सल्ल० एक रात साथ लेकर आए, उस रात उसने थोड़ा-सा खाना खाया। मैंने हुज़ूर अकरम सल्ल० से अर्ज़ किया यह वही आदमी है? (जो पहले सारा खाना खा लिया करता था) हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : हां (यह वही आदमी है लेकिन पहले काफ़िर था और अब मुसलमान हो गया है) काफ़िर सात आंतों में खाता है और मोमिन एक आंत में खाता है।

(हयातुस्सहाबा 2 : 263)

फ़ित्नों के दौर में उम्मत को क्या करना चाहिए

कामयाबी का राज़ जोश के साथ होश में छुपा हुआ है

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : वह ज़माना क़रीब है जबकि मुसलमान के लिए सबसे बेहतर चन्द बकरियां होंगी, जिन्हें लेकर वह अपने दीन को फ़ित्नों से बचाने के लिए पहाड़ों की चोटियों और जंगलों में भाग जाएगा।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

मिक़्दाद बिन असवद रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को ख़ुद फ़रमाते हुए सुना है कि जो फ़ित्नों से महफ़ूज़ रहा वह बड़ा ख़ुशनसीब है (तीन बार फ़रमाया) और जो शख़्स उनमें फंस गया फिर उसने उन पर सब्र किया उसका तो क्या ही कहना। (अबू दाऊद)

तशरीह : फ़ित्नों की ज़ात में बड़ी कशिश होती है। बेदीन नासमझी से या उनको दीन समझकर उनकी तरफ़ खिंचे चले जाते हैं, और जो दीनदार हैं वे उनमें शिरकत के लिए मजबूर हो जाते हैं। उनकी मिसाल उन मुतअद्दी इमराज़ की-सी होती है जो फ़िज़ाए आलम में

दफ़अतन फैल जाएं। ऐसी फ़िज़ा में जा-जाकर घुसना सेहत की क़ुव्वत की अलामत नहीं, बल्कि उससे लापरवाही की बात है, आफ़ियत इसी में होती है कि इस फ़िज़ा ही से निकल भागे। इस हक़ीक़त पर इमाम बुख़ारी रह० ने एक मुस्तक़िल बाब क़ायम करके मुतनब्बह किया है— उसके बाद गुज़िश्ता फ़ित्नों की तारीख़ पर नज़र डालोगे तो तुमको सलफ़ सालेह का यही तर्ज़े-अमल नज़र आएगा कि जब कभी उनके दौर में फ़ित्नों ने मुंह निकाला—अगर वे उनको कुचल नहीं सके—तो उनमें कूदने के बजाए हमेशा उनसे किनाराकश हो गए।

अगर उम्मत इसी एक हदीस को समझ लेती तो कभी फ़ित्ने ज़ोर न पकड़ते, और अगर बेदीन इसमें मुब्तला हो भी जाए तो कम से कम दीनदारों का दीन तो उनकी मज़र्रतों से महफ़ूज़ रह जाता, मगर जब इस हदीस की रिआयत न रही तो बेदीनों ने फ़ित्नों को हवा दी और दीनदारों ने इस्लाह की ख़ातिर उनमें शिरकत की, फिर उनकी इस्लाह करने के बजाए ख़ुद अपना दीन भी खो बैठे। वल्लाहुल मुस्तआन०

उम्मत में सबसे बड़ा फ़ित्नों दज्जाल का है, उसके बारे में यह ख़ास तौर पर ताकीद की गई है कि कोई शख़्स उसको देखने के लिए न जाए कि उसके चेहरे की नहूसत भी मोमिन के ईमान पर असरअंदाज़ होगी।

यह याद रखना चाहिए कि ज़बान और तलवार दोनों का जिहाद इस उम्मत के फ़राइज़ में से है। मगर यहां वह ज़माना मुराद है जबकि ख़ुद मुसलमानों में इंतिशार पैदा हो जाए। हक़ व बातिल की तमीज़ बाक़ी न रहे और इस्लाह का क़दम उठाना उलटा फ़साद का बाइस बन जाए।

चुनांचे जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से सहाबा के अंदरूनी मुशाजरात में जंग की शिरकत के लिए कहा गया और उनके सामने यह आयत पढ़ी गई :

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ (سورۂ انفال آیت۳۹)

"काफ़िरों से उस वक़्त तक जंग करते रहो जब तक कि फ़ित्ना बाक़ी न रहे।" (सूरा अनफ़ाल, आयत 39)

तो उन्होंने फ़रमाया : फ़ित्नों के फ़रो करने के लिए जो जंग थी वह हम कर चुके, अब तुम उस जंग का आग़ाज़ कर रहे हो जिससे और फ़ित्ने पैदा होंगे।

अपनी माद्दी और रूहानी ताक़त का अंदाज़ा किए बग़ैर फ़ित्नों से ज़ोरआज़माई करना सिर्फ़ एक जज़्बा है, और फित्नों को कुचलने के लिए पहले सामान मुहय्या कर लेना अक़्ल और शरीअत का हुक्म है। जज़्बात जब अंजामबीनी से यकसर ख़ाली हों तो वह भी सिर्फ़ दिमाग़ी फ़ल्सफ़ा में मुब्तला होकर रह जाते हैं, कामयाबी का राज़ जोश के साथ होश में छुपा हुआ है। (तर्जुमानुस्सुन्नह 20 : 240)

ज़बान का इल्म दिल का जाहिल इस उम्मत के लिए ख़तरनाक है

हज़रत हसन बसरी रह० कहते हैं कि बसरा का वफ़्द हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया। उनमें अहनफ़ बिन क़ैस भी थे। सबको हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जाने दिया। लेकिन हज़रत अहनफ़ बिन क़ैस को रोक लिया और उन्हें एक साल रोके रखा। उसके बाद फ़रमाया : तुम्हें मालूम है मैंने तुम्हें क्यों रोका था? मैंने इस वजह से रोका था कि हमें रसूलुल्लाह सल्ल० ने हर उस मुनाफ़िक़ से डराया जो आलिमाना ज़बान वाला हो, मुझे डर हुआ कि शायद तुम भी उनमें से हो, लेकिन (मैंने एक साल रखकर देख लिया कि) इंशाअल्लाह तुम उनमें से नहीं हो।

हज़रत अबू उसमान नहदी कहते हैं कि मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मिंबर पर फ़रमाते हुए सुना कि : उस मुनाफ़िक़ से बचो जो आलिम हो। लोगों ने पूछा : मुनाफ़िक़ कैसे आलिम हो सकता है? फ़रमाया : बात तो हक़ कहेगा लेकिन अमल मुंकिरात पर करेगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : इस उम्मत को वह मुनाफ़िक़ हलाक करेगा जो ज़बान का आलिम हो।

हज़रत अबू उसमान नहदी कहते हैं कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब

रज़ियल्लाहु अन्हु को मिंबर पर यह फ़रमाते हुए सुना कि : इस उम्मत पर सबसे ज़्यादा डर उस मुनाफ़िक़ से है जो आलिम हो। लोगों ने पूछा : ऐ अमीरुल मोमिनीन! मुनाफ़िक़ कैसे आलिम हो सकता है? फ़रमाया वह ज़बान का आलिम होगा, लेकिन दिल और अमल का जाहिल होगा।

(हयातुस्सहाबा 3 : 304)

हज़रत लुक़मान की हिक्मत का अजीब क़िस्सा

क़ुरआन पाक में है :

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ (سورۂ لقمان آیت ۱۲)

"और हमने यक़ीनन लुक़मान को हिक्मत दी थी कि तू अल्लाह तआला का शुक्र कर।" (सूरा लुक़मान, आयत 12)

हज़रत लुक़मान अल्लाह के नेक बन्दे थे, जिन्हें अल्लाह तआला ने हिक्मत यानी अक़्ल व फ़हम और दीनी बसीरत में मुमताज़ मक़ाम अता फ़रमाया था। उनसे किसी ने पूछा : तुम्हें यह फ़हम व शऊर किस तरह हासिल हुआ? उन्होंने फ़रमाया : रास्तबाज़ी, अमानतदारी इख़्तियार करने और बेफ़ायदा बातों से इज्तिनाब की वजह से।

उनकी हिक्मत का एक वाक़िआ यह भी मशहूर है कि यह ग़ुलाम थे। उनके आक़ा ने कहा कि बकरी ज़िब्ह करके उसके दो बेहतरीन हिस्से लाओ, चुनांचे वह ज़बान और दिल निकाल कर ले गए– एक मुद्दत के बाद फिर आक़ा ने उनसे कहा कि बकरी ज़िब्ह करके उसके सबसे बदतरीन हिस्से लाओ। वह फिर वही ज़बान और दिल लेकर आए। पूछने पर उन्होंने बतलाया कि ज़बान और दिल अगर सही हों तो यह सबसे बेहतरीन हैं, और अगर यह बिगड़ जाएं तो इनसे बदतरीन चीज़ कोई नहीं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

एक दीनी पेशवा की
एक गुनाह की वजह से घर बैठे रुसवाई

एक औरत बकरियां चराया करती थी और एक राहिब की ख़ानक़ाह तले रात गुज़ारा करती थी, उसके चार भाई थे। एक दिन शैतान ने राहिब को गुद-गुदाया। वह उससे ज़िना कर बैठा, उसे हमल रह गया। शैतान ने राहिब के दिल में (यह बात) डाली कि अब बड़ी रुसवाई होगी, इससे बेहतर है कि उसे मार डाल और कहीं दफ़न कर दे, तेरे तक़द्दुस को देखते हुए तेरे तरफ़ तो किसी का ख़्याल भी न जाएगा, और अगर बिलफ़र्ज़ फिर भी कुछ पूछ-गछ हो तो झूठ मूठ कह देना, भला कौन है जो तेरी बात को ग़लत जाने? उसकी समझ में भी यह बात आ गई। एक रोज़ रात के वक़्त मौक़ा पाकर उस औरत को जान से मार डाला और किसी उजड़ी जगह ज़मीन में दबा दिया।

अब शैतान उसके चारों भाइयों के पास पहुंचा, और हर एक के ख़्वाब में उसे सारा वाक़िआ सुनाया, और उसके दफ़न की जगह भी बता दी। सुबह जब यह जागे तो एक ने कहा कि आज की रात तो मैंने एक अजीब ख़्वाब देखा है, हिम्मत नहीं पड़ती कि आप से बयान करूं। दूसरे ने कहा नहीं कहो तो सही, चुनांचे उसने अपना पूरा ख़्वाब बयान किया कि इस तरह फ़लां आबिद ने उस (की बहन) से बदकारी की, फिर जब हमल ठहर गया तो उसे क़त्ल कर दिया और फ़लां जगह उसकी लाश दबा आया। उन तीनों में से हर एक ने कहा मुझे भी यही ख़्वाब आया। अब तो उन्हें यक़ीन हो गया कि ख़्वाब सच्चा है।

चुनांचे उन्होंने जाकर हुकूमत को इत्तिलाअ दी और बादशाह के हुक्म से उस राहिब को उस ख़ानक़ाह से साथ लिया और उस जगह पहुंचकर ज़मीन खोदकर उसकी लाश बरामद की। कामिल सुबूत के बाद अब उसे शाही दरबार में ले चले। उस वक़्त शैतान उसके सामने ज़ाहिर होता है और कहता है कि ये सब मेरे किए कूतक (करतूत) हैं, अब भी अगर तू मुझे राज़ी कर ले तो जान बचा दूंगा। उसने कहा जो तू कहे!

कहा मुझे सज्दा कर ले, उसने यह भी कर दिया। पस पूरा बे-ईमान बनाकर शैतान कहता है : मैं तो तुझसे बरी हूं, मैं तो अल्लाह तआला से जो तमाम जहानों का रब है डरता हूं, चुनांचे बादशाह ने हुक्म दिया और पादरी साहब को क़त्ल कर दिया गया। (तफ़्सीर इब्ने कसीर 5 : 322-323)

एक देहाती के पच्चीस सवालात और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जवाबात

एक देहाती हुज़ूर सल्ल० के दरबार में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! मैं कुछ पूछना चाहता हूं? फ़रमाया : कहो! देहाती ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल०!

सवाल 1. मैं अमीर (ग़नी) बनना चाहता हूं?

जवाब : क़नाअत इख़्तियार करो। अमीर हो जाओगे।

सवाल 2. अर्ज़ किया : मैं सबसे बड़ा आलिम बनना चाहता हूं?

जवाब : तक़वा इख़्तियार करो, आलिम बन जाओगे।

सवाल 3. इज़्ज़त वाला बनना चाहता हूं?

जवाब : मख़्लूक़ के सामने हाथ फैलाना बन्द कर दो, बाइज़्ज़त बन जाओगे।

सवाल 4. अच्छा आदमी बनना चाहता हूं?

जवाब : लोगों को नफ़ा पहुंचाओ।

सवाल 5. आदिल बनना चाहता हूं?

जवाब : जिसे अपने लिए अच्छा समझते हो वही दूसरों के लिए पसन्द करो।

सवाल 6. ताक़तवर बनना चाहता हूं?

जवाब : अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करो।

सवाल 7. अल्लाह के दरबार में ख़ास दर्जा चाहता हूं?

जवाब : कसरत से ज़िक्र करो।?

सवाल 8. रिज़्क़ की कुशादगी चाहता हूं?

जवाब : हमेशा बावुज़ू रहो।

सवाल 9. दुआओं की क़बूलियत चाहता हूं?

जवाब : हराम न खाओ।

सवाल 10. ईमान की तक्मील चाहता हूं?

जवाब : अख़्लाक़ अच्छे कर लो।

सवाल 11. क़ियामत के रोज़ गुनाहों से पाक होकर अल्लाह से मिलना चाहता हूं?

जवाब : जनाबत के बाद फ़ौरन ग़ुस्ल किया करो।

सवाल 12. गुनाहों में कमी चाहता हूं?

जवाब : कसरत से इस्तिग़फ़ार किया करो।

सवाल 13. क़ियामत के रोज़ नूर में उठना चाहता हूं?

जवाब : ज़ुल्म करना छोड़ दो।

सवाल 14. मैं चाहता हूं कि अल्लाह मुझ पर रहम करे?

जवाब : अल्लाह के बन्दों पर रहम करो।

सवाल 15. मैं चाहता हूं कि अल्लाह मेरी पर्दापोशी करे?

जवाब : लोगों की पर्दापोशी करो।

सवाल 16. रुसवाई से बचना चाहता हूं?

जवाब : ज़िना से बचो।

सवाल 17. मैं चाहता हूं कि अल्लाह और उसके रसूल का महबूब बन जाऊं?

जवाब : जो अल्लाह और उसके रसूल को महबूब हो उसे अपना महबूब बना लो।

सवाल 18. अल्लाह का फ़रमांबरदार बनना चाहता हूं?

जवाब : फ़राइज़ का एहतिमाम करो।

सवाल 19. एहसान करने वाला बनना चाहता हूं?

जवाब : अल्लाह की इस तरह बन्दगी करो जैसे तुम उसे देख रहे हो या जैस वह तुम्हें देख रहा है।

सवाल 20. या रसूलुल्लाह! क्या चीज़ गुनाहों से माफ़ी दिलाएगी?

जवाब : आंसू..............आजिज़ी.............और बीमारी।

सवाल 21. क्या चीज़ दोज़ख़ की आग को ठण्डा करेगी?

जवाब : दुनिया की मुसीबतों पर सब्र।

सवाल 22. अल्लाह के ग़ुस्से को क्या चीज़ ठण्डा करेगी?

जवाब : चुपके-चुपके सदक़ा...........और सिलारहमी।

सवाल 23. सबसे बड़ी बुराई क्या है?

जवाब : बुरे अख़्लाक़.....................और बुख़्ल।

सवाल 24. सबसे बड़ी अच्छाई क्या है?

जवाब : अच्छे अख़्लाक़..........तवाज़ोअ............और सब्र।

सवाल 25. अल्लाह के ग़ुस्से से बचना चाहता हूं?

जवाब : लोगों पर ग़ुस्सा करना छोड़ दो।

(कंज़ुल आमाल, मुस्नद अहमद)

अस्मा-ए-हुस्ना का तज़्किरा

इसमें अस्मा-ए-हुस्ना पढ़ने वालों के लिए अह्म हिदायतें, अस्मा-ए-हुस्ना के मानी और फ़वाइद व ख़्वास का तज़्किरा है।

सूरा आराफ़ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا (آیت۱۸۰)

"व लिल्लाहिल अस्माउल हुसना फ़दऊहु बिहा०" (आयत 180)

और अल्लाह के लिए अच्छे अच्छे नाम हैं,
सो तुम (हमेशा) उसको अच्छे नामों से पुकारो।

☆☆☆

बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ لِلّٰهِ تَعَالٰى تِسْعَةً وَّتِسْعِيْنَ اسْمًا: مِأَةً اِلَّا وَاحِدَةً، مَنْ اَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ (مشکوٰۃ شریف، ص:۱۹۹)

"बेशक अल्लाह तआला के निन्नान्वे (99) यानी एक कम सौ (100) नाम हैं। जिसने उनको महफ़ज़ू कर लिया (यानी उनको याद किया और उन पर ईमान लाया) वह जन्नत में पहुंच गया।" (मिश्कात, पेज-199)

अस्मा-ए-हुस्ना पढ़ने वालों के लिए अहम हिदायात

1. इंसान अपनी फ़ितरी कमज़ोरी की वजह से तर्ग़ीब का मुहताज है। होना तो यह चाहिए था कि जब उसे पता चलता कि मेरे प्यारे रब के प्यारे नाम हैं और उसने उन नामों के ज़रिये ख़ुद को पुकारने और मांगने का हुक्म दिया है, और हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया है कि जो उन नामों को याद कर लेगा, जन्नत में जाएगा। तो फ़ौरन उन नामों (अस्मा-ए-हुस्ना) में मगन हो जाता, और अपनी ज़िंदगी के हर सांस को उन नामों के ज़िक्र से मुअत्तर करके उन ख़ज़ानों को पा लेता जो उन नामों के अंदर छुपे हुए हैं।

   मगर अक्सर इनसान ऐसा नहीं करते। उन्हीं की तर्ग़ीब के लिए अस्मा-ए-हुस्ना के कुछ ख़्वास जमा कर दिए गए हैं। ये ख़्वास क़ुरआन व सुन्नत से माख़ूज़ हैं। बल्कि माज़ी में अल्लाह वालों ने इन प्यारे नामो से जो मुनाफ़े कमाए उन्होंने उनको लिख दिया, ताकि दूसरे लोग भी उन मुनाफ़ों को हासिल कर सकें। ये ख़्वास अस्मा-ए-हुस्ना के फ़वाइद का इहाता नहीं कर सकते, बल्कि यह तो ऐसा है कि जिस तरह जन्नत के फलों को सुंघाकर जन्नत की तर्ग़ीब दी जाए, ख़ुश्बू अपनी जगह मगर ज़ायक़ा यक़ीनन उससे बढ़कर होता है, पस यह ख़्वास ख़ुश्बू की तरह हैं, मगर जो यक़ीन व ईमान के साथ इन अस्मा-ए-हुस्ना को पढ़ेगा वह इंशाअल्लाह उस ज़ायक़े को पा लेगा जो ख़ुश्बू से बहुत अफ़ज़ल और आला है।

2. अस्मा-ए-हुस्ना के बाज़ ख़्वास को देखकर लोग हैरानी से पूछते हैं कि चन्द बार यह नाम पढ़कर इतना बड़ा फ़ायदा कैसे हासिल हो सकता है? ऐसे लोगों के लिए बस इतनी गुज़ारिश है कि वह दोबारा अपने दिल को यह बात याद दिलाएं कि आख़िर यह नाम किस ज़ात के हैं? क्या उससे बढ़कर या उससे बड़ी भी कोई चीज़ है? नहीं! हरगिज़ नहीं! तो फिर शक, शुब्हा और ख़ल्जान की क्या बात

है? बेशक अस्मा-ए-हुस्ना के विर्द से उन ख़्वास से बढ़कर फ़वाइद मिलते हैं, कोई करके तो देखे।

3. अदद और तादाद का अपना एक असर है। हकीम का नुस्ख़ा पढ़ें, छटांक, तोले और माशे के फ़र्क़ से दवा की तासीर बदल जाती है हालांकि चीज़ वही होती है मगर मिक़्दार और वज़न उसके असर को तब्दील कर देते हैं।

   एक इंसान कोई बात एक बार सुनकर याद कर लेता है मगर दूसरे इंसान को यही बात तीन बार सुनने से याद होती है। हालांकि ज़बान और कान एक जैसे हैं। एक शख़्स कितनी क़ुव्वते बरदाश्त रखता है? इसका ताल्लुक़ भी बाज़ औक़ात अदद और मिक़्दार से होता है। इसी तरह गर्मी, सर्दी, आग और पानी के दर्जे-ए-हरारत और दर्जे-ए-बरूदत (ठंडक) के अपने आसार होते हैं.......आजकल के रेडियाई आलात भी अदद और मिक़्दार के असर का बरमला एलान करते हैं।

   हुज़ूर अकरम सल्ल० ने बाज़ दुआओं और कलिमात के साथ उनकी तादाद भी मुतैयन फ़रमाई है जो अदद और मिक़्दार के मुवस्सिर होने की क़वी, मज़बूत और मोतबर दलील है।

4. इंसानों ने दीन व दुनिया को अलग-अलग कर दिया जबकि इस्लाम में ये दोनों इकट्ठे चलते हैं। पस जिन अस्मा के ख़्वास में कुछ दुनियावी फ़वाइद लिखे हैं उनके साथ उन अस्मा में बेशुमार दीनी फ़वाइद भी हैं। इसी तरह जिन अस्मा के दीनी ख़्वास लिखे हैं उनके विर्द में बेशुमार दुनियावी फ़वाइद भी हैं।

5. अल्लाह तआला मोमिन को वह दीन देता है जिनमें दुनिया की भलाई भी होती है और उसे वही दुनिया देता है जो उसके दीन के लिए नाफ़ेअ होती है।

6. नफ़ा देना और नुक़्सान से बचाना यह सब सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह

तआला के क़ब्ज़-ए-क़ुदरत में है। इसलिए वही विर्द, वज़ीफ़ा और दुआ पुरअसर होती है जिसका मक़्सद अल्लाह तआला को राज़ी करना हो, बाक़ी ख़्वास का दर्जा सानवी है, अल्लाह तआला राज़ी होगा तो सारे ख़्वास व फ़वाइद नसीब होंगे। लेकिन अगर वह राज़ी न हुआ तो फिर क्या विर्द? क्या वज़ीफ़ा? और क्या ख़्वास?

7. पाक चीज़ों को नापाक मक़ासिद के लिए इस्तेमाल किया जाए तो सिवाय हलाकत के और कुछ हाथ नहीं आता। खाना कितना ही क़ीमती क्यों न हो, अगर नाक में डाला जाए या कान में घुसाया जाए तो वह फ़ायदा नहीं नुक़्सान देगा। इसी तरह अस्मा-ए-हुस्ना के ज़रिये नापाक मक़ासिद हासिल करने वाले अपनी तबाही के सिवा और कुछ नहीं पाते। लिहाज़ा इस बारे में अल्लाह तआला से डरना चाहिय और उसके नामों के ज़रिये अपनी इस्लाह करनी चाहिए।

8. ख़ास-ख़ास मक़ासिद के लिए ख़ास-ख़ास अस्मा पढ़ना कुछ बुरा नहीं, लेकिन काम की बात यह है कि पहले उन अस्मा को इख़्तियार किया जाए जो नफ़्स की इस्लाह, मख़्लूक़ से बेनियाज़ी और मुहब्बते इलाही के ख़ुसूसी ख़्वास रखते हैं, फिर बाक़ी अस्मा को पढ़ा जाए और इस बात को हरगिज़ न भुलाया जाए कि ये सारे अस्मा आला व अरफ़अ हैं इसलिए इन तमाम के विर्द से ग़फ़लत न की जाए बल्कि नसर या नज़्म की सूरत में तमाम अस्मा के विर्द को मामूल बनाया जाए।

9. ये सारे अस्मा घर के बच्चों को भी याद कराए जाएं और उनके ज़िक्र से अपने घरों और मुहल्लों को ईमानी नूर और रूहानी सुकून बख़्शा जाए।

10. गुनाहों के मारे और मुसीबतों के पिसे हुए परेशानहाल, दुखी और ज़ख़्मखुरदा मुसलमान, जिन्हें एक तरफ़ उनका अज़दहा सिफ़त नफ़्से अम्मारा हर घड़ी डसता है और उन्हें ज़िल्लत व पस्ती के गढ़ों में हर आन घसीटता है– दूसरी तरफ़ शैतान उन पर हर दम अपने सवार

और प्यादा दस्तों के ज़रिये हमलावर होता है और उनको इस्लाम और इंसानियत के सीधे रास्ते से हटाकर ज़ुल्म, तकब्बुर, शहवतपरस्ती, बदफ़ेली, हरामख़ोरी, हरामकारी और हरामबीनी के जहन्नमी रास्तों की तरफ़ खींचता है, और उन्हें अपनी ख़ल्क़त व फ़ितरत तक तब्दील करने और हिज़्बुश्शैतान के नारी टोले में शामिल होने की दावत देता है, नफ़्स और शैतान की मार से ख़स्ताहाल उन मुसलमानों को दुनियावी मसाइब, परेशानियां, फ़क़्र व फ़ाक़ा और ज़िल्लत भी अपना शिकार बनाती है— ये बेचारे कहां जाएं?

यह मज्मूआ इसी सवाल का जवाब है— इंसान को पैदा करने वाला और उससे मुहब्बत करने वाला अल्लाह जल्ले शानुहू जो रहीम भी है और करीम भी है, क़वी भी है और रहमान भी है, वदूद भी है और क़य्यूम भी है, इस दरमांदा, परेशानहाल, ज़ख़्मखुरदा, दुखी और ख़स्ताहाल इंसान को थाम सकता है। बन्दा ज़रा उधर तवज्जोह करके तो देखे और अस्मा-ए-हुस्ना के ख़ूबसूरत बाग़ की सैर तो करे, इंशाअल्लाह हर क़दम पर चौंकेगा और ख़ुशी से मस्त होकर उस बाग़ के फलों, फूलों और सैरगाहों से सुकून पाएगा, हर लम्हा सैर होगा और जितना सैर होता जाएगा, उसी क़द्र उसकी रूहानी तशनगी बढ़ती चली जाएगी। काश बन्दे अस्मा-ए-हुस्ना को याद करें!!

सिफ़ाते ख़ुदावंदी का जानना क्यों ज़रूरी है?

क़ुरआन करीम में अस्मा-ए-हुस्ना और सिफ़ाते ख़ुदावंदी को जगह-जगह निहायत वज़ाहत और शरह व बस्त के साथ बयान किया गया है, क्योंकि उसके बग़ैर ख़ालिक़े कायनात की मारफ़त हासिल नहीं हो सकती जो इंसानों की इस्लाह के लिए सबसे ज़्यादा सूदमंद और मुफ़ीद चीज़ है। मस्लन जो लोग यह नहीं जानते कि अल्लाह तआला रज़्ज़ाक़ हैं वह अल्लाह तआला को मानने के बावजूद बहुत-सी चीज़ों को राज़िक़ समझते हैं—कोई बाप को, कोई शौहर को, कोई बादशाह को राज़िक़ ख़्याल करता है तो कोई खेती और दुकान को राज़िक़ समझता है— इसी तरह जो लोग

यह नहीं जानते कि अल्लाह तआला "शदीदुल इक़ाब" और "ज़ुत्तौल" हैं वह अल्लाह तआला पर ईमान रखने के बावजूद जराइम-पेशा हो जाते हैं और गुनाहों से बाज़ नहीं आते, और जो लोग यह नहीं जाते कि अल्लाह तआला "ग़फ़ूरुर्रहीम" और "अरहमुर्राहिमीन" हैं वह रहमते ख़ुदावंदी से नाउम्मीद और मायूस हो जाते हैं, और यह समझते हैं कि हम इतने बड़े पापी हैं कि हमारी हरगिज़ बख़्शिश नहीं हो सकती, फिर वे बे-लगाम हो जाते हैं।

अलग़र्ज़ अस्मा-ए-इलाही और सिफ़ाते ख़ुदावंदी की मारफ़त के बग़ैर इंसानों की इस्लाह और नुफ़ूस का तज़्किया नहीं हो सकता, इसलिए सिफ़ाते ख़ुदावंदी का जानना निहायत ज़रूरी है।

अस्मा-ए-हुस्ना की तादाद और उनको याद करने का अज़ीमतरीन फ़ायदा

बुख़ारी और मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की यह रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया :

اِنَّ لِلّٰهِ تَعَالٰى تِسْعَةً وَّتِسْعِيْنَ اسْمًا: مِائَةً اِلَّا وَاحِدَةً، مَنْ اَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ

(مشکوٰۃ شریف ص:۱۹۹)

"बेशक अल्लाहत आला के निन्नानवे (99) यानी एक कम सौ (100) नाम हैं, जिसने उनको महफ़ूज़ कर दिया (यानी उनको याद किया और उन पर ईमान लाया) वह जन्नत में पहुंच गया।"

यहां यह जान लेना चाहिए कि अल्लाह तआला के सिर्फ़ निन्नानवे (99) नाम नहीं हैं। क़ुरआन व हदीस में इन नामों के अलावा और बहुत-से अच्छे अच्छे नाम हैं, नीज़ दीगर आसमानी किताबों में भी अल्लाह तआला के कई नाम बयान किए गए हैं, और अल्लाह तआला के कुछ नाम ऐसे हैं जिनको अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता— बुख़ारी और

मुस्लिम शरीफ़ की मज़्कूराबाला रिवायत में सिर्फ़ इन नामों का इज्माली तज़्किरा है जिनको महफ़ूज़ करने वाला जन्नत का मुस्तहिक़ बन जाता है। इसलिए यह मानते हुए कि अल्लाह तआला के बेशुमार नाम और सिफ़ात हैं, उन नामों को महफ़ूज़ करने की पूरी कोशिश करनी चाहिए, यानी समझकर उन नामों को याद करना चाहिए और अल्लाह तआला को उन औसाफ़ व कमालात के साथ मुत्तसिफ़ जानना और मानना चाहिए ताकि आपका अक़ीदा दुरुस्त हो, नीज़ उन नामों को बार-बार पढ़ना चाहिए और उनका ख़ूब विर्द करना चाहिए ताकि आप फ़ज़ाइल और औसाफ़े हमीदा से आरास्ता और रज़ाइल व गुनाहों से पाक साफ़ हो जाएं। यही इन नामों को याद करने का सबसे बड़ा फ़ायदा है, अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से हम सबको रज़ाइल से पाक और फ़ज़ाइल से आरास्ता फ़रमा कर जन्नतुल फ़िरदौस नसीब फ़रमाए। आमीन या रब्बल आलमीन!

तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत और उसका तर्जुमा

बुख़ारी और मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में अल्लाह तआला के जिन नामों का इज्माली तज़्किरा है उसकी तफ़्सील तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत में है, इसलिए पहले तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत और उसका तर्जुमा पेश किया जाता है, फिर हर नाम के मानी और उसके ख़्वास ज़िक्र किए जाएंगे, इंशाअल्लाहुल अज़ीज़।

عَنْ أَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم: إِنَّ لِلّٰهِ تَعَالٰى تِسْعَةً وَّتِسْعِيْنَ اسْمًا، مِائَةً غَيْرَ وَاحِدَةٍ مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ.

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ، الرَّحِيْمُ، الْمَلِكُ، الْقُدُّوْسُ، السَّلَامُ، الْمُؤْمِنُ، الْمُهَيْمِنُ، الْعَزِيْزُ، الْجَبَّارُ، الْمُتَكَبِّرُ، الْخَالِقُ، الْبَارِئُ، الْمُصَوِّرُ، الْقَهَّارُ، الْوَهَّابُ، الرَّزَّاقُ، الْفَتَّاحُ، الْعَلِيْمُ، الْقَابِضُ، الْبَاسِطُ، الْخَافِضُ، الرَّافِعُ، الْمُعِزُّ، الْمُذِلُّ، السَّمِيْعُ، الْعَدْلُ، الْبَصِيْرُ، الْحَكَمُ، اللَّطِيْفُ،

الْخَبِيْرُ، الْحَلِيْمُ، الْعَظِيْمُ، الْغَفُوْرُ، الشَّكُوْرُ، الْعَلِيُّ، الْكَبِيْرُ، الْحَفِيْظُ، الْمُقِيْتُ، الْحَسِيْبُ، الْجَلِيْلُ، اَلْكَرِيْمُ، الرَّقِيْبُ، الْمُجِيْبُ، الْوَاسِعُ، الْحَكِيْمُ، الْوَدُوْدُ، الْمَجِيْدُ، الْبَاعِثُ، الشَّهِيْدُ، الْحَقُّ، الْوَكِيْلُ، الْقَوِيُّ، الْمَتِيْنُ، الْوَلِيُّ، الْحَمِيْدُ، الْمُحْصِيْ، الْمُبْدِئُ، الْمُعِيْدُ، الْمُحْيِيْ، الْمُمِيْتُ، الْحَيُّ، الْقَيُّوْمُ، الْوَاجِدُ، الْمَاجِدُ، الْوَاحِدُ، الصَّمَدُ، الْقَادِرُ، الْمُقْتَدِرُ، الْمُقَدِّمُ، الْمُؤَخِّرُ، اَلْاَوَّلُ، اَلْآخِرُ، الظَّاهِرُ، الْبَاطِنُ، الْوَالِيْ، الْمُتَعَالِيْ، الْبَرُّ، التَّوَّابُ، الْمُنْتَقِمُ، الْعَفُوُّ، الرَّءُوْفُ، مَالِكُ الْمُلْكِ، ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ، الْمُقْسِطُ، الْجَامِعُ، الْغَنِيُّ، الْمُغْنِيْ، الْمَانِعُ، الضَّارُّ، النَّافِعُ، النُّوْرُ، الْهَادِيْ، الْبَدِيْعُ، الْبَاقِيْ، الْوَارِثُ، الرَّشِيْدُ، الصَّبُوْرُ. (ترمذی شریف ۲:۱۸۹)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : बेशक अल्लाह तआला के निन्नानवे (99) एक कम सौ (100) नाम हैं, जिसने उन नामों को महफ़ूज़ किया वह जन्नत में पहुंच गया :

1. वही अल्लाह यानी हक़ीक़ी माबूद है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं (2) बड़ा मेहरबान है (3) निहायत रहम वाला है (4) तमाम जहानों का बादशाह है (5) निहायत पाक (6) और तमाम उयूब व कमज़ोरियों से सालिम है (7) अम्न व अमान देने वाला है (8) तमाम मख़्लूक़ की निगाहबानी करने वाला है (9) कामिल ग़लबा वाला है, कभी किसी से मग़लूब नहीं होता (10) बिगड़े हुए कामों और हालात को दुरुस्त करने वाला है (11) बड़ी अज़्मत वाला है (12) जान डालने वाला (13) और पैदा करने वाला है (14) सूरत बनाने वाला है (15) बहुत माफ़ करने वाला है (16) सब को क़ाबू में रखने वाला है (17) बहुत देने वाला है (18) ख़ूब रोज़ी पहुंचाने वाला है (19) फ़तहबख़्श और रिज़्क़ व रहमत के दरवाज़े खोलने वाला है

(20) ख़ूब जानने वाला है (21) रोज़ी तंग करने वाला (22) और रोज़ी की कुशादगी करने वाला है (23) (नाफ़रमानों को) पस्त करने वाला (24) (और नेकूकारों को) बुलन्द करने वाला है (25) (मुसलमानों को) इज़्ज़त देने वाला (26) (और काफ़िरों को) ज़लील करने वाला है (27) ख़ूब सुनने वाला (28) सबको देखने वाला (29) और सब का हाकिम है (30) निहायत इंसाफ़ परवर (31) बड़ा बारीकज़्मत वाला है (35) बहुत बख़्शने वाला (36) और बड़ा क़द्रदां यानी थोड़े अमल पर बहुत ज़्यादा सवाब देने वाला है (37) बहुत बुलन्द (38) और बहुत बड़ा है (39) सबकी हिफ़ाज़त करने वाला (40) और ग़िज़ाबख़्श है (41) हिसाब लेने वाला (42) बड़ी बीं और बन्दों पर नर्मी करने वाला है (32) बड़ा बाख़बर (33) बड़ा बुर्दबार (34) और अशान वाला (43) बड़ा सख़ी (44) और ख़ूब निगहबानी करनेह वाला है (45) सबकी दुआएं सुनने और क़बूल करने वाला है (46) बड़ी वुस्अत वाला (47) और बड़ी हिक्मत वाला है (48) (नेक बन्दों से) बेहद मुहब्बत करने वाला (49) बड़ा बुज़ुर्ग (50) और मुर्दों को ज़िंदा करने वाला है (51) हाज़िर व नाज़िर (52) और साबित व बरहक़ है (53) बड़ा कारसाज़ (54) बड़ी क़ुव्वत वाला (55) और मज़बूत इक़्तिदार वाला है (56) (नेकूकारों का) मददगार (57) तमाम ख़ूबियों का मालिक (58) ख़ूब शुमार करने वाला और घेरने वाला है (59) पहली बार पैदा करने वाला (60) और दोबारा ज़िंदा करने वाला (61) ज़िंदगी बख़्शने वाला (62) और मौत देने वाला (63) हमेशा ज़िंदा रहने वाला (64) और ख़ूब थामने वाला है (65) ऐसा ग़नी व बेनियाज़ है कि किसी चीज़ का मुहताज नहीं (66) बुज़ुर्गी वाला (67) अपनी ज़ात व सिफ़ात में यकता (68) बड़ा

बेनियाज़ (69) और बड़ी क़ुदरत वाला है (70) क़ुदरते कामिला रखने वाला (71) (नेकूकारों को) आगे करने वाला (72) (और बदकारों को) पीछे करने वाला (73) सबसे पहला (74) सबसे पिछला (75) ख़ूब नुमायां (76) और निहायत पोशीदा है (77) सब पर हुकूमत करने वाला (78) बहुत बुलन्द व बरतर (79) और नेक सुलूक करने वाला (80) तौबा क़बूल करने वाला (81) बदला लेने वाला (82) बहुत माफ़ करने वाला (83) और ख़ूब शफ़क़त करने वाला (84) सारे जहां का मालिक (85) अज़्मत व जलाल और इनाम व इकराम वाला है (86) अदल व इंसाफ़ करने वाला है (87) (क़ियामत के दिन) सबको जमा करने वाला है (88) बड़ा बेनियाज़ (89) (और बन्दों को) बेनियाज़ करने वाला है (90) (हलाकत के असबाब को) रोकने वाला (91) नुक़्सान पहुंचाने वाला (92) और नफ़ा पहुंचाने वाला (93) निहायत रौशन और सारे जहान को रौशन करने वाला है (94) हिदायत देने वाला (95) बग़ैर नमूना के पैदा करने वाला (96) और हमेशा बाक़ी रहने वाला है (97) तमाम चीज़ों का वारिस व मालिक है (98) सबका राहनुमा और सबको राहेरास्त दिखाने वाला है (99) बहुत बरदाश्त करने वाला और बड़ा बुर्दबार है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, अब्वाबुद-दावात 2 : 189)

नोट : *अगर कोई अरबी अस्मा-ए-हुस्ना पढ़ने से आजिज़ हो तो उनका तर्जुमा समझकर पढ़ लिया करे, और अल्लाह तआला को उन औसाफ़ के साथ मुत्तसिफ़ जाने और माने। इंशाअल्लाह उसको भी अस्मा-ए-हुस्ना के फ़वाइद व बरकात हासिल होंगे।*

अस्मा-ए-हुस्ना के मानी और ख़्वास (ख़ासियतें)

तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत में जो अस्मा-ए-हुस्ना और सिफ़ाते ख़ुदावंदी मज़्कूर हैं, और अल्लाह तआला के जिन नामों के बारे में रसूले अकरम सल्ल० का इरशाद है कि : जिसने इन मुबारक नामों को याद किया वह जन्नत में पहुंच गया, उनमें से हर एक के मानी और ख़्वास अलग-अलग लिखता हूं, ताकि आप उन नामों के फ़वाइद व बरकत जानकर उनका ख़ूब विर्द करें और जन्नत में पहुंच जाएं।

☆ ☆ ☆

तिर्मिज़ी शरीफ़ में निन्नानवे (99) नाम हैं लेकिन मिश्कात शरीफ़ के बाज़ नुस्ख़ों में अल-वाहिदु, और बाज़ नुस्ख़ों में अल-अ-ह-दु है इसलिए मैंने अल-अ-ह-दु के मानी और उसके ख़्वास भी लिख दिए हैं ताकि पूरे सौ (100) नाम हो जाएं। अल्लाह तआला हम सबको अपने इन नामों के फ़वाइद व बरकात से नवाज़े। आमीन या रब्बल आलमीन!

☆ ☆ ☆

नोट : *अस्मा-ए-हुस्ना के फ़वाइद व बरकात से वही हज़रात पूरे तौर पर फ़ायदा उठाते हैं जो इन अस्मा के मानी जानते हैं, अल्लाह तआला को उन औसाफ़ के साथ मुत्तसिफ़ जानते और मानते हैं, और ज़ात व सिफ़ात में अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते। इसी लिए तमाम अस्मा-ए-हुस्ना के मानी लिखे गए हैं ताकि आप इन अस्मा-ए-हुस्ना के मानी जानकर अल्लाह तआला को उन औसाफ़ के साथ मुत्तसिफ़ मानें और अपना ईमान मज़बूत करें। और शिर्क जली व ख़फ़ी से अपने ईमान को पाक रखें।*

'अल्लाह' के मानी और इसके ख़्वास

1. अल्लाहु जल-ल जलालुहू اَللّٰهُ جَلَّ جَلَالُهٗ

यह ज़ाती नाम है, माबूद बरहक़, ख़ुदा तआला, माबूद हक़ीक़ी

ख़्वास दस हैं :

1. रोज़ाना एक हज़ार (1000) बार पढ़ने से कमाले यक़ीन नसीब होता है।
2. जुमा के दिन नमाज़े जुमा से पहले पाक व साफ़ होकर ख़िल्वत में पढ़ने से मक़्सूद आसान हो जाता है चाहे कैसा ही मुश्किल हो।
3. जिस मरीज़ के इलाज से अतिब्बा (डॉक्टर) आजिज़ आ गए हों उस पर पढ़ा जाए तो अच्छा हो जाता है बशर्ते कि मौत का वक़्त न आ गया हो।
4. हर नमाज़ के बाद सौ (100) बार पढ़ने वाला साहिबे बातिन व साहिबे कश्फ़ हो जाता है।
5. छियासठ (66) बार लिखकर धोकर मरीज़ को पिलाने से अल्लाह तआला शिफ़ा अता फ़रमाता है, चाहे आसेब का असर क्यों न हो।
6. आसेबज़दा के लिए किसी बर्तन पर "अल्लाह" उस बर्तन की गुंजाइश के बक़द्र लिखकर उसका पानी आसेबज़दा पर छिड़कें तो उस पर मुसल्लत शैतान जल जाता है।
7. जो शख़्स "अल्लाह" का मुहब्बते इलाही की वजह से ज़िक्र करेगा और शक नहीं करेगा वह सिद्दीक़ीन में से होगा।
8. जो हर नमाज़ के बाद सात (7) बार ﴿هُوَ اللّٰهُ الرَّحِيْمُ﴾ "हुवल्लाहुर्रहीम" पढ़ता रहेगा उसका ईमान सल्ब नहीं होगा और वह शैतान के शर से महफ़ूज़ रहेगा।

9. जो शख़्स एक हज़ार (1000) बार ﴿يَا اَللّٰهُ يَا هُوَ﴾ "या अल्लाहु या हु-व" पढ़ेगा उसके दिल में ईमान और मारफ़त को मज़बूत कर दिया जाएगा।

10. जो शख़्स जुमा के दिन अस्र की नमाज़ पढ़कर क़िब्ला रुख़ बैठकर मग़रिब तक "या अल्लाहु या रहमानु" पढ़ता रहेगा, फिर अल्लाह तआला से जो चीज़ मांगेगा अल्लाह तआला उसको अता फ़रमाएगा।

'अर-रहमान' के मानी और इसके ख़्वास

2. अर-रहमानु जल-ल जलालुहू اَلرَّحْمٰنُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बड़ा मेहरबान, ज़बरदस्त रहमत वाला

यह सिर्फ़ अल्लाह तआला का वस्फ़ ख़ास है, ग़ैरुल्लाह के लिए यह वस्फ़ जाइज़ नहीं

ख़्वास छः हैं :

1. हर नमाज़ के बाद सौ (100) बार यह इस्मे मुबारक पढ़ने से क़ल्ब की ग़फ़लत और निस्यान दूर हो जाता है। और दुनिया के मामलात में मदद की जाती है।

2. इस इस्म को कसरत से पढ़ने वाला हर अम्रे मकरूह से महफ़ूज़ रहता है।

3. इसे लिखकर और धोकर पिलाने से गर्म बुख़ार से शिफ़ा नसीब होती है।

4. जो कोई इस इस्म को सुबह की नमाज़ के बाद दो सौ अठानवे (298) बार पढ़ेगा अल्लाह तआला उस पर बहुत रहम फ़रमाएगा।

5. जो कोई इक्तालीस (41) दिन तक रोज़ाना इक्तालीस (41) बार

﴿يَـارَحْـمٰـنَ الـدُّنْيَـا والْآخِـرَةِ وَيَـا رَحِيْمَهُمَـا﴾ "या रहमानदुदुनिया वल आख़िरति व या रहीमहुमा" पढ़ेगा उसकी ज़रूरी हाजत पूरी हो जाएगी।

6. जो किसी जाबिर हाकिम के पास जाते वक़्त ﴿يَـا رَحْـمٰـنُ يَـا رَحِيْمُ﴾ "या रहमानु या रहीमु" पढ़ता है अल्लाह तआला उसे ज़ालिम के शर से बचा लेते हैं और ख़ैर अता फ़रमाते हैं।

'अर-रहीमु' के मानी और उसके ख़्वास

3. अर-रहीमु जल-ल जलालुहू اَلرَّحِيْمُ جَلَّ جَلَالُهٗ

निहायत रहम वाला

ख़्वास दस हैं :

1. जो हर रोज़ सौ (100) बार पढ़ने का मामूल बनाए उसे अल्लाह तआला की रहमत नसीब होती है और लोगों के क़लूब उसके लिए नर्म हो जाते हैं

2. जो इसका कसरत से विर्द करता है वह मुस्तजाबुद-दावात बन जाता है और ज़माने के मसाइब से महफ़ूज़ रहता है।

3. जो किसी जाबिर हुक्मरां के पास जाते वक़्त ﴿يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ﴾ "या रहमानु या रहीमु" पढ़ता जाए अल्लाह तआला उसे ज़ालिम के शर से बचा लेते हैं और ख़ैर अता फ़रमाते हैं।

4. जो कोई हर रोज़ यह इस्म पांच सौ (500) बार पढ़ेगा वह दौलत पाएगा और अल्लाह की मख़्लूक़ उस पर मेहरबान व शफ़ीक़ होगी।

5. जो इस इस्म को सुबह की नमाज़ के बाद सौ (100) बार पढ़े उस पर अल्लाह तआला की तमाम मख़्लूक़ मेहरबान और शफ़क़त करेगी।

6. जो इसे सुबह की नमाज़ के बाद पांच सौ पचपन (555) बार पढ़ता है वह हर हाजत से ग़नी रहेगा।

7. जो ﴿يَا رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَرَحِيْمَهَا﴾ "या रहमानद्दुनिया व रहीममा" इक्तालीस (41) रोज़ तक पढ़े उसकी हाजत पूरी होगी।

8. जो शख़्स इसे रोज़ाना सौ (100) बार पढ़े उसके दिल में रिक़्क़त और शफ़क़त पैदा हो जाती है यानी यह दिल की क़सावत (सख़्ती) का इलाज है।

9. जिस किसी को किसी नागवार काम का अंदेशा हो वह ﴿اَلرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ﴾ "अर्रहमानुर्रहीम" को कसरत से पढ़े, इंशाअल्लाह महफ़ूज़ रहेगा।

10. अगर इसे लिखकर पानी से धोकर पानी किसी दरख़्त की जड़ में डाल दिया जाए तो फल में बरकत होती है।

'अल-मलिकु' के मानी और उसके ख़्वास

4. अल-मलिकु जल-ल जलालुहू اَلْمَلِکُ جَلَّ جَلَالُهٗ

सारे जहान का बादशाह

ख़्वास सात हैं :

1. जो शख़्स इस इस्म को ज़वाल के वक़्त एक सौ बीस (120) बार पढ़े अल्लाह तआला उसको सफ़ाई क़ल्ब और ग़िना अता फ़रमाता है चाहे ग़िना ज़ाहिरी हो या बातिनी।

2. जो शख़्स इस इस्म को पढ़ता है उसका नफ़्स उसकी इताअत करता है और उसे इज़्ज़त व हुरमत हासिल होती है।

3. जो सूरज निकलने के वक़्त तीन हज़ार (3000) बार यह इस्म

मुबारक पढ़ेगा वह जो मुराद मांगेगा हासिल हो जाएगी।

4. माल व मुल्क वाला आदमी (हुक्मरां या बड़ा ओहदेदार) अगर यह इस्म (اَلْقُدُّوْس) "अल-क़ुद्दूस" के साथ मिलाकर पढ़ेगा तो उसका माल व मुल्क क़ायम रहेगा।

5. जो इस इस्म को फ़ज्र के बाद एक सौ बीस (120) बार पढ़ने का मामूल बनाए, अल्लाह तआला उसे अपनी इनायत के ज़रिये ग़नी फ़रमा देता है।

6. अगर हुक्मरां उसे पढ़ने का मामूल बनाएं तो बड़े बड़े फ़राअना (सरकश व मुतकब्बिर लोग) उनके मुतीअ व फ़रमांबरदार बन जाएं।

7. जो कोई रोज़ाना सुबह की नमाज़ के बाद ﴿يَا مَلِكُ﴾ "या मलिकु" कसरत से पढ़ा करेगा, अल्लाह तआला उसे ग़नी फ़रमा देगा।

'अल-क़ुद्दूस' के मानी और इसके ख़्वास

5. अल-क़ुद्दूस जल-ल जलालुहू اَلْقُدُّوْسُ جَلَّ جَلَالُهٗ

निहायत पाक

ख़्वास नौ हैं :

1. जो कोई हज़ार (1000) बार इस इस्म को पढ़ेगा सबसे बेपरवाह होगा (यहां तक कि नाजायज़ शहवात से भी)।

2. जो शख़्स दुश्मन से बचने के लिए भागते वक़्त इसको कसरत से पढ़ेगा वह महफ़ूज़ रहेगा।

3. जो सफ़र में उसकी मुदावमत करेगा वह कभी नहीं थकेगा।

4. जो इसको तीन सौ उन्नीस (319) बार शीरनी पर पढ़कर दुश्मन को खिलाए तो दुश्मन मेहरबान हो जाए।

5. जो ज़वाल के बाद एक सौ सत्तर (170) बार यह इस्म मुबारक पढ़े उसका दिल मुनव्वर होगा और रूहानी इमराज़ से पाक हो जाएग।

6. जो कोई चालीस (40) दिन तक ख़िल्वत में एक हज़ार (1000) बार यह इस्म मुबारक पढ़े उसका मक़सद हासिल होगा, और दुनिया में उसकी क़ुव्वते तासीर ज़ाहिर हो जाएगी।

7. अगर कोई इसको रात के आख़िरी हिस्से में एक हज़ार (1000) बार पढ़े तो बीमारी और बला उसके जिस्म से दूर हो जाती है।

8. नमाज़े जुमा के बाद एक सौ पचास (150) बार ﴿سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ﴾ "सुब्बूहुन क़ुद्दूसुन रब्बुल मलाइकति वर्रूह" कहकर फिर उसको एक रोटी पर लिखकर जो शख़्स खाए वह तमाम आफ़ात से महफ़ूज़ रहेगा और उसे इबादत की तौफ़ीक़ हासिल होगी।

9. जो जुमा की नमाज़ के बाद ﴿سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ﴾ "सुब्बूहुन कुद्दूसुन" रोटी के टुकड़े पर लिखकर खाता रहे वह फ़रिश्ता सिफ़त हो जाए।

'अस्सलामु' के मानी और इसके ख़्वास

6. अस्सलामु जल-ल जलालुहू اَلسَّلَامُ جَلَّ جَلَالُهٗ

सब उयूब व आफ़ात से सालिम, सब नक़ाइस और कमज़ोरियों से पाक, सलामत व बेऐब ज़ात

ख़्वास दस हैं :

1. जो हमेशा सुबह की नमाज़ के बाद हज़ार (1000) बार इस इस्म को पढ़ेगा, उसका इल्म ज़्यादा होगा।

2. अगर कोई इस इस्म को एक सौ इकत्तीस (131) बार या एक सौ

इक्सठ (161) बार पढ़कर बीमार पर दम करे तो बीमार सेहत पाए।

3. जो इस इस्म को कसरत से पढ़े या लिखकर पास रखे, वह दुश्मन से बेख़ौफ़ रहेगा।

4. बीमार या ख़ाइफ़ अगर एक सौ ग्यारह (111) बार पढ़कर दम करे तो बीमारी और ख़ौफ़ से महफ़ूज़ रहेगा।

5. यह इस्म मुबारक छः सौ नब्बे (690) बार शीरनी पर पढ़कर दुश्मन को खिलाए तो दुश्मन मेहरबान हो जाए।

6. अगर कोई एक सौ इक्कीस (121) बार यह इस्म और ﴿سَلَامٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ الرَّحِيْمٍ﴾ "सलामुन क़ौलम मिर्रब्बिर्रहीम" किसी मरीज़ पर पढ़े तो मरीज़ शिफ़ा पाएगा। या कम से कम मर्ज़ में तख़्फ़ीफ़ हो जाएगी।

7. अगर कोई शख़्स मरीज़ के पास उसके सरहाने बैठकर दोनों हाथ उठाकर यह इस्म एक सौ छत्तीस (136) बार इतनी बुलन्द आवाज़ से पढ़े कि मरीज़ सुन ले तो इंशाअल्लाह उसको शिफ़ा होगी।

8. हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पंद्रह (15) मर्तबा ﴿اَللّٰهُمَّ يَا سَلَامُ سَلِّمْ﴾ "अल्लाहुम-म या सलामु सल्लिम" पढ़ना हर तरह की सलामती के लिए मुफ़ीद है।

9. जो कोई कसरत से इस इस्म को पढ़ता रहेगा इंशाअल्लाह तमाम आफ़तों से महफ़ूज़ रहेगा।

10. जो कोई एक सौ पंद्रह (115) मर्तबा यह इस्म पढ़कर बीमार पर दम करेगा तो अल्लाह तआला उसको सेहत व शिफ़ा अता फ़रमाएगा।

'अल-मोमिनू' के मानी और इसके ख़्वास

7. अल-मोमिनू जल-ल जलालुहू اَلْمُؤْمِنُ جَلَّ جَلَالُهٗ

अम्न व अमान देने वाला

ख़्वास नौ हैं :

1. जो कसरत से इसका विर्द करे उसका ईमान क़ायम रहे और मख़्लूक़ उसकी मुतीअ व मुअ्तक़िद हो जाए।
2. जो कोई रोज़ाना तीन (3) बार यह इस्म मुबारक पढ़ने का मालूम रखे उसको कोई ख़ौफ़ नहीं होगा।
3. जो कोई एक सौ छत्तीस (136) बार यह इस्म मुबारक पढ़ा करे तो ज़ालिमों के ज़ुल्म और जुमला आफ़ात से महफ़ूज़ रहेगा।
4. ख़ौफ़ज़दा आदमी अगर फ़र्ज़ों के बाद छत्तीस (36) बार इस इस्म का विर्द करे तो उसकी जान व माल महफ़ूज़ रहेंगे।
5. जिस पर रौब और ख़ौफ़ तारी हो वह ﴿يَا سَلَامُ يَا مُؤْمِنُ﴾ "या सलामु या मोअ्मिनु" का विर्द रखे, ख़ुसूसन मुसाफ़िर अगर इसका विर्द करे तो अल्लाह तआला की तरफ़ से अम्न व सलामती नसीब हो।
6. जो शख़्स किसी ख़ौफ़ के वक़्त छः सौ तीस (630) बार इस इस्म को पढ़ेगा तो इंशाअल्लाहुल अज़ीज़ हर तरह के ख़ौफ़ व नुक़्सान से महफ़ूज़ रहेगा।
7. जो इस इस्म को एक सौ पंद्रह (115) बार पढ़कर अपने ऊपर दम करेगा तो इंशाअल्लाह हर तरह के ख़ौफ़ और नुक़्सान से महफ़ूज़ रहेगा।
8. जो कोई किसी ख़ौफ़ के वक़्त दो सौ तीस (230) बार इस इस्म को पढ़ेगा तो इंशाअल्लाह हर तरह के ख़ौफ़ और नुक़्सान से महफ़ूज़ रहेगा।
9. जो शख़्स इस इस्म को पढ़े या लिखकर पास रखे तो उसका ज़ाहिर व बातिन अल्लाह तआला की अमान में रहेगा।

'अल-मुहैमिनु' के मानी और इसके ख़्वास

8. अल-मुहैमिनु जल-ल जलालुहू اَلْمُهَيْمِنُ جَلَّ جَلَالُهٗ

सबकी निगाहबानी करने वाला

ख़्वास तीन हैं :

1. जो कोई ग़ुस्ल करे फिर ख़िल्वत में तवज्जोह के साथ नमाज़ पढ़े और सौ (100) बार यह इस्म पढ़े, उसके दिल में नूर पैदा होगा और उसकी मुराद पूरी हो जाएगी और आली हिम्मत हो जाएगा।
2. जो कोई इसे उन्तीस (29) बार पढ़ेगा उसको कोई ग़म न होगा।
3. जो यह इस्म हमेशा पढ़ता रहेगा वह तमाम बलाओं से महफ़ूज़ रहेगा।

'अल-अज़ीज़ु' के मानी और इसके ख़्वास

9. अल-अज़ीज़ु जल-ल जलालुहू اَلْعَزِيْزُ جَلَّ جَلَالُهٗ

ऐसा ग़ालिब व ताक़तवर जो किसी से मग़लूब न हो

ख़्वास दस हैं :

1. जो शख़्स चालीस (40) दिन तक चालीस (40) मर्तबा इस इस्म को पढ़ेगा अल्लाह तआला उसको मुअज़्ज़िज़ व मुस्तग़नी बना देंगे।
2. जो शख़्स नमाज़े फ़ज्र के बाद इक्तालीस (41) मर्तबा पढ़ता रहे वह इंशाअल्लाह किसी का मुहताज न हो और ज़िल्लत के बाद इज़्ज़त पाए।

3. अगर लोग रात के आख़िरी हिस्से में जमा होकर दो-दो हज़ार बार यह इस्म मुबारक पढ़ें तो रहमत की बारिश होगी।

4. जो ﴿يَا عَزِيزُ مِنْ كُلِّ عَزِيزٍ بِحَقِّ يَا عَزِيزُ﴾ "या अज़ीज़ु मिन कुल्लि अज़ीज़िन बिहक़्क़ि या अज़ीज़ु" पढ़े तो तमाम मख़्लूक़ में अज़ीज़ हो।

5. जो इस इस्म को चौरानवे (94) दिन तक चौरानवे (94) मर्तबा पढ़ लिया करे वह मुअज़्ज़िज़ व कामरान रहे।

6. जो इसको चार सौ ग्यारह (411) दिन तक दो सौ (200) बार अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ पढ़ेगा उसके सब काम दुरुसत हो जाएंगे।

7. जो इक्तालीस (41) बार सुबह को रोज़ हाकिम के पास जाने के वक़्त ﴿يَا عَزِيزُ﴾ "या अज़ीज़ु" पढ़ लिया करे हाकिम मेहरबान रहे।

8. जो इशा के बाद दो सौ (200) बार ﴿يَا عَزِيزُ يَا عَزِيزُ مِنْ كُلِّ عَزِيزٍ أَدْعُوْ بِلُطْفِكَ يَا عَزِيزُ﴾ "या अज़ीज़ु या अज़ीज़ु मिन कुल्लि अज़ीज़िन अदऊ बिलुत्फ़ि-क या अज़ीज़ु" पढ़ लिया करे तो अल्लाह तआला की रहमत उसकी तरफ़ मुतवज्जेह हो जाए।

9. जो मुतवातिर सात (7) दिन तक एक हज़ार बार यह इस्म मुबारक पढ़े उसका दुश्मन हलाक हो जाए।

10. जो किसी (दुश्मन के) लश्कर की तरफ़ हाथ का इशारा करके सत्तर (70) बार यह इस्म मुबारक पढ़े वह लश्कर अल्लाह तआला के हुक्म से शिकस्त खा जाए।

'अल-जब्बारु' के मानी और इसके ख़्वास

10 अल-जब्बारु जल-ल जलालुहू اَلْجَبَّارُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बिगड़े हुए कामों और हालात को दुरुस्त करने वाला

ख़्वास चार हैं :

1. जो शख़्स रोज़ाना सुबह व शाम दो सौ छब्बीस (226) मर्तबा इस इस्म को पढ़ेगा तो इंशाअल्लाह ज़ालिमों के ज़ुल्म व क़हर से महफ़ूज़ रहेगा।

2. अगर कोई बादशाह उसको पढ़ा करे तो दूसरा बादशाह उस पर ग़ालिब न होगा।

3. जो कोई इस इस्म को हमेशा पढ़ता रहे तो वह मख़्लूक़ की ग़ीबत और बदगोई से महफ़ूज़ रहता है और अल्लाह तआला उसकी हर ज़ालिम व जाबिर से हिफ़ाज़त फ़रमाता है।

4. इस इस्म के साथ "ज़ुलजलालि वल इकराम" मिलाकर पढ़ना भी हिफ़ाज़त के लिए बहुत मुफ़ीद है।

‘अल-मुतकब्बिरु’ के मानी और इसके ख़्वास

11. अल-मुतकब्बिरु जल-ल जलालुहू

اَلْمُتَكَبِّرُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बड़ी अज़्मत वाला

ख़्वास सात हैं :

1. जो बग़ैर थके इसे कसरत से पढ़ता रहे उसे बुलन्द क़द्र व मंज़िलत नसीब होती है और कोई उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता।
2. किसी को बेहयाई से रोकने के लिए इसका दस (10) बार उस पर पढ़ना बहुत मुफ़ीद है।
3. जो कोई हमबिस्तरी से पहले दस (10) बार यह इस्म मुबारक पढ़े तो अल्लाह जल-ल शानुहू उसे परहेज़गार और नेक फ़रज़न्द अता फ़रमाएगा।
4. जो इसे हर काम के आग़ाज़ में कसरत से पढ़ेगा उसके काम में कोई रुकावट पेश नहीं आएगी।
5. जो इसको इक्कीस (21) बार पढ़ेगा वह इंशाअल्लाह ख़्वाब में नहीं डरेगा।
6. जो इसको छः सो बासठ (662) दिन तक छः सौ बासठ (662) मर्तबा रोज़ पढ़ेगा, साहिबे सौलत व सियासत होगा।
7. जो दुश्मन से डरता हो वह इस इस्म की मुदावमत करे, दुश्मन बदगोई से बाज़ आ जाएगा।

‘अल-ख़ालिक़ु’ के मानी और इसके ख़्वास

12. अल-ख़ालिक़ु जल-ल जलालुहू اَلْخَالِقُ جَلَّ جَلَالُهٗ

पैदा करने वाला

ख़्वास छः हैं :

1. जो शख़्स आधी रात के बाद एक घंटा या इससे ज़्यादा इस इस्म मुबारक का विर्द करेगा अल्लाह तआला उसके दिल और चेहर को मुनव्वर फ़रमा देगा।
2. जिसका माल या बेटा गुम हो गया हो अगर वह पांच हज़ार (5000) बार इसका विर्द करे तो गुमशुदा वापस आ जाएगा।
3. जो सात (7) रोज़ तक मुतवातिर इसको सौ (100) बार पढ़े तमाम आफ़ात से सालिम रहे।
4. जो इसे हज़ार (1000) बार पढ़ा करे उसे औलाद नरीना नसीब होगी।
5. अगर कोई शख़्स हमेशा ﴿اَلْخَالِقُ﴾ “अल-ख़ालिक़ु” पढ़ता रहे तो अल्लाह तआला एक फ़रिश्ता पैदा कर देते हैं जो उसकी तरफ़ से इबादत करता है और उसका चेहरा मुनव्वर रहता है।
6. जो कोई लड़ाई में तीन सौ (300) बार इसको पढ़ेगा, उसका दुश्मन मग़लूब होगा।

'अल-बारिउ' के मानी और इसके ख़्वास

13. अल-बारिउ जल-ल जलालुहू اَلْبَارِئُ جَلَّ جَلَالُهٗ

जान डालने वाला

ख़्वास सात हैं :

1. अगर तबीब इस इस्म को पाबन्दी से हमेशा पढ़े तो उसके हाथ में शिफ़ा होगी।
2. जो कोई हफ़्ता के दिन इसको सौ (100) बार पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसको जन्नतुल फ़िरदौस की तरफ़ ले जाएगा।
3. जो कोई इस इस्म को दो सौ चवालीस (244) बार पढ़े तो उसकी जो भी मुराद होगी वह पूरी होगी।
4. जो कोई इस इस्म की मुदावमत करेगा, हक़ तआला उसके लिए एक मूनिस पैदा करेगा।
5. अगर बांझ औरत सात (7) रोज़ रोज़े रखे और पानी से इफ़्तार करने के बाद इक्कीस (21) मर्तबा ﴿اَلْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ﴾ "अल-बारिउल मुसव्विरु" पढ़े तो इंशाअल्लाह औलाद नरीना नसीब हो।
6. इसका बकसरत ज़िक्र करने से सनाए अजीबा का ईजाद आसान हो जाता है।
7. जो शख़्स सात (7) दिन तक रोज़ाना इसको सौ (100) बार पढ़ेगा। अल्लाह तआला उसे अमराज़ से शिफ़ा और आफ़ात से सलामती अता फ़रमाएगा।

‘अल-मुसव्विरु’ के मानी और इसके ख़्वास

14. अल-मुसव्विरु जल-ल जलालुहू اَلْمُصَوِّرُ جَلَّ جَلَالُهٗ

सूरत बनाने वाला

ख़्वास छः हैं :

1. अगर कोई शख़्स सात (7) दिन तक रोज़ा रखे और गुरूब आफ़ताब के बाद इफ़्तार से पहले इक्कीस (21) बार यह इस्म मुबारक पढ़कर पानी पर दम करे और पानी बांझ औरत को पिलाए तो इंशाअल्लाह उसका बांझपन दूर हो जाएगा।
2. जो अपने बिस्तर पर आकर सात (7) बार यह इस्म पढ़े, फिर हमबिस्तरी करे तो अल्लाह तआला उसे नेक औलाद अता फ़रमाएगा।
3. इसका बकसरत ज़िक्र करने से सनाए अजीबा का ईजाद हो जाता है।
4. जो इसका बकसरत ज़िक्र करे उसके लिए मुश्किल काम आसान हो जाते हैं।
5. जो कोई वुज़ू करने के बाद शहादत की उंगली से इसको अपनी पेशानी पर लिखे तो जिससे मुलाक़ात करे वह उसका दोस्त हो जाए।
6. जो इसे पानी पर पढ़कर दम करे और पी ले तो आला मर्तबा पाए।

‘अल-ग़फ़्फ़ारु’ के मानी और इसके ख़्वास

15. अल-ग़फ़्फ़ारु ज़ल-ल जलालुहू اَلْغَفَّارُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बहुत माफ़ करने वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. ज़ो कोई ﴿يَاغَفَّارُ﴾ “या ग़फ़्फ़ारु” की मुदावमत करेगा उसके तमाम गुनाह बख़्श दिए जाएंगे और उसके नफ़्स की बुरी ख़्वाहिशात दूर होंगी।

2. जो ﴿يَاغَفَّارُ! اِغْفِرْلِىْ ذُنُوْبِي﴾ “या ग़फ़्फ़ारु! इग़्फ़िरली ज़ुनूबी” जुमा की नमाज़ के बाद सौ (100) बार पढ़ेगा अल्लाह तआला उसको बख़्श देगा और आख़िरत में लुत्फ़ व मग़फ़िरत का उम्मीदवार बनाएगा।

3. जो शख़्स नमाज़े अस्र के बाद रोज़ाना ﴿يَاغَفَّارُ! اِغْفِرْلِىْ﴾ “या ग़फ़्फ़ारु! इग़्फ़िरली” पढ़ेगा अल्लाह तआला उसको इंशाअल्लाह बख़्शे हुए लोगों के ज़ुमरा में दाख़िल करेगा।

4. जो इस इस्म को जुमा के बाद सौ (100) बार पढ़ेगा तो मग़फ़िरत के आसार पैदा होंगे, तंगी दफ़ा होगी और बेगुमान रिज़्क़ मिलेगा।

5. गुस्सा करने वालों पर यह इस्म पढ़ा जाए तो उनका गुस्सा ज़ाइल हो जाता है।

‘अल-क़ह्हारु’ के मानी और इसके ख़्वास

16. अल-क़ह्हारु जल-ल जलालुहू اَلْقَهَّارُ جَلَّ جَلَالُهٗ

सबको क़ाबू में रखने वाला, वह ज़ात जो सब पर ग़ालिब हो और उसके ग़लबे को कोई ताक़त न रोक सके

ख़्वास नौ हैं :

1. जिस शख़्स की कोई हाजत हो वह अपने घर या मस्जिद में सर नंगा करके हाथ उठाकर सौ (100) बार ﴿يَاقَهَّارُ﴾ “या क़ह्हारु” कहे, इंशाअल्लाह उसकी हाजत पूरी हो जाएगी।

2. जो इशराक़ की नमाज़ के बाद सज्दा करके सात (7) बार ﴿يَاقَهَّارُ﴾ “या क़ह्हारु” पढ़ेगा अल्लाह तआला उसे ग़नी फ़रमा देगा।

3. जिस शख़्स को दुश्मनों से ख़तरा हो वह सूरज निकलते वक़्त और रात के आख़िरी हिस्से में दुश्मनों की हलाकत के लिए सौ (100) बार यह पढ़े: ﴿يَاجَبَّارُ يَا قَهَّارُ يَا ذَا الْبَطْشِ الشَّدِيْدِ﴾ “या जब्बारु या क़ह्हारु या ज़ल बतशिश शदीदि” फिर कहे : ﴿خُذْ حَقِّيْ مِمَّنْ ظَلَمَنِيْ وَعَدَاعَلَيَّ﴾ “ख़ुज़ हक़्क़ी मिम्मन ज़-ल-म-नी व अदा अलय-य”।

4. बकसरत इसका ज़िक्र करने से दुनिया की मुहब्बत और मासिवा अल्लाह की अज़्मत दिल से जाती रहे, और दुश्मनों पर ग़लबा हो।

5. अगर चीनी के बर्तन पर लिखकर ऐसे शख़्स को पिलाया जाए जो सहर की वजह से औरत पर क़ादिर न हो, सहर दफ़ा हो।

6. जो शख़्स दुनिया की मुहब्बत में गिरफ़्तार हो वह कसरत से इस इस्म को पढ़े। इंशाअल्लाह दुनिया की मुहब्बत जाती रहेगी और अल्लाह तआला की मुहब्बत पैदा हो जाएगी और उसका ख़ात्मा बिलख़ैर होगा।

7. जो कोई किसी ज़ालिम से डरता हो वह इस इस्म को फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तीन सौ छः (306) बार पढ़ा करे, अल्लाह तआला उसे अम्न व अमान में रखेगा और दुश्मन पर ग़ालिब होगा, हाकिम मेहरबान होगा और ख़ौफ़ दिल से जाता रहेगा।

8. जो किसी मुश्किल के वास्ते इसको सौ (100) बार पढ़े तो मुश्किल हल हो।

9. दुश्मन को मग़लूब करने के लिए फ़र्ज़ व सुन्नत के दर्मियान सौ (100) बार इस इस्म का पढ़ना बहुत मुफ़ीद है।

'अल-वह्हाबु' के मानी और इसके ख़्वास

17. अल-वह्हाबु जल-ल जलालुहू اَلْوَهَّابُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बड़ा फ़य्याज़, बहुत देने वाला

ख़्वास बारह हैं :

1. जो सात (7) बार इसको रोज़ पढ़ेगा, मुस्तजाबुद-दावात होगा।

2. जो इस इस्म को इशा की नमाज़ के बाद चौदह सौ चौदह (1414) बार पढ़ेगा उसे रिज़्क़ की फ़राख़ी नसीब होगी।

3. जो कोई फ़क्र व फ़ाक़ा से परेशान हो वह इस इस्म की मुदावमत करे तो अल्लाह तआला उसे ऐसी राहत अता फ़रमाएगा कि वह हैरान रह जाएगा।

4. जो चाश्त की नमाज़ के बाद सज्दा की आयत पढ़कर सज्दे में सात (7) बार ﴿اَلْوَهَّابُ﴾ "अल-वह्हाबु" पढ़ेगा, मख़्लूक़ से बेपरवाह हो जाएगा।

5. जो कोई रिज़्क़ की फ़राख़ी चाहता हो, चाश्त के वक़्त चार रकअत

नमाज़ पढ़े, फिर सलाम के बाद सज्दे में जाकर ﴿اَلْوَهَّابُ﴾ "अल-वह्हाबु" एक सौ चार (104) बार और अगर फ़ुर्सत न हो तो पचास (50) बार पढ़े, मालदार हो जाएगा।

6. कोई भी हाजत पेश आए तो आधी रात के वक़्त घर या मस्जिद के सेहन में तीन (3) बार सज्दा करके हाथ उठाकर सौ (100) बार इसको पढ़े– यह अमल तीन (3) या सात (7) रात करे। इंशाअल्लाहुल अज़ीज़ हाजत पूरी हो जाएगी।

7. जो इसे इशा के बाद साढ़े ग्यारह सौ (1150) बार पढ़े वह मक़रूज़ न रहेगा।

8. जो शख़्स फ़क्र व फ़ाक़ा में गिरफ़्तार हो वह कसरत से इस इस्म को पढ़ा करे या लिखकर अपने पास रखे या चाश्त की नमाज़ के आख़िरी सज्दे में चालीस (40) बार पढ़ा करे तो अल्लाह तआला उसे फ़क्र व फ़ाक़ा से इंशाअल्लाह हैरतअंगेज़ तरीक़े पर नजात दे देंगे।

9. हिफ़ाज़ते ईमान के लिए हर नमाज़ के बाद सात (7) बार यह आयत पढ़ना मुजर्रब है : ﴿رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ﴾ "रब्बना ला तुज़िग़ क़ुलूबना बअ़-द इज़ हदैतना व हब-लना मिल्लदुन-क रह-मतन इन्न-क अन्तल वह्हाब०" (सूरा आले इमरान, आयत 8)

10. बरकत के लिए इस इस्म को ﴿اَلْكَرِيْمُ ذُو الطَّوْلِ﴾ "अल-करीमु ज़ुत्तौलि" के साथ मिलाकर पढ़ना मुफ़ीद है।

11. हर चीज़ में बरकत के लिए इस इस्म को ﴿اَلْكَافِيْ﴾ "अल-काफ़ी" के साथ मिलाकर पढ़ना मुफ़ीद है।

12. जब कोई मुश्किल पेश आए किसी मैदान में जाकर दुआ की तरह हाथ उठाकर सौ (100) बार ﴿يَا وَهَّابُ﴾ "या वह्हाबु" पढ़े, इंशाअल्लाह मुश्किल आसान हो जाएगी।

'अर-रज़्ज़ाक़ु' के मानी और इसके ख़्वास

18. अर-रज़्ज़ाक़ु जल-ल जलालुहू اَلرَّزَّاقُ جَلَّ جَلَالُهٗ

ख़ूब रोज़ी पहुंचाने वाला

ख़्वास नौ हैं :

1. जो इस इस्म को नहार मुंह बीस (20) मर्तबा पढ़ने का मामूल बनाए तो अल्लाह तआला उसे ऐसा ज़ेहन अता फ़रमाता है जो बारीकियों और मुश्किलात को समझ लेता है।

2. जो शख़्स अपने मकान के चारों कोनों में नमाज़े सुबह से पहले दस दस मर्तबा यह इस्म पढ़कर दम करेगा तो अल्लाह तआला उस पर रिज़्क़ के दरवाज़े इंशाअल्लाह खोल देंगे, बीमारी और मुफ़्लिसी उसके घर में हरगिज़ न आएगी— पढ़ने का आग़ाज़ दाहिने कोने से करे और मुंह क़िब्ले की तरफ़ रखे।

3. जो फ़ज्र के फ़र्ज़ व सुन्नत के दर्मियान इक्तालीस (41) दिन तक साढ़े पांच सौ (550) मर्तबा यह इस्म रोज़ पढ़ेगा, दौलतमंद होगा—इसमें फ़ज्र की नमाज़ जमाअत से पढ़ना और इस्म मुबारक के अव्वल व आख़िर ग्यारह-ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना शर्त है।

4. जो इशा की नमाज़ के बाद सर नंगा करके ﴿يَا رَزَّاقُ تَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ يَا رَزَّاقُ﴾ "या रज़्ज़ाक़ु तरज़ुक़ु मन तशा-उ या रज़्ज़ाक़ु" ग्यारह (11) बार अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ इक्तालीस (41) रोज़ पढ़ा करेगा उसके लिए रिज़्क़ के दरवाज़े खुलेंगे।

5. जो कोई इसको पांच सौ पैंतालीस (545) बार रोज़ पढ़ेगा, रिज़्क़ उसका कुशादा होगा और कोई दुश्वारी और दरमांदगी न आएगी।

6. जो इस इस्म को रोज़ाना तंहाई में एक हज़ार (1000) बार पढ़ेगा, इंशाअल्लाह ख़ास रूहानी मक़ाम पाएगा।

7. जो हर नमाज़ के बाद इसके पढ़ने का मामूल बनाएगा, ग़ैब से रोज़ी पाएगा।

8. जो शख़्स इस इस्म को सत्रह (17) बार उस शख़्स के सामने पढ़े जिससे कोई हाजत हो, इंशाअल्लाह वह हाजत पूरी हो जाएगी।

9. जो इस इस्म को सौ (100) बार क़ैदी की रिहाई के लिए पढ़ेगा उसे रिहाई मिलेगी— और अगर बीमार की सेहतयाबी के लिए पढ़ेगा उसे शिफ़ा मिलेगी, इंशाअल्लाह (मुजर्रब है)।

'अल-फ़त्ताहु' के मानी और इसके ख़्वास

19. अल-फ़त्ताहु जल-ल जलालुहू اَلْفَتَّاحُ جَلَّ جَلَالُهٗ

फ़तहबख़्श, रिज़्क़ व रहमत के दरवाज़े खोलने वाला

ख़्वास चार हैं :

1. जो कोई अपना हाथ सीने पर रखकर नमाज़े फ़ज्र के बाद इक्हत्तर (71) बार यह इस्म पढ़ेगा उसका दिल पाक और मुनव्वर हो जाएगा और हक़ के रास्ते का हिजाब उससे हटा लिया जाएगा और उसे इंशाअल्लाह तमाम उमूर में आसानी और रिज़्क़ में बरकत अता की जाएगी।

2. अगर कुन्द ज़ेहन चीनी की रकाबी पर इसको लिखकर ज़बान से चाटे, ज़हीन हो जाए।

3. जो इसे सात (7) बार पढ़ेगा, दिल की तारीकी जाती रहेगी।

4. जो इसका बकसरत विर्द रखे, उसके दिल की कदूरत दूर हो जाएगी और फ़ुतूहात के दरवाज़े उस पर खुल जाएंगे।

'अल-अलीमु' के मानी और इसके ख़्वास

20. अल-अलीमु जल-ल जलालुहू اَلْعَلِيْمُ جَلَّ جَلَالُهٗ

वसीअ इल्म वाला, ख़ूब जानने वाला

ख़्वास सात हैं :

1. जो कसरत से ﴿يَـا عَـلِيْـمُ﴾ "या अलीमु" का विर्द करेगा, अल्लाह तआला उस पर इंशाअल्लाह इल्म व मारफ़त के दरवाज़े खोल देगा और जो अल्लाह तआला से मांगेगा जल्द मिलेगा और हाफ़िज़ा क़वी होगा।

2. जो कोई इस इस्म को दिल में पढ़े, साहिबे मारफ़त हो जाए— और अगर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद डेढ़ सौ (150) बार पढ़ा करे, साहिबे यक़ीन हो जाए।

3. जो कोई नमाज़ के बाद सौ (100) बार ﴿يَـا عَـالِـمَ الْغَيْـبِ﴾ "या आलिमल ग़ैबि" पढ़े, अल्लाह तआला उसको साहिबे कश्फ़ बना देगा।

4. जो इस्तख़ारा करना चाहे वह शबे जुमा को नमाज़ के बाद सौ (100) बार मस्जिद में यह इस्म मुबारक पढ़कर सो रहे, मत्लूबा हाल से आगाही पा लेगा।

5. जो कोई नामालूम अम्र दरयाफ़्त करना चाहे वह अव्वल दो (2) रकअत नमाज़ पढ़े फिर दुरूद शरीफ़, फिर ﴿سُبْـحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلَّـمْتَـنَـا إِنَّكَ أَنْـتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ﴾ "सब्हान-क ला इल-म लना इल्ला मा अल्लमतना इन्न-क अन्तल अलीमुल हकीम०" सत्तर बार पढ़कर ﴿يَـا عَـلِيْمُ عَلِّمْنِىْ يَا خَبِيْرُ أَخْبِرْنِىْ يَا مُبِيْنُ بَيِّنْ لِىْ﴾ "या अलीमु अल्लिमनी या ख़बीरु अख़बिरनी या मुबीनु बय्यिन ली" सौ सौ बार पढ़कर अपना मतलब तसव्वुर करके लेट जाए। अगर नींद न आए तो

उठकर किसी मज्मा में चला जाए, वहां लोगों की बातों से बतरीक़े इशारा मतलब मालूम करे।

6. जो हर नमाज़ के बाद एक सौ (100) बार ﴿يَا عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ﴾ "या आलिमल ग़ैबि वश्शहादति" को मामूल बनाएगा इंशाअल्लाह साहिबे कश्फ़ हो जाएगा।

7. अगर कोई शख़्स ﴿يَـا عَلَّامَ الْغُيُـوْبِ﴾ "या अल्लामल ग़ुयूब" को इस क़द्र पढ़े कि उस पर हाल तारी हो जाए तो उसकी रूह को आलमे बाला की सैर नसीब होगी।

'अल-क़ाबिज़ु' के मानी और इसके ख़्वास

21. अल-क़ाबिज़ु जल-ल जलालुहू اَلْقَابِضُ جَلَّ جَلَالُهٗ

रोज़ी तंग करने वाला

ख़्वास तीन हैं :

1. जो इस इस्म को हर रोज़ तीस (30) बार पढ़ा करे, इंशाअल्लाह दुश्मन पर फ़तह पाएगा।
2. जो कोई इसे चालीस (40) दिन तक हर रोज़ चार (4) या चालीस (40) निवालों पर लिखकर खा लिया करेगा वह भूख और क़ब्र के अज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा। इसी तरह ज़ख़्म और दर्द वग़ैरह की तकलीफ़ से भी महफ़ूज़ रहेगा। इंशाअल्लाह!
3. जो कोई इस इस्म को आधी रात के वक़्त पढ़ा करे, दुश्मन उसका मक़्हूर होगा।

तंबीह : बाज़ उलमा कहते हैं कि ﴿اَلْـقَـــابِـضُ﴾ "अल-क़ाबिज़ु" को ﴿اَلْبَـاسِـطُ﴾ "अल-बासितु" के साथ, ﴿اَلْـمُذِلُّ﴾ "अल-मुज़िल्लु" को

﴿اَلْمُعِزُّ﴾ "अल-मुइज़्ज़ु" के साथ, ﴿اَلْمُمِيْتُ﴾ "अल-मुमीतु" को ﴿اَلْمُحْيِ﴾ "अल-मुह्यी" के साथ, ﴿اَلْمُؤَخِّرُ﴾ "अल-मुअख़्ख़िरु" को ﴿اَلْمُقَدِّمُ﴾ "अल-मुक़द्दिमु' के साथ, ﴿اَلْمَانِعُ﴾ "अल-मानिउ" को ﴿اَلْمُعْطِى﴾ "अल-मुअ़ती" के साथ, और ﴿اَلضَّارُّ﴾ "अज़-ज़ारु" को ﴿اَلنَّافِعُ﴾ "अल-नाफ़िउ के साथ मिलाकर ज़िक्र करना ज़्यादा मुनासिब है, और इनमें हर पहले इस्म (मस्लन अल-मुज़िल्लु) को दूसरे इस्म (मस्लन अल-मुइज़्ज़ु) के साथ मिलाए बग़ैर पढ़ना मुनासिब नहीं है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

'अल-बासितु' के मानी और इसके ख़्वास

22. अल-बासितु जल-ल जलालुहू اَلْبَاسِطُ جَلَّ جَلَالُهٗ

रोज़ी कुशादा करने वाला

ख़्वास दस हैं :

1. जो इस इस्म को चाश्त की नमाज़ के बाद दस (10) बार पढ़ेगा, उसे हर मामले में कुशादगी नसीब होगी और इंशाअल्लाह कभी किसी का मुहताज नहीं होगा।

2. जो दस (10) बार आसमान की तरफ़ हाथ उठाकर यह इस्म पढ़े और फिर हाथ अपने चेहरे पर फेरे तो उसके लिए ग़िना का एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है।

3. जो इसे चालीस (40) बार पढ़ेगा, इंशाअल्लाह मख़्लूक़ से बेपरवाह होगा।

4. मुश्किलात से नजात के लिए हर नमाज़ के बाद एक सौ चालीस (140) बार हर रोज़ इसका पढ़ना मुफ़ीद है।

5. कशाइश के लिए बहत्तर (72) दिन तक रोज़ाना बारह हज़ार (12000) बार यह इस्म पढ़े।

6. जो कोई तीन रात में सवा लाख (125000) बार ﴿يَا بَاسِطُ﴾ "या बासितु" ख़त्म करे और अव्वल व आख़िर सौ सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़े, उसे इंशाअल्लाह ग़ैब से रोज़ी मिलेगी– तीन रातों के बाद रोज़ाना सौ (100) बार पढ़ लिया करे।

7. जो कोई सहर के वक़्त आंखें बन्द करके ग्यारह (11) मर्तबा यह इस्म पढ़े और हाथ पर दम करके मुंह पर फेरे फिर आंखें खोलकर हाथों को देखे फिर बहत्तर (72) बार पढ़कर यह दुआ मांगे : ﴿اَللّٰهُمَّ زِدْ ثُمَّ زِدْ وَلَا تَنْقُصْ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ﴾ "अल्लाहुम-म ज़िद सुम-म ज़िद वला तंक़ुस वइन तउद्दू नेमतल्लाहि ला तुह्सूहा इन्नल्ला-ह ल ग़फ़ूरुर्रहीम०" इंशाअल्लाह उस दिन भूखा न रहेगा।

8. जो बहत्तर (72) बार रोज़ाना इस इस्म को पढ़ा करे उसे हक़ तआला तमाम आफ़तों और बलाओं से महफ़ूज़ रखेगा।

9. जो कोई इस इस्म को रात के आख़िरी हिस्से में हाथ उठाकर दस (10) बार कहे, हमेशा ख़ुशदिल रहे, कोई ग़म व अलम न हो, और ऐसी जगह से नफ़ा हो जिसकी उम्मीद न हो।

10. जो इस इस्म को हर रोज़ पढ़ा करे और लिखकर अपने पास रखे उसको इंशाअल्लाह ग़म नहीं पहुंचेगा और वह ग़ैब से रोज़ी पाएगा। किसी का मुहताज न होगा।

'अल-ख़ाफ़िज़ु' के मानी और इसके ख़्वास

23. अल-ख़ाफ़िज़ु जल-ल जलालुहू ٱلْخَافِضُ جَلَّ جَلَالُهٗ

पस्त करने वाला

ख़्वास छः हैं :

1. जो इस इस्म को पांच सौ (500) बार पढ़ेगा इंशाअल्लाह उसकी हाजत पूरी होगी और उसकी परेशानी दूर हो जाएगी। दुश्मन के सदमे से बच जाएगा और हिफ़ाज़ते इलाही उसके शामिले हाल रहेगी।
2. जो इसे एक हज़ार (1000) बार पढ़ेगा, इंशाअल्लाह तमाम दुश्मनों से महफ़ूज़ हो जाएगा।
3. अगर कोई तीन रोज़े रखे फिर चौथे दिन एक मज्लिस में चन्द आदमी सत्तर हज़ार (70000) बार इसको पढ़ें तो दुश्मन पर फ़तह नसीब होगी। इंशाअल्लाह। इसी मक़्सद के लिए तीन रोज़े रखकर सत्तर (70) बार पढ़ना भी मुफ़ीद है।
4. जो कोई इस इस्म को बहुत पढ़े, हाकिमे वक़्त उससे रज़ामंद रहे।
5. अगर कोई मुश्किल पेश आए तो हर नमाज़ के बाद एक हज़ार चार सौ इक्यासी (1481) बार उसका पढ़ना बहुत मुफ़ीद है।
6. जो कोई ज़ालिम से डरता हो वह इस इस्म को सत्तर (70) बार पढ़ा करे उसके ज़ुल्म से बचा रहेगा।

'अर-राफ़िउ' के मानी और इसके ख़्वास

24. अर-राफ़िउ जल-ल जलालुहू اَلرَّافِعُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बुलन्द करने वाला

ख़्वास छ हैं :

1. जो कोई पीर के दिन या जुमा की रात मग़रिब या इशा के बाद चार सौ चालीस (440) मर्तबा इस इस्म का विर्द करेगा उसे मख़्लूक़ के दर्मियान एक रोअ़ब नसीब होगा।

2. जो कोई इसे आधी रात या दोपहर को सौ (100) बार पढ़ेगा हक़ तआला जल-ल शानुहू उसको बरगुज़ीदा करेगा और वह तवांगर और बेनियाज़ होगा।

3. जो कोई इस इस्म को हर रोज़ बीस (20) बार पढ़ेगा, इंशाअल्लाह मुराद पाएगा।

4. जो कोई हर महीने की चौदहवीं रात को आधी रात में सौ (100) मर्तबा ﴿اَلرَّافِعُ﴾ "अर-राफ़िउ" पढ़े अल्लाह तआला उसे इंशाअल्लाह मख़्लूक़ से बेनियाज़ और तवांगर बना देगा।

5. जो कोई इसे तीन सौ इक्यावन (351) बार पढ़ेगा, मख़्लूक़ के दर्मियान अज़ीज़ होगा।

6. जो इसे सत्तर (70) बार पढ़ेगा, ज़ालिमों से अम्न में रहेगा और इंशाअल्लाह सरकशों से महफ़ूज़ रहेगा।

'अल-मुइज़्ज़ु' के मानी और इसके ख़्वास

25. अल-मुइज़्ज़ु जल-ल जलालुहू اَلْمُعِزُّ جَلَّ جَلَالُهٗ

इज़्ज़त देने वाला

ख़्वास तीन हैं :

1. जो शख़्स पीर या जुमा की रात में मग़रिब के बाद चालीस (40) बार यह इस्म मुबारक को पढ़ेगा, इंशाअल्लाह ख़ुदा तआला उसकी हैबत मख़्लूक़ के दिल में डाल देगा।

2. जो शख़्स नमाज़े इशा के बाद पीर या जुमा की रात में एक सौ चालीस (140) बार पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसकी हैबत व हुर्मत मख़्लूक़ के दिल में डाल देगा और वह अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरेगा और उसी की पनाह में रहेगा

3. जो एक सौ चालीस (140) दिन तक इक्तालीस (41) बार हर रोज़ बिला नाग़ा इसको पढ़ेगा, दुनिया व आख़िरत में इज़्ज़त पाएगा—पढ़ने का आग़ाज़ पीर या जुमा की शब से करे।

'अल-मुज़िल्लु' के मानी और इसके ख़्वास

26. अल-मुज़िल्लु जल-ल जलालुहू اَلْمُذِلُّ جَلَّ جَلَالُهٗ

ज़िल्लत देने वाला

ख़्वास चार हैं :

1. जो इस इस्म को पछत्तर (75) बार पढ़कर सज्दे में दुआ करे तो अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाता है।
2. जो कोई किसी ज़ालिम या हासिद से डरता हो तो पछत्तर (75) बार या इक्कीस (21) बार ﴿يَا مُذِلُّ﴾ "या मुज़िल्लु" या ﴿اَلْمُذِلُّ﴾ "अल-मुज़िल्लु" पढ़कर सज्दा करे और कहे "या इलाही! फ़लां ज़ालिम के शर से मुझे महफ़ूज़ रख", हक़ तआला उसको अमान देगा और अपनी हिफ़ाज़त में रखेगा।
3. जो सात सौ सत्तर (770) बार रोज़ाना कोई वक़्त मुक़र्रर करके ﴿يَا مُذِلَّ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ بِقَهْرِ عَزِيْزِ سُلْطَانِكَ﴾ "या मुज़िल्ल कुल्लि जब्बारिन अनीदिन बिक़हरि अज़ीज़ि सुलतानि-क" पढ़ लिया करे तो दुश्मन दफ़ा होगा।
4. जिसका कोई हक़ किसी के ज़िम्मे हो और वह अदा करने से टाल मटोल कर रहा हो तो इस इस्म को बकसरत पढ़ने से वह उसका हक़ इंशाअल्लाह अदा कर देगा।

'अस-समीउ' के मानी और इसके ख़्वास

27. अस-समीउ जल-ल जलालुहू اَلسَّمِيْعُ جَلَّ جَلَالُهٗ

ख़ूब सुनने वाला

ख़्वास चार हैं :

1. जो कोई इस इस्म को जुमेरात के दिन चाश्त की नमाज़ के बाद पांच सौ (500) बार पढ़ेगा, इंशाअल्लाह मुस्तजाबुद-दावात बन जाएगा।

2. जो इसे कसरत से पढ़े तो कम सुनने के मर्ज़ से इंशाअल्लाह शिफ़ा पाएगा।

3. अगर कोई जुमेरात के दिन चाश्त की नमाज़ के बाद पांच सौ (500) बार ﴿اَلسَّمِيْعُ﴾ "अस-समीउ" पढ़ेगा– और एक क़ौल के मुताबिक़ हर रोज़ सौ (100) बार पढ़ेगा–और पढ़ते वक़्त बातचीत नहीं करेगा और पढ़कर दुआ मांगेगा, तो जो मांगेगा इंशाअल्लाह पाएगा।

4. जो शख़्स जुमेरात के दिन फ़ज्र की सुन्नतों और फ़र्ज़ों के दर्मियान इसको सौ (100) मर्तबा पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसको नज़रे ख़ास से नवाज़ेगा।

'अल-बसीरु' के मानी और इसके ख़्वास

28. अल-बसीरु जल-ल जलालुहू اَلْبَصِيْرُ جَلَّ جَلَالُهٗ

ख़ूब देखने वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. जो कोई नमाज़े जुमा से पहले या बाद में सौ (100) मर्तबा ﴿يَابَصِيْرُ﴾ "या बसीरु" पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसकी निगाह में इंशाअल्लाह रौशनी और दिल में नूर पैदा फ़रमा देगा और उसे सालेह अक़्वाल व आमाल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएगा।

2. जो कोई जुमा के दिन फ़ज्र की सुन्नतों और फ़र्ज़ों के दर्मियान सौ (100) बार यह इस्म मुबारक पढ़ेगा उसे अल्लाह तआला ख़ुसूसी नज़रे इनायत अता फ़रमाएगा।

3. जो इसका ब-कसरत से विर्द करेगा आंखों के अमराज़ से इंशाअल्लाह महफ़ूज़ रहेगा—इसके लिए यह दुआ भी मुफ़ीद है : ﴿اَللّٰهُمَّ يَا سَمِيْعُ يَا بَصِيْرُ مَتِّعْنِيْ بِسَمْعِيْ وَبَصَرِيْ وَاجْعَلْهُمَا الْوَارِثَ مِنِّيْ﴾ "अल्लाहुम्म या समीउ या बसीरु मत्तिअनी बिसमूई व ब-स-री वज-अलहुमा वारि-स मिन्नी"।

4. कोई इस इस्म को हर रोज़ अस्र के वक़्त सात (7) बार पढ़ लिया करेगा तो नागहानी-ए-मौत से अम्न में रहेगा।

5. जो इस इस्म को जुमा के ख़ुत्बा से पहले सौ (100) बार पढ़ लिया करेगा, इंशाअल्लाह मंज़ूर नज़रे इलाही होगा।

'अल-ह-क-मु' के मानी और इसके ख़्वास

29. अल-ह-क-मु जल-ल जलालुहू اَلْحَكَمُ جَلَّ جَلَالُهٗ

हाकिमे मुतलक़

ख़्वास चार हैं :

1. जो कोई अख़ीर शब में निन्नानवे (99) मर्तबा बावुज़ू यह इस्म पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसके दिल को इंशाअल्लाह महल असरार व अनवार बना देगा।

2. जो कोई जुमा की रात यह इस्म इस क़द्र पढ़ेगा कि बेहाल व बेख़ुद हो जाए तो अल्लाह तआला उसके क़ल्ब को इंशाअल्लाह कश्फ़ व इल्हाम से नवाज़ेगा।

3. जो कोई शबे जुमा में आधी रात को यह इस्म पढ़ेगा हक़ तआला उसका बातिन पाक-साफ़ कर देगा।

4. जो पांचों वक़्त हर नमाज़ के बाद अस्सी (80) बार ﴿اَلْحَكَمُ﴾ "अल-ह-क-मु" पढ़ लिया करेगा वह किसी का मुहताज न होगा।

'अल-अदलु' के मानी और इसके ख़्वास

30. अल-अदलु जल-ल जलालुहू اَلْعَدْلُ جَلَّ جَلَالُهٗ

ख़ूब इंसाफ़ करने वाला

ख़्वास तीन हैं :

1. जो इस इस्म को पढ़े और रोटी के बीस (20) लुक़्मों पर शबे जुमा को लिखकर खा ले तो उसके लिए दिलों को मुसख़्ख़र कर दिया जाता है।
2. जो कोई इस इस्म को हर नमाज़ के बाद पढ़े वह ग़ैब से रोज़ी पाए और उसे नेक अमल की तौफ़ीक़ नसीब हो।
3. जो कोई मग़रिब की नमाज़ के बाद एक हज़ार (1000) बार यह इस्म मुबारक पढ़ेगा वह आसमानी बलाओं से निजात पाएगा।

'अल-लतीफ़ु' के मानी और इसके ख़्वास

31. अल-लतीफ़ु जल-ल जलालुहू اَللَّطِيْفُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बारीकबीं, बन्दों पर नर्मी करने वाला

ख़्वास आठ हैं :

1. जो शख़्स एक सौ तैंतीस (133) मर्तबा ﴿يَا لَطِيْفُ﴾ "या लतीफ़ु" पढ़ा करे, इंशाअल्लाह उसके रिज़्क़ में बरकत होगी और उसके सब काम बख़ूबी पूरे होंगे।
2. जो शख़्स फ़क्र व फ़ाक़ा, दुख, बीमारी, तंहाई, कस्मपुर्सी या किसी और मुसीबत में गिरफ़्तार हो वह अच्छी तरह वुज़ू करके दोगाना पढ़े

और अपने मक़्सद और मतलब को दिल में रखकर सौ (100) मर्तबा यह इस्म पढ़े, इंशाअल्लाह मक़्सद पूरा होगा।

3. जो इस इस्म को रोज़ाना एक सौ तेहत्तर (173) बार पढ़े, उसको असबाबे मईशत नसीब होंगे और हाजात पूरी होंगी।

4. बेटियों के रिश्ते और नसीब खुलने और अमराज़ से सेहत के लिए हर रोज़ तहिय्यतुल वुज़ू (वुज़ू की नमाज़) के बाद सौ (100) बार इसका पढ़ना मुफ़ीद है।

5. हर दीनी और दुनियावी मुहिम के लिए ख़ाली जगह पर दुआ की शराइत के साथ सोलह हज़ार छः सौ इक्तालीस (16641) बार इसका पढ़ना मुफ़ीद है।

6. जो एक सौ साठ (160) बार ﴿اَللَّطِيْفُ﴾ "अल-तलीफ़ु" पढ़े और उसके साथ यह आयत पढ़े : ﴿لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ﴾ "ला तुदरिकुहुल अबसारु व हु-व युदरिकुल अबसा-र व-हु वल लतीफ़ुल ख़बीरु०" वह ख़ौफ़ से इंशाअल्लाह अम्न पाएगा।

7. बीमारियों से शिफ़ा के लिए इस इस्म के साथ कोई आयते शिफ़ा पढ़ ली जाए तो फ़ायदा होगा।

8. परेशानियों और मुसीबतों से नजात के लिए इस इस्म का विर्द बहुत मुफ़ीद है।

‘अल-ख़बीरु’ के मानी और इसके ख़्वास

32. अल-ख़बीरु जल-ल जलालुहू اَلْخَبِيْرُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बड़ा बाख़बर, हर बात से आगाह

ख़्वास चार हैं :

1. जो सात (7) दिन मुतवातिर इसका विर्द करे उसे अल्लाह तआला की तरफ़ से रूहानियत नसीब होती है जो मत्लूबा उमूर में उसकी रहनुमाई करती है।
2. जो नफ़्से अम्मारा के हाथ गिरफ़्तार हो वह कसरत से इसका विर्द करे, इंशाअल्लाह नजात पाएगा।
3. इस्तिख़ारा के वास्ते इक्तालीस (41) दिन तक रोज़ाना तीन सौ (300) बार ﴿يَا خَبِيْرُ اَخْبِرْنِيْ﴾ “या ख़बीरु अख़बिरनी” पढ़े, फिर जब ज़रूरत पड़े तीन सौ (300) बार पढ़कर सो जाए, नेक व बद हाल की इंशाअल्लाह इत्तिलाअ हो जाएगी।
4. जो किसी मूज़ी के पंजे में गिरफ़्तार हो वह इस इस्म को बकसरत पढ़े, इंशाअल्लाह ख़लासी नसीब होगी।

‘अल-हलीमु’ के मानी और इसके ख़्वास

33. अल-हलीमु जल-ल जलालुहू اَلْحَلِيْمُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बड़ा बुर्दबार

ख़्वास नौ हैं :

1. जो इसका हर वक़्त विर्द रखेगा इंशाअल्लाह फ़तहमंद रहेगा और हर आफ़त से बचा रहेगा।
2. जो कोई इस इस्म को हर रोज़ ज़ुहर की नमाज़ के बाद नौ (9) बार पढ़ा करेगा इंशाअल्लाह तमाम ख़िल्क़त में सुर्ख़रू रहेगा।
3. जो दुश्मन या मुद्दई या हाकिम के सामने होते ही पानी से हाथ भिगोकर ग्यारह (11) मर्तबा ﴿يَا حَلِيْمُ﴾ “या हलीमु” पढ़कर मुंह पर मल लिया करे तो इंशाअल्लाह दुश्मन सख़्ती न कर सकेगा और हाकिम नर्मी व मेहरबानी से पेश आएगा।
4. जो कोई इसको काग़ज़ पर लिखकर उसको धोये और पानी अपनी खेती पर छिड़क दे तो इंशाअल्लाह ज़राअत की हर आफ़त से हिफ़ाज़त रहेगी और कमाल को पहुंचेगी और उसमें बरकत होगी।
5. जो कोई इस इस्म को बादशाह के रू-ब-रू पढ़ेगा इंशाअल्लाह उसके ग़ुस्से से महफ़ूज़ रहेगा।
6. जो कोई इस इस्म को पढ़े, हलीमुत्तबअ हो जाए और सब्र व सुकून उसके दिल में आ जाए।
7. जो कोई दरख़्त बोते वक़्त अट्ठाइस (28) बार यह इस्म मुबारक पढ़े तो दरख़्त सरसब्ज़ हो और ख़िज़ां से महफ़ूज़ रहे।
8. अगर रईस आदमी उसको ब-कसरत पढ़े, उसकी सरदारी ख़ूब जमे और राहत से रहे।
9. अगर इस इस्म मुबारक को काग़ज़ पर लिखकर पानी से धोकर अपने पेशे के आलात व औज़ार पर मले तो उस पेशे में बरकत होगी।

'अल-अज़ीमु' के मानी और इसके ख़्वास

34. अल-अज़ीमु जल-ल जलालुहू اَلْعَظِيْمُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बुज़ुर्गी वाला, अज़्मत वाला

ख़्वास तीन हैं :

1. जो कोई हुक्मरां से ख़ौफ़ज़दा हो वह बारह (12) बार इस इस्म को पढ़कर अपने ऊपर दम करे, इंशाअल्लाह महफ़ूज़ रहेगा और नर्मी पाएगा।
2. इसका ब-कसरत ज़िक्र करने से इज़्ज़त नसीब होती है और हर मर्ज़ से शिफ़ा मिलती है।
3. जो इस इस्म मुबारक को सात (7) मर्तबा पानी पर पढ़कर दम करके पानी पी ले तो इंशाअल्लाह उसके पेट में दर्द न होगा।

'अल-ग़फ़ूरु' के मानी और इसके ख़्वास

35. अल-ग़फ़ूरु जल-ल जलालुहू اَلْغَفُوْرُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बहुत बख़्शने वाला

ख़्वास तीन हैं :

1. जो इस इस्म को बकसरत पढ़ेगा उसके दिल से इंशाअल्लाह स्याही घटेगी।
2. तप या दर्दे सर का मरीज़ या ग़मगीन आदमी अगर इस इस्म को काग़ज़ पर लिखकर रोटी पर इसका नक़्श जज़्ब करके खाए तो हक़ तआला शानुहू उसको शिफ़ा और ख़ुलासी बख़्शेगा।
3. जो इसको बकसरत पढ़ेगा, बुरे अख़्लाक़ और रूहानी अमराज़ और ज़ाहिरी बीमारियों से इंशाअल्लाह महफ़ूज़ रहेगा और उसके माल व औलाद में बरकत होगी।

'अश-शकूरु' के मानी और इसके ख़्वास

36. अश-शकूरु जल-ल जलालुहू اَلشَّكُوْرُ جَلَّ جَلَالُهٗ

क़द्रदान यानी थोड़े अमल पर बहुत ज़्यादा सवाब देने वाला

ख़्वास छः हैं :

1. जो कोई यह इस्म इक्तालीस (41) बार पानी पर पढ़े और वह पानी अपनी आंखों पर छिड़के तो उसकी नज़र तेज़ हो जाएगी।
2. जिसको ज़ीक़ुंनफ़्स (दमा) या थकान या गरानी-ए-आज़ा हो इसको लिखकर बदन पर फेर दे और पानी पर दम करके पानी पी ले तो नफ़ा हो— और अगर कमज़ोर नज़र वाला अपनी आंख पर फेरे, निगाह में इंशाअल्लाह तरक़्क़ी हो।
3. जो शख़्स मआशी तंगी या किसी और दुख-दर्द या रंज व ग़म में मुब्तला हो वह इस इस्म को इक्तालीस (41) मर्तबा रोज़ाना पढ़े, इंशाअल्लाह उससे रिहाई नसीब होगी।
4. जिस शख़्स की आंखों की रौशनी जाती रही हो वह इस इस्म को इक्तालीस (41) बार हर रोज़ पढ़ा करे और लुआबे दहन अपनी आंखों पर लगा दे और पानी पर दम करके पिए, इंशाअल्लाह रौशनी बरक़रार हो जाएगी।
5. जो कोई मुफ़्लिस हो इस इस्म को इक्कीस (21) बार पढ़े, इंशाअल्लाह ग़नी हो जाएगा— और जो कोई बहुत पढ़े, ख़ल्क़ में बाइज़्ज़त रहे।
6. जो कोई इस इस्म मुबारक को पांच हज़ार (5000) बार रोज़ पढ़ेगा, इंशाअल्लाह क़ियामत के दिन बुलन्द मर्तबा पाएगा।

'अल-अलिय्यु' के मानी और इसके ख़्वास

37. अल-अलिय्यु जल-ल जलालुहू اَلْعَلِيُّ جَلَّ جَلَالُهٗ

बहुत बुलन्द व बरतर

ख़्वास पांच हैं :

1. जो शख़्स इस इस्म को हमेशा पढ़ता रहे और लिखकर अपने पास रखे इंशाअल्लाह उसे रुत्बा की बुलन्दी, ख़ुशहाली और मक़्सद में कामरानी नसीब होगी।

2. जो इस इस्म को वरम यानी सूजन पर तीन (3) बार पढ़कर फूंकेगा इंशाअल्लाह सेहत पाएगा।

3. अगर फ़क़ीर इसे एक सौ दस (110) बार पढ़े तो ग़नी हो जाए और दुनिया में इज़्ज़त पाए।

4. अगर यह इस्म मुबारक लिखकर बच्चे के हाथ या गले में बांध दिया जाए तो जल्दी जवान हो– अगर मुसाफ़िर अपने पास रखे तो जल्दी अपने अज़ीज़ों से आ मिले– अगर मुहताज हो तो ग़नी हो जाए।

5. यह इस्म मशाइख़, बुज़ुर्गों, तलबा और सालिकीन के लिए एक रूहानी ख़ज़ाना है। अगर इसके साथ अल्लाह तआला का नाम ﴿اَلْعَلِيْمُ﴾ "अल-अलीमु" भी मिला लिया जाए तो यह बड़े अज़्कार में शुमार होता है।

‘अल-कबीरु’ के मानी और इसके ख़्वास

38. अल-कबीरु जल-ल जलालुहू اَلْكَبِيْرُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बहुत बड़ा

ख़्वास सात हैं :

1. इसका ब-कसरत ज़िक्र करने से इल्म व मारिफ़त का दरवाज़ा खुलता है।
2. अगर यह इस्म मुबारक खाने की चीज़ पर पढ़कर मियां-बीवी को खिलाया जाए तो बाहमी उल्फ़त पैदा हो।
3. जो शख़्स अपने ओहदे से माज़ूल हो गया हो वह सात (7) रोज़े रखे और रोज़ाना एक हज़ार (1000) मर्तबा ﴿يَا كَبِيْرُ﴾ “या कबीरु” पढ़े, इंशाअल्लाह अपने ओहदे पर बहाल हो जाएगा और उसे बुज़ुर्गी व बरतरी नसीब होगी।
4. जो कोई इस इस्म को पढ़े मख़्लूक़ की नज़रों में मुमताज़ हो और बुलन्द मर्तबा पाए।
5. यह बादशाहों और हुक्काम का वज़ीफ़ा है, वह अगर इसका एहतिमाम करें तो उनका रोअ़ब रहे और मुहिम्मात बख़ूबी सरअंजाम पाएं।
6. जो इसे नौ (9) बार किसी बीमार पर पढ़कर दम करे, इंशाअल्लाह बीमार तंदुरुस्त हो।
7. जो इसे सौ (100) बार पढ़ेगा, मख़्लूक़ में अज़ीज़ रहेगा।

'अल-हफ़ीज़ु' के मानी और इसके ख़्वास

39. अल-हफ़ीज़ु जल-ल जलालुहू اَلْحَفِيْظُ جَلَّ جَلَالُهٗ

सबका मुहाफ़िज़

ख़्वास छः हैं :

1. जो शख़्स ब-कसरत ﴿يَا حَفِيْظُ﴾ "या हफ़ीज़ु" का विर्द रखेगा और लिखकर अपने पास रखेगा वह इंशाअल्लाह हर तरह के ख़ौफ़ व ख़तर और नुक़्सान व ज़रर से महफ़ूज़ रहेगा।

2. यह इस्म मुबारक ख़ौफ़नाक सफ़र में हिफ़ाज़त के लिए बेहद मुफ़ीद और सरीउल-असर है यहां तक कि अगर इसे पढ़कर दरिंदों के दर्मियान सो जाएगा तो इंशाअल्लाह वे नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेंगे। इस इस्म के ज़िक्र के बाद तीन (3) बार यह दुआ पढ़ें ﴿يَا حَفِيْظُ اِحْفَظْنِیْ﴾ "या हफ़ीज़ु इहफ़ज़नी"।

3. जो इस इस्म को हर रोज़ सोलह (16) बार पढ़ेगा, इंशाअल्लाह हर तरह से निडर रहेगा।

4. जो मग़रिब के बाद इक्तालीस (41) बार क़िब्ला की तरफ़ चेहरा करके ﴿يَا حَافِظُ يَا حَفِيْظُ يَا رَقِيْبُ يَا مُجِيْبُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ﴾ "या हाफ़िज़ु या हफ़ीज़ु या रक़ीबु या मुजीबु या अल्लाहु या अल्लाहु या अल्लाह" पढ़े, इंशाअल्लाह ग़ैब से रोज़ी पाएगा।

5. जो यह इस्म मुबारक किसी बीमार पर चालीस (40) हफ़्ते तक सत्तर (70) बार रोज़ पढ़कर दम करेगा, इंशाअल्लाह तंदुरुस्त हो जाएगा।

6. इसको पढ़ने और अपने पास लिखकर रखने वाला डूबने, जलने, देव, परी और नज़रे बद से इंशाअल्लाह महफ़ूज़ रहेगा।

‘अल-मुक़ीतु’ के मानी और इसके ख़्वास

40. अल-मुक़ीतु जल-ल जलालुहू اَلْمُقِيْتُ جَلَّ جَلَالُهٗ

वह कामिलुल क़ुदरत ज़ात जो हर चीज़ को उसकी ख़ूराक अता करती है, ग़िज़ाबख़्श

ख़्वास छः हैं :

1. अगर कोई ख़ाली आबख़ोरे में सात (7) मर्तबा यह इस्म पढ़कर दम करे और इसमें ख़ुद पानी पिये या किसी दूसरे को पिलाए तो इंशाअल्लाह मक़्सद हासिल होगा– यह अमल सफ़र में अम्न के लिए भी मुफ़ीद है, ख़ास तौर पर जब इसके साथ सूरा क़ुरैश मिलाकर सुबह व शाम पढ़ी जाए।
2. जिसकी आंख सुर्ख़ हो और दर्द करती हो वह इस इस्म को दस (10) बार पढ़कर दम करे।
3. जो किसी को ग़रीब देखे या ख़ुद उसको ग़रीबी पेश आए या कोई लड़का बदख़ोई करे या बहुत रोये तो सात (7) बार ख़ाली आबख़ोरे पर यह इस्म मुबारक पढ़कर दम करे और उसमें पानी डालकर ख़ुद पिये या दूसरे को पिलाए, इंशाअल्लाह फ़ायदा होगा।
4. अगर रोज़ादार को हलाकत का ख़ौफ़ हो तो सौ (100) बार फूल पर पढ़कर उसे सूंघे, इंशाअल्लाह क़ुव्वत पाएगा और हर रोज़ रोज़ा रख सकेगा।
5. जो इस इस्म को ﴿اَلْقَائِمُ﴾ “अल-क़ाइमु” के साथ मिलाकर हर नमाज़ के बाद सात (7) बार पढ़ेगा, सूदावी अमराज़ से इंशाअल्लाह शिफ़ा पाएगा।
6. जो इस इस्म को हर रोज़ सात (7) बार पानी पर दम करके पियेगा, इंशाअल्लाह ग़ैब से रोज़ी पाएगा और कभी भूखा न रहेगा।

'अल-हसीबु' के मानी और इसके ख़्वास

41. अल-हसीबु जल-ल जलालुहू اَلْحَسِيْبُ جَلَّ جَلَالُهٗ

ख़ूब हिसाब लेने वाला

ख़्वास छः हैं :

1. जो कोई चोर या हासिद या हमसाया या दुश्मन या चश्मे-ज़ख़्म या नज़रे बद से डरता हो, एक हफ़्ते तक सुबह (तुलूए आफ़ताब से पहले) और शाम (ग़ुरूबे आफ़ताब से पहले) सत्तर (70) बार ﴿حَسْبِیَ اللّٰهُ الْحَسِيْبُ﴾ "हस्बियल्लाहुल हसीबु' पढ़ेगा तो अल्लाह तआला उसे हफ़्ता गुज़रने से पहले अम्न अता फ़रमाएगा और इंशाअल्लाह तमाम काम दुरुस्त हो जाएंगे– पढ़ाई का आग़ाज़ जुमेरात के दिन से करे।
2. जो रोज़ाना ﴿حَسْبِیَ اللّٰهُ الْحَسِيْبُ﴾ "हस्बियल्लाहुल हसीबु" पढ़ेगा, इंशाअल्लाह हर आफ़त से महफ़ूज़ रहेगा।
3. जो कोई इस इस्म को सत्तर (70) बार पढ़ेगा, इंशाअल्लाह दुश्मनों के शर से महफ़ूज़ रहेगा।
4. अगर कोई मुश्किल पेश आए तो एक हफ़्ते तक रोज़ाना सुबह व शाम एक सौ पैंतालिस (145) बार यह इस्म मुबारक पढ़े, इंशाअल्लाह मुश्किल आसन हो जाएगी।
5. अगर किसी से हिसाब में तशद्दुद का अंदेशा हो, या किसी भाई बिरादरी से किसी मामले में ख़ौफ़ हो तो सात (7) रोज़ तक तुलूए आफ़ताब और ग़ुरूबे आफ़ताब से पहले बीस (20) बार यह इस्म मुबारक पढ़ लिया करे।
6. ﴿اَلْحَسِيْبُ﴾ 'अल-हसीबु' में इस्मे आज़म की तरफ़ इशारा है। (वल्लाहु आलम)

'अल-जलीलु' के मानी और इसके ख़्वास

42. अल-जलीलु जल-ल जलालुहू اَلْجَلِيْلُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बड़ी शान वाला

ख़्वास तीन हैं :

1. जो कोई इस इस्म को तेहत्तर (73) बार पढ़ा करे, इंशाअल्लाह साहिबे वक़ार हो।
2. जो कोई इसको दस (10) बार अपने असबाब पर पढ़े, चोरी से महफ़ूज़ व सलामत रहे।
3. जो ब-कसरत इसका विर्द रखेगा और मुश्क व ज़ाफ़रान से लिखकर पियेगा और अपने पास रखेगा, अल्लाह तआला उसको इंशाअल्लाह इज़्ज़त व अज़्मत और क़द्रों-मंज़िलत अता फ़रमाएगा।

'अल-करीमु' के मानी और इसके ख़्वास

43. अल-करीमु जल-ल जलालुहू اَلْكَرِيْمُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बड़ा सख़ी और फ़ैयाज़

ख़्वास दो हैं :

1. जो शख़्स रोज़ाना सोते वक़्त ﴿يَا كَرِيْمُ﴾ "या करीमु" पढ़ते-पढ़ते सो जाया करे, अल्लाह तआला उसको उलमा व सुलहा में इज़्ज़त नसीब फ़रमाएंगे और ग़ैब से रोज़ी अता फ़रमाएंगे।
2. जो शख़्स ﴿اَلْكَرِيْمُ ذُو الطَّوْلِ الْوَهَّابُ﴾ "अल-करीमु ज़ुत्तौलिल वह्हाब" को कसरत से पढ़े उसके असबाब व अहवाल में बरकत ज़ाहिर होगी।

‘अर-रक़ीबु’ के मानी और इसके ख़्वास

44. अर-रक़ीबु जल-ल जलालुहू اَلرَّقِيْبُ جَلَّ جَلَالُهٗ

ख़ूब निगहबानी करने वाला

ख़्वास सात हैं :

1. इस इस्म का ज़िक्र करने से माल व अयाल महफ़ूज़ रहते हैं।
2. अगर किसी की कोई चीज़ गुम हो गई हो तो ब-कसरत इसका विर्द करने से इंशाअल्लाह वापस मिल जाती है।
3. अगर इस्क़ाते हमल का ख़तरा हो तो हामिला औरत पर सात (7) मर्तबा यह इस्म मुबारक पढ़ना मुफ़ीद है।
4. सफ़र में जाते वक़्त अपने अहल व औलाद में से जिस पर कोई ख़तरा या फ़िक्र हो उसकी गर्दन पर हाथ रखकर सात (7) बार यह इस्म मुबारक पढ़े, इंशाअल्लाह वह मामून रहेगा।
5. जो कोई इस इस्म को सात (7) बार या सत्तर (70) बार अपनी बीवी, फ़रज़न्द या माल पर पढ़कर दम करे तो जिन्नात और तमाम दुश्मनों और आफ़तों से इंशाअल्लाह महफ़ूज़ रहे और उसका रौब भी बढ़ जाएगा।
6. जो कोई फोड़े-फुंसी पर तीन बार यह इस्म मुबारक पढ़कर फूंक दे, इंशाअल्लाह शिफ़ा हासिल होगी।
7. जो कोई अपना माल असबाब (गाड़ी वग़ैरह) कहीं छोड़ते वक़्त इस इस्म को पढ़ ले तो इंशाअल्लाह चोरी से हिफ़ाज़त रहेगी। मुजर्रब है।

‘अल-मुजीबु’ के मानी और इसके ख़्वास

45. अल-मुजीबु जल-ल जलालुहू اَلْمُجِيْبُ جَلَّ جَلَالُهٗ

दुआएं सुनने और क़बूल करने वाला

ख़्वास चार हैं :

1. जो कोई कसरत से ﴿يَا مُجِيْبُ﴾ ‘या मुजीबु’ पढ़ा करे, इंशाअल्लाह उसकी दुआएं बारगारे इलाही में क़बूल होने लगेंगी।
2. जो यह इस्म मुबारक अपने पास लिखकर रखेगा वह अल्लाह तआला की अमान में रहेगा।

3. जो कोई दर्दे सर के लिए यह इस्म मुबारक तीन बार पढ़कर दम कर लेगा, इंशाअल्लाह दर्दे सर दूर होगा।

4. जो इस इस्म को तुलूए आफ़ताब के वक़्त पचपन (55) बार पढ़ने का मामूल बनाएगा, इंशाअलाह मुस्तजाबुद-दअ्वात होगा।

‘अल-वासिउ’ के मानी और इसके ख़्वास

46. अल-वासिउ जल-ल जलालुहू اَلْوَاسِعُ جَلَّ جَلَالُهٗ

वुस्अत वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. जो इसका कसरत से ज़िक्र करेगा उसे ज़ाहिरी और बातिनी ग़िना नसीब होगा, साथ ही उसे इज़्ज़त, हौसला, बुर्दबारी, वुस्अत क़ल्बी और दिल की सफ़ाई नसीब होगी और अल्लाह तआला मामलात में उसके लिए कुशादगी अता फ़रमाएगा।

2. जो कोई इस इस्म को पढ़ता है उस पर मलाइका नाज़िल होते हैं।

3. जो इस इस्म को पढ़ने का मामूल बना ले उसे इंशाअल्लाह रोज़ी मिलेगी और मुफ़्लिस नहीं होगा।

4. जिसको बिच्छू काट ले वह यह इस्म मुबारक को सत्तर (70) बार पढ़कर दम करे इंशाअल्लाह ज़हर असर न करेगा।

5. जो कशाइश (कुशादगी) के वास्ते इसका जितना विर्द बढ़ाएगा उतना मालदार हो जाएगा।

'अल-हकीमु' के मानी और इसके ख़्वास

47. अल-हकीमु जल-ल जलालुहू اَلْحَكِيْمُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बड़ा हिक्मत वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. जो कोई कसरत से ﴿يَا حَكِيْمُ﴾ "या हकीमु" पढ़ा करे तो अल्लाह तआला उस पर इंशाअल्लाह इल्म व हिक्मत के दरवाज़े खोल देंगे।

2. जिस किसी का कोई काम पूरा न होता हो वह पाबन्दी से इस इस्म को पढ़ा करे, इंशाअल्लाह काम पूरा हो जाएगा।

3. जो ज़ुहर के बाद नब्बे (90) बार इस इस्म को पढ़ लिया करे तो तमाम मख़्लूक़ में सुर्ख़रू रहेगा।

4. जो इसको बहत्तर (72) बार पढ़ा करे, इंशाअल्लाह उसे कोई मुश्किल पेश न आए और सब हाजतें बर आएं।

5. जो कोई इसका ब-कसरत विर्द रखेगा इल्म व हिक्मत के चश्मे उसकी ज़बान से फूटेंगे और वह लतीफ़ इशारात और मआनी के इसरार को भी समझ लेगा।

‘अल-वदूदु’ के मानी और इसके ख़्वास

48. अल-वदूदु जल-ल जल्लालुहू اَلْوَدُوْدُ جَلَّ جَلَالُهٗ

नेक बन्दों से बेहद मुहब्बत करने वाला

ख़्वास चार हैं :

1. जो कोई एक हज़ार (1000) मर्तबा ﴿يَـا وَدُوْدُ﴾ “या वदूदु” पढ़कर खाने पर दम करेगा और बीवी के साथ बैठकर खाना खाएगा तो इंशाअल्लाह मियां-बीवी का झगड़ा ख़त्म हो जाएगा और बाहमी मुहब्बत पैदा हो जाएगी।

2. जिसका बेटा बुराइयों में मुब्तला हो वह जुमा के बाद एक हज़ार एक (1001) बार यह इस्म मुबारक मुअत्तर व लतीफ़ शीरनी पर पढ़कर दम करे और दो रकअत नमाज़ अदा करे और वह शीरनी उसको खिलाए, इंशाअल्लाह सालेह हो जाएगा।

3. इसका विर्द तस्ख़ीर के लिए भी मुफ़ीद है।

4. जो शख़्स किसी परेशानी में पड़ जाए वह दो रकअत नमाज़ पढ़कर यह दुआ करे, इंशाअल्लाह परेशानी दूर हो जाएगी। दुआ यह है :

اَللّٰهُمَّ يَا وَدُوْدُ (تین بار) يَـا ذَا الْـعَـرْشِ الْمَجِيْدِ يَا مُبْدِئُ يَا مُعِيْدُ يَا فَعَّالٌ لِّمَا يُـرِيْـدُ اَسْـئَـلُکَ بِـنُـوْرِ وَجْهِکَ الَّذِیْ مَلَا اَرْکَانَ عَرْشِکَ وَ بِقُدْرَتِکَ الَّتِیْ قَدَرْتَ بِهَا عَلٰی جَمِيْعِ خَلْقِکَ وَبِرَحْمَتِکَ الَّتِیْ وَسِعَتْ کُلَّ شَیْئٍ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ ﴿يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ اَغِثْنِیْ﴾ (آخری جملہ تین بار)

'अल-मजीदु' के मानी और इसके ख़्वास

49. अल-मजीदु जल-ल जलालुहू اَلْمَجِيْدُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बड़ा बुज़ुर्ग

ख़्वास पांच हैं :

1. जो कोई किसी मूज़ी मर्ज़ मसलन बर्स, आतशक, जुज़ाम वग़ैरह में गिरफ़्तार हो वह चांद की 13, 14, 15, तारीख़ को रोज़े रखे और इफ़्तार के बाद ब-कसरत इस इस्म को पढ़ा करे और पानी पर दम करके पिये, इंशाअल्लाह वह मर्ज़ दूर हो जाएगा।
2. बीस (20) दिन तक रोज़ा रखकर इफ़्तार के वक़्त सत्तावन (57) बार इस इस्म का पढ़ना मूज़ी इमराज़ के लिए मुफ़ीद है।
3. जिसकी अपने साथियों में इज़्ज़त व हुर्मत न हो, वह हर सुबह को निन्नानवे (99) बार यह इस्म पढ़कर अपने ऊपर फूंके, इंशाअल्लाह इज़्ज़त व हुर्मत हासिल होगी।
4. जो गर्मियों में इस इस्म को पढ़ेगा तशनगियों से मामून रहेगा।
5. जो इस इस्म पर मुदावत करेगा, बुज़ुर्ग होगा।

‘अल-बाइसु’ के मानी और इसके ख़्वास

50. अल-बाइसु जल-ल जलालुहू اَلْبَاعِثُ جَلَّ جَلَالُهٗ

मुर्दों को ज़िंदा करने वाला

ख़्वास चार हैं :

1. जो कोई रोज़ाना सोते वक़्त सीने पर हाथ रखकर एक सौ (100) मर्तबा ﴿يَـابَـاعِـثُ﴾ “या बाइसु” पढ़ा करे, इंशाअल्लाह उसका दिल इल्म व हिक्मत से ज़िंदा हो जाएगा।
2. जो इस इस्म को सौ (100) बार रोज़ाना पढ़ने का मामूल बनाएगा उससे इंशाअल्लाह नेकियां सरज़द होंगी और बुराइयों से बचा रहेगा।
3. जो कोई इस इस्म मुबारक को सात (7) बार पढ़कर अपने ऊपर फूंकेगा और हाकिम के रू-ब-रू जाए तो हाकिम मेहरबान होगा।
4. जो इसका ब-कसरत विर्द रखेगा, ख़ौफ़े इलाही उस पर ग़ालिब रहेगा।

'अश-शहीदु' के मानी और इसके ख़्वास

51. अश-शहीदु जल-ल जलालुहू اَلشَّهِيْدُ جَلَّ جَلَالُهٗ

हाज़िर व नाज़िर, हाज़िर व बाख़बर, जिसके इल्म से कोई चीज़ पोशीदा न हो

ख़्वास तीन हैं :

1. जिस शख़्स की बीवी या औलाद नाफ़रमान हो वह सुबह के वक़्त उसकी पेशानी पर हाथ रखकर इक्कीस (21) मर्तबा ﴿يَا شَهِيْدُ﴾ 'या शहीदु'' पढ़कर दम करे, इंशाअल्लाह फ़रमांबरदार हो जाएगी—बाज़ उलमा ने नज़दीक इक्कीस (21) के बजाए इकत्तीस (31) बार पढ़ना मुफ़ीद है।

2. जो इस इस्म कों पाबन्दी से पढ़ेगा उसे इंशाअल्लाह गुनाहों से परहेज़गारी नसीब होगी।

3. अहले मुराक़बा और शहादत के मुतमन्नी हज़रात के लिए यह इस्म बहुत मुनासिब और मुफ़ीद है।

‘अल-हक़्क़ु’ के मानी और इसके ख़्वास

52. अल-हक़्क़ु जल-ल जलालुहू اَلْحَقُّ جَلَّ جَلَالُهٗ

साबित व बरहक़

ख़्वास पांच हैं :

1. जो रोज़ाना एक हज़ार (1000) बार इसका विर्द करे उसके अख़्लाक़ अच्छे हो जाएंगे और उसकी तबीअत की इस्लाह हो जाएगी, इंशाअल्लाह।

2. जो रोज़ाना सौ (100) बार ﴿لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ﴾ “ला इला-ह इल्लल्लाहुल मलिकुल हक़्क़ुल मुबीनु” पढ़ेगा अल्लाह तआला उसे फ़क्र से ग़िना अता फ़रमाएंगे और इंशाअल्लाह उसके मामलात आसान हो जाएंगे।

3. जो कोई इस इस्म को ब-कसरत पढ़ेगा मख़्लूक़ में अज़ीज़ हो जाएगा।

4. अगर कोई चीज़ गुम हो जाए तो एक पाक चौकोर काग़ज़ लेकर हर कोने पर इस इस्म को लिखे और आधी रात को हथेली पर काग़ज़ रखकर आसमान के नीचे खड़ा हो जाए और यह इस्म एक सौ निन्नानवे (199) बार पढ़े, इंशाअल्लाह गुमशुदा चीज़ मिल जाएगी।

5. अगर क़ैदी आधी रात को सर नंगा करके एक सौ आठ (108) बार यह इस्म मुबारक पढ़े तो इंशाअल्लाह क़ैद से ख़ुलासी नसीब होगी।

‘अल-वकीलु’ के मानी और इसके ख़्वास

53. अल-वकीलु जल-ल जलालुहू اَلْوَكِيْلُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बड़ा कारसाज़

ख़्वास सात हैं :

1. जो कोई किसी भी आसमानी आफ़त के ख़ौफ़ के वक़्त ब-कसरत ﴿يَـا وَكِيْـلُ﴾ “या वकीलु” का विर्द करेगा और इस इस्म को अपना वकील बना लेगा वह इंशाअल्लाह हर आफ़त से महफ़ूज़ रहेगा।
2. जो कोई हर रोज़ अस्र के वक़्त सात (7) बार यह इस्म मुबारक पढ़ेगा, वह अल्लाह की पनाह में रहेगा।
3. जो बुरे कामों से न बच सके दस (10) बार यह इस्म मुबारक पढ़कर अपने ऊपर दम करे और लिखकर इसका पानी पिये, इंशाअल्लाह बुरे काम से नजात मिलेगी।
4. जो इसे बहुत पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसके कामों का ज़िम्मेदार होगा, और उसको उसकी ख़्वाहिशों के हवाले नहीं फ़रमाएगा।
5. जो कोई इस इस्म को एक सौ छियानवे (196) बार हर रोज़ पढ़ ले वह ज़ालिम के ज़ुल्म से इंशाअल्लाह बचा रहेगा और किसी से नहीं डरेगा।
6. यह इस्म “इस्मे आज़म” के मुताबिक़ है।
7. हर हाजत के लिए इसकी कसरत मुफ़ीद है।

'अल-क़विय्यु' के मानी और इसके ख़्वास

54. अल-क़विय्यु जल-ल जलालुहू اَلْقَوِيُّ جَلَّ جَلَالُهٗ

बड़ी ताक़त व क़ुव्वत वाला

ख़्वास छः हैं :

1. अगर इसे कम हिम्मत पढ़े तो बाहिम्मत हो जाए, अगर कमज़ोर पढ़े तो ज़ोरआवर हो, अगर मज़्लूम अपने ज़ालिम को मग़लूब करने के लिए पढ़े तो इंशाअल्लाह वह मग़लूब हो जाएगा।
2. ज़ालिम की हलाकत या उसके शर से हिफ़ाज़त के लिए इस इस्म का एक हज़ार (1000) बार पढ़ना बहुत मुफ़ीद है।
3. जिसका रिज़्क़ तंग हो वह एक हज़ार (1000) बार यह इस्म मुबारक पढ़े और इसके साथ इस आयत का विर्द करे ﴿اَللّٰهُ لَطِيْفٌ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ﴾ "अल्लाहु लतीफ़ुन बि इबादिही यरज़ुक़ु मँय यशा-उ व हुवल क़विय्युल अज़ीज़ु", इंशाअल्लाह इसके साथ लुत्फ़ व करम का मामला होगा और ख़ैर का दरवाज़ा उसके लिए खोल दिया जाएगा।
4. जो इस इस्म को बकसरत पढ़ेगा इंशाअल्लाह साहिबे क़ुव्वत होगा और जल्द बड़े मंसब तक पहुंचेगा।
5. जिसका दुश्मन ताक़तवर हो और यह उसको दफ़ा करने से आजिज़ हो तो थोड़ा-सा ख़मीरी आटा लेकर उसकी एक हज़ार एक सौ (1100) के बराबर या इससे भी छोटी गोलियां बना ले फिर हर एक गोली पर ﴿يَاقَوِيُّ﴾ "या क़विय्यु" पढ़कर दुश्मन के दफ़ा की नीयत से मुर्ग़ के आगे डाले, यहां तक कि सब इसी तरह ख़त्म कर दे तो अल्लाह तआला उसके दुश्मन को इंशाअल्लाह मग़लूब व मक़्हूर कर देगा— बेमहल और नाहक़ यह अमल न करे वरना अपना नुक़्सान होगा।
6. अगर जुमा की दूसरी साअत में यह इस्म बहुत पढ़ेगा तो निस्यान जाता रहेगा।

‘अल-मतीनु’ के मानी और इसके ख़्वास

55. अल-मतीनु जल-ल जलालुहू اَلْمَتِيْنُ جَلَّ جَلَالُهٗ

क़ुव्वत व इक़्तिदार वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. जिस औरत का दूध कम हो या न हो उसको ﴿اَلْمَتِيْنُ﴾ “अल-मतीनु” काग़ज़ पर लिखकर धोकर पिलाएं, इंशाअल्लाह ख़ूब दूध होगा।
2. जिस बच्चे का दूध छुड़ाया गया हो और वह सब्र न करता हो तो उसे भी यह इस्म मुबारक दस (10) बार लिखकर पिलाया जाए, इंशाअल्लाह सब्र करेगा।
3. जो कोई मुल्की मंसब चाहता हो वह इतवार के दिन अव्वल साअत में इसी नीयत से तीन सौ साठ (360) बार यह इस्म मुबारक पढ़े, इंशाअल्लाह वह मंसब पा लेगा।
4. जो इसका ब-कसरत विर्द करेगा उसकी मुश्किल आसान हो जाएगी और इंशाअल्लाह हाजात पूरी होंगी।
5. जो कोई फ़ासिक़ व फ़ाजिर लड़के या लड़की पर दस (10) बार ﴿اَلْقَوِیُّ الْمَتِيْنُ﴾“अल-क़विय्युल मतीनु” पढ़ेगा तो उसकी इस्लाह हो जाएगी और इंशाअल्लाह वह ग़लती से बाज़ रहेगा।

'अल-वलिय्यु' के मानी और इसके ख़्वास

56. अल-वलिय्यु जल-ल जलालुहू اَلْوَلِيُّ جَلَّ جَلَالُهٗ

मददगार और हिमायती

ख़्वास चार हैं :

1. जो इस इस्म को ब-कसरत पढ़ेगा महबूब हो जाएगा और उसे विलायते उज़्मा का मक़ाम नसीब होगा, और उस पर अशया के हक़ाइक़ खोल दिए जाएंगे।
2. जिसको कोई मुश्किल पेश आए वह शबे जुमा में एक हज़ार (1000) बार यह इस्म मुबारक पढ़े, इंशाअल्लाह मुश्किल दूर हो जाएगी और वह औलिया अल्लाह में शामिल हो जाएगा।
3. अगर बीवी के पास जाने के वक़्त इस इस्म को पढ़ेगा तो दोनों एक-दूसरे के लिए कारआमद बन जाएंगे।
4. जो शख़्स अपनी बीवी की आदतों और ख़स्लतों से ख़ुश न हो वह जब उसके सामने जाए इस इस्म को पढ़ा करे, इंशाअल्लाह नेक ख़स्लत हो जाएगी।

'अल-हमीदु' के मानी और इसके ख़्वास

57. अल-हमीदु जल-ल जलालुहू اَلْحَمِيْدُ جَلَّ جَلَالُهٗ

क़ाबिले तारीफ़, तमाम ख़ूबियों का मालिक

ख़्वास आठ हैं :

1. जो शख़्स पैंतालिस (45) दिन तक मुतवातिर तिरानवे (93) मर्तबा तंहाई में ﴿يَا حَمِيْدُ﴾ "या हमीदु" पढ़ा करेगा उसकी तमाम बुरी ख़स्लतें और आदतें इंशाअल्लाह दूर हो जाएंगी।
2. जो कोई इस इस्म मुबारक को बहुत पढ़ेगा, पसन्दीदा अफ़आल होगा।
3. जो फ़हश और बुरी बातें करने का आदी हो और उससे न बच सके वह प्याले पर ﴿اَلْحَمِيْدُ﴾ "अल-हमीदु" लिखे, फिर नब्बे (90) बार पढ़कर दम करे और हमेशा उस प्याले में से पानी पिया करे, इंशाअल्लाह फ़हशगोई से अमान पाएगा।
4. अगर कोई गूंगा इस इस्म को घोलकर पिये, ज़बान से साफ़ बातें करे।
5. जो फ़ज्र के बाद निन्नानवे (99) बार यह इस्म मुबारक को पढ़कर हाथ पर दम करके चेहरे पर फेर लिया करे अल्लाह तआला उसे इज़्ज़त, नुस्रत और इंशाअल्लाह चेहरे का नूर अता फ़रमाएगा।
6. जो इस इस्म को फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सौ (100) बार पढ़ने का मामूल बना ले, इंशाअल्लाह सालिहीन में से हो जाएगा।
7. जो इस इस्म को फ़ज्र और मग़रिब के बाद छियासठ (66) बार पढ़ने का मामूल बना ले, उसे इंशाअल्लाह अक़्वाल व अफ़आल हमीदा हासिल होंगे।
8. सूरा फ़ातिहा के बाद यह इस्म लिखकर किसी मरीज़ को पिलाने से इंशाअल्लाह शिफ़ा होगी।

'अल-मुह्सी' के मानी और इसके ख़्वास

58. अल-मुह्सी जल-ल जलालुहू اَلْمُحْصِیُ جَلَّ جَلَالُہٗ

शुमार करने वाला, अहाता करने वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. जो शबे जुमा में एक हज़ार (1000) बार यह इस्म मुबारक को पढ़े, अल्लाह तआला उसे क़ियामत के हिसाब व किताब से नजात अता फ़रमा देगा।
2. जो रोटी के दस टुकड़े लेकर हर टुकड़े पर बीस (20) बार यह इस्म मुबारक पढ़कर खाएगा, अल्लाह तआला उसके लिए मख़्लूक़ को मुसख़्ख़र फ़रमा देंगे।
3. जो इसका ब-कसरत ज़िक्र करेगा उसे मुराक़बा नसीब होगा— और अगर उसे अल्लाह तआला के नाम ﴿اَلْمُحِیْطُ﴾ "अल-मुहीतु" के साथ मिलाकर पढ़ लिया जाए तो उसे बेशुमार उलूम अता किए जाएंगे।
4. जो कोई इस इस्म को बहुत पढ़ा करे, इंशाअल्लाह गुनाह से बचा रहे।
5. जो कोई दस (10) बार यह इस्म मुबारक पढ़ा करे, अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त और पनाह में रहे।

'अल-मुबदिउ' के मानी और इसके ख़्वास

59. अल-मुबदिउ जल-ल जलालुहू اَلْمُبْدِئُ جَلَّ جَلَالُہٗ

पहली बार पैदा करने वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. अगर कोई इस इस्म का विर्द रखे तो उसकी ज़बान से सही और दुरुस्त बात जारी होगी।
2. जिसकी बीवी को हमल हो और वह इस्क़ाते हमल से डरता हो तो वह सहर के वक़्त नब्बे (90) बार यह इस्म मुबारक पढ़कर शहादत की उंगली बीवी के पेट के गिर्द या शिकम पर फेर देश हमल इंशाअल्लाह साक़ित न होगा।
3. जो कोई इस इस्म को बहुत पढ़े तो अफ़आल नेक उससे सरज़द होंगे, गुनाहों से बचा रहे।
4. जिस शख़्स का माल चोरी हो गया हो वह इस इस्म को पढ़े, इंशाअल्लाह माल मिल जाएगा।
5. जो कोई इसको लिखकर अपने पास रखेगा तो हक़ तआला शानुहू इसे तमाम बलाओं से नजात देगा।

‘अल-मुईदु’ के मानी और इसके ख़्वास

60. अल-मुईदु जल-ल जलालुहू اَلْمُعِيْدُ جَلَّ جَلَالُهٗ

दोबारा ज़िंदा करने वाला

ख़्वास तीन हैं :

1. गुमशुदा शख़्स को वापस बुलाने के लिए जब घर के तमाम आदमी सो जाएं तो घर के चारों कोनों में सत्तर (70) मर्तबा ﴿يَامُعِيْدُ﴾ “या मुईदु” पढ़े, इंशाअल्लाह गुमशुदा सात रोज़ में वापस आ जाएगा या पता चल जाएगा।
2. जो कोई किसी मामले में मुतहय्यर हो वह एक हज़ार (1000) बार यह इस्म मुबारक पढ़े, ख़ल्जान दूर हो जाएगा और इंशाअल्लाह दुरुस्त सिम्त की तरफ़ रहनुमाई होगी।
3. अगर कोई बात या चीज़ भूल गया हो तो ﴿يَـا مُبْـدِئُ يَـا مُعِيْدُ﴾ “या मुबदिउ या मुईदु” का विर्द रने से इंशाअल्लाह याद आ जाएगी— नीज़ इसके पढ़ने से मख़्फ़ी उमूर की तरफ़ भी रहनुमाई होती है।

'अल-मुह्यी' के मानी और इसके ख़्वास

61. अल-मुह्यी जल-ल जलालुहू اَلْمُحْيِیْ جَلَّ جَلَالُہٗ

ज़िंदगी देने वाला

ख़्वास आठ हैं :

1. जो इस इस्म को एक हज़ार (1000) बार पढ़ने का मामूल बनाएगा, इंशाअल्लाह उसका दिल ज़िंदा हो जाएगा, और बदन में तक़्वियत पैदा होगी।
2. जो शख़्स बीमार हो वह ब-कसरत "अल-मुह्यी" का विर्द रखे, या किसी दूसरे बीमार पर यह इस्म मुबारक ब-कसरत पढ़कर दम कर दे, इंशाअल्लाह सेहतयाब हो जाएगा।
3. जो शख़्स नवासी (89) बार "अल-मुह्यी" पढ़कर अपने ऊपर दम करेगा वह हर तरह की क़ैद व बन्द से इंशाअल्लाह महफ़ूज़ रहेगा।
4. जो कोई दर्द या जिस्म के किसी हिस्सा के ज़ाया होने से ख़ाइफ़ हो वह "अल-मुह्यी" सात (7) बार पढ़े, इंशाअल्लाह महफ़ूज़ रहेगा।
5. जो हफ़्त अंदाम के दर्द को दूर करने के लिए सात (7) रोज़ तक सात-सात बार पढ़कर दम करेगा तंदुरुस्त हो जाएगा।
6. जिसको किसी से जुदाई का अंदेशा हो या क़ैद का ख़ौफ़ हो तो इस इस्म मुबारक को ब-कसरत पढ़े।
7. जो इस इस्म को ब-कसरत पढ़ेगा इंशाअल्लाह उसका दिल मुनव्वर हो जाएगा।
8. जो किसी के क़हर से डरता हो तो रोटी के एक टुकड़े पर अट्ठावन (58) बार यह इस्म पढ़कर खा ले। इंशाअल्लाह महफ़ूज़ रहेगा।

‘अल-मुमीतु’ के मानी और इसके ख़्वास

62. अल-मुमीतु जल-ल जलालुहू اَلْمُمِيْتُ جَلَّ جَلَالُهٗ

मौत देने वाला

ख़्वास चार हैं :

1. जो कोई यह इस्म इस क़द्र पढ़े कि उस पर हाल तारी हो जाए, फिर वह ज़ालिमों, फ़ासिक़ों में से किसी की हलाकत की दुआ करे तो उसी वक़्त हलाक हो जाएगा।
2. जो इस इस्म को ब-कसरत पढ़ेगा उसका नफ़्स इंशाअल्लाह मग़लूब हो जाएगा।
3. जिसको इसराफ़ की आदत हो या उसका नफ़्स इबादत पर आमादा न होता हो वह इस इस्म को बकसरत पढ़े– इसका एक तरीक़ा यह है कि सोते वक़्त सीने पर हाथ रखकर ﴿اَلْمُمِيْتُ﴾ “अल-मुमीतु” पढ़ते-पढ़ते सो जाए तो इंशाअल्लाह उसका नफ़्स मुतीअ होगा।
4. जो इस इस्म को सात (7) बार पढ़कर दम करेगा, इंशाअल्लाह उस पर जादू असर न करेगा।

‘अल-हय्यु’ के मानी और इसके ख़्वास

63. अल-हय्यु जल-ल जलालुहू اَلْحَيُّ جَلَّ جَلَالُهٗ

हमेशा ज़िंदा रहने वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. जो कोई रोज़ाना तीन (3) बार ﴿اَلْحَيُّ﴾ “अल-हय्यु” का विर्द रखेगा वह इंशाअल्लाह कभी बीमार न होगा।
2. अगर कोई इस इस्म को चीनी के बर्तन पर मुश्क और गुलाब से लिखकर शीरीं (मीठे) पानी से धोकर पिये या किसी दूसरे बीमार को पिलाये तो इंशाअल्लाह शिफ़ाए-कामिला नसीब होगी।
3. जो एक हज़ार (1000) बार यह इस्म मुबारक किसी बीमार पर पढ़ेगा उसकी उम्र इंशाअल्लाह दराज़ होगी और क़ुव्वते रूहानिया उसमें ज़्यादा होगी।
4. किसी सख़्त हाजत के वक़्त अगर कोई अपने नाम के आदाद के मुवाफ़िक़ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ एक वक़्त मुक़र्रर करके ﴿يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ﴾ “या हय्यु या क़य्यूमु या अल्लाहु या रहमानु या रहीमु” पढ़ा करे तो उसकी हाजत पूरी होगी।
5. अगर कोई इस इस्म को एक सौ बीस (120) बार काग़ज़ पर लिखकर दरवाज़े पर लटका दे तो उस घर में जितने लोग रहते होंगे वह इंशाअल्लाह बुरे अमराज़ से महफ़ूज़ रहेंगे।

'अल-क़य्यूमु के मानी और इसके ख़्वास

64. अल-क़य्यूमु जल-ल जलालुहू اَلْقَيُّوْمُ جَلَّ جَلَالُهٗ

सबको क़ायम रखने और थामने वाला

ख़्वास नौ हैं :

1. जो इस इस्म को हर रोज़ तंहाई में सत्रह (17) बार पढ़ेगा इंशाअल्लाह कुंद ज़ेहन से नजात पाएगा और उसका हाफ़िज़ा क़वी और दिल मुनव्वर हो जाएगा।

2. जिस आदमी को नींद न आती हो वह यह दो आयतें पढ़े : ﴿وَتَحْسَبُهُمْ أَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ﴾ "व तहसबुहुम ऐक़ाज़ँव वहुम रुक़ूदुन" (सूरा कहफ़, आयत 18) ﴿فَضَرَبْنَا عَلٰى آذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ﴾ "फ़ज़-रबना अला आज़ानिहिम फ़िल क़हफ़ि" (सूरा कहफ़, आयत 11) इंशाअल्लाह नींद आ जाएगी– यह अमल दूसरे पर भी किया जा सकता है।

   और जो ज़्यादा सोने का आदी हो उसके सर पर "अलिफ़ लाम मीम अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु" पढ़कर दम किया जाए, इंशाअल्लाह उसकी नींद भाग जाएगी।

3. अगर कोई चाहे कि उसका दिल ज़िंदा हो जाए और कभी न मरे तो वह हर दिन चालीस (40) बार यह पढ़ा करे : ﴿يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ﴾ "या हय्यु या क़य्यूमु ला इला-ह इल्ला अन-त"।

4. जानना चाहिए कि ﴿اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ﴾ "अल-हय्युल क़य्यूमु" दोनों अज़ीम नाम हैं और हुज़ूरी कैफ़ियत रखने वाले लोगों का ज़िक्र हैं।

हुज़ूर अकरम सल्ल० ने अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि वह यह दुआ सुबह व शाम पढ़ा करें :

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ اَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهٗ وَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ .

5. जो शख़्स ब-कसरत ﴿اَلْقَيُّوْمُ﴾ "अल-क़य्यूमु" का विर्द रखेगा, इंशाअल्लाह लोगों में उसकी इज़्ज़त ज़्यादा होगी।

6. जो तंहाई में बैठकर इसका विर्द करेगा, इंशाअल्लाह ख़ुशहाल हो जाएगा।

7. जो शख़्स सुबह की नमाज़ के बाद से सूरज निकलने तक ﴿يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ﴾ "या हय्यु या क़य्यूमु" का विर्द करेगा, इंशाअल्लाह उसकी सुस्ती व काहिली दूर हो जाएगी।

8. सहर के वक़्त जो कोई बुलन्द आवाज़ से इसको पढ़ेगा उसका तसर्रुफ़ दिलों में ज़ाहिर होगा, यानी लोग उसे दोस्त रखेंगे।

9. जो इक्तालीस (41) बार रोज़ यह दुआ मांगेगा, इंशाअल्लाह उसका मुर्दा दिल ज़िंदा हो जाएगा :

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ اَنْ تُحْيِيَ قَلْبِيْ بِنُوْرِ مَعْرِفَتِكَ اَبَدًا.

'अल-वाजिदु' के मानी और इसके ख़्वास

65. अल-वाजिदु जल-ल जलालुहू اَلْوَاجِدُ جَلَّ جَلَالُهٗ

वह जिसके पास हर चीज़ है,

वह ग़नी ज़ात जो कभी मुफ़्लिस व मुहताज न हो

ख़्वास छः हैं :

1. जो शख़्स खाना खाते वक़्त ﴿يَـاوَاجِدُ﴾ "या वाजिदु" का विर्द रखे, ग़िज़ा उसके क़ल्ब की ताक़त व क़ुव्वत और नूरानियत का बाइस होगी। इंशाअल्लाह।
2. जो तंहाई में ब-कसरत इस इस्म को पढ़ेगा वह मालदार होगा।
3. जो कोई खाना खाने के वक़्त हर निवाले के साथ इसको पढ़ेगा वह खाना इंशाअल्लाह पेट में नूर होगा और बीमारी दूर होगी।
4. जो इस इस्म को बहुत पढ़ेगा उसका दिल इंशाअल्लाह ग़नी होगा।
5. जो इस इस्म को पढ़ेगा इंशाअल्लाह ज़ालिम के ज़ुल्म से बचा रहेगा।
6. जो इसे इस क़द्र पढ़ेगा कि उस पर हाल तारी हो जाए तो वह अपने बातिन में ऐसी मारिफ़त पाएगा जिसका उसने पहले मुशाहिदा नहीं किया होगा।

‘अल-माजिदु’ के मानी और इसके ख़्वास

66. अल-माजिदु जल-ल जलालुहू اَلْمَاجِدُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बुज़ुर्गी और बड़ाई वाला

ख़्वास चार हैं :

1. जो तंहाई में यह इस्म इस क़द्र पढ़े कि बेख़ुद हो जाए तो इंशाअल्लाह उसके क़ल्ब पर अनवारे इलाहिया ज़ाहिर होने लगेंगे।
2. अगर कोई इस इस्म को पानी पर दम करके मरीज़ को पिलाए तो इंशाअल्लाह मरीज़ शिफ़ा पाए।
3. जो इस इस्म को दस (10) बार शरबत पर पढ़कर पी लिया करेगा वह इंशाअल्लाह बीमार न होगा।
4. जो इसको ब-कसरत पढ़ेगा मख़्लूक़ की निगाह में अज़ीज़ व बुज़ुर्ग होगा।

‘अल-वाहिदु’ के मानी और इसके ख़्वास

67. अल-वाहिदु जल-ल जलालुहू اَلْوَاحِدُ جَلَّ جَلَالُهٗ

अपनी ज़ात व सिफ़ात में यकता, लासानी

ख़्वास तीन हैं :

1. जो कोई रोज़ाना एक हज़ार (1000) मर्तबा ﴿اَلْوَاحِدُ الْاَحَدُ﴾ “अल-वाहिदुल अ-ह-दु” पढ़ा करे उसके दिल से इंशाअल्लाह मख़्लूक़ की मुहब्बत और ख़ौफ़ जाता रहेगा।
2. जिस शख़्स की औलाद न होती हो वह ﴿اَلْوَاحِدُ الْاَحَدُ﴾ “अल-वाहिदुल अ-ह-दु” को लिखकर अपने पास रखे, इंशाअल्लाह उसको औलाद सालेह नसीब होगी।
3. जो कोई तंहाई से हिरासां हो वह बावुज़ू एक हज़ार (1000) बार इस इस्म को पढ़े। इंशाअल्लाह उसके दिल से ख़ौफ़ जाता रहेगा और उसके लिए अजाइबात ज़ाहिर होंगे।

'अल-अ-ह-दु' के मानी और इसके ख़्वास

68. अल-अ-ह-दु जल-ल जलालुहू اَلْأَحَدُ جَلَّ جَلَالُهٗ

एक अकेला, अपनी ज़ात व सिफ़ात में यकता

ख़्वास सात हैं :

1. जो कोई रोज़ाना एक हज़ार (1000) मर्तबा ﴿اَلْوَاحِدُ الْأَحَدُ﴾ "अल-वाहिदुल अ-ह-दु" पढ़ा करे उसके दिल से इंशाअल्लाह मख़्लूक़ की मुहब्बत और ख़ौफ़ जाता रहेगा।

2. जिस शख़्स की औलाद न होती हो वह ﴿اَلْوَاحِدُ الْأَحَدُ﴾ "अल-वाहिदुल अ-ह-दु" को लिखकर अपने पास रखे, इंशाअल्लाह उसको औलाद सालेह नसीब होगी।

3. हुज़ूर अकरम सल्ल० ने एक शख़्स को यह दुआ मांगते हुए सुना :

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ بِاَنِّىْ اَشْهَدُ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْأَحَدُ
الصَّمَدُ الَّذِىْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ .

अल्लाहुम-म इन्नी अस्अलु-क बिअन-न अशहदु अन्न-क अन-तअल्लाहुल-लज़ी लाइला-ह इल्ला अनतल अ-ह-दुस-स-म-दुल-लज़ी लम् यलिद वलम यूलद वलम यकुल-लहू कुफ़ुवन अहद०

तो आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया :

इस शख़्स ने अल्लाह तआला से उस इस्मे आज़म के ज़रिये दुआ की है जिसके ज़रिये जब मांगा जाता है तो अल्लाह तआला अता फ़रमाता है। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

4. जो कोई इस इस्म को पढ़ेगा इंशाअल्लाह ज़ालिम के ज़ुल्म से बचा रहेगा।

5. जो कोई इस इस्म को नौ (9) मर्तबा पढ़कर हाकिम के आगे जाएगा, इंशाअल्लाह इज़्ज़त व सरफ़राज़ी पाएगा।

6. जो कोई सांप के काटे पर एक सौ एक (101) बार ﴿اَلْوَاحِدُ الْاَحَدُ﴾ "अल-वाहिदुल अ-ह-दु" पढ़कर दम करे, इंशाअल्लाह सांप का काटा हुआ मरीज़ तंदुरुस्त हो जाएगा।

7. जो तंहाई में इसे एक हज़ार (1000) बार पढ़ेगा इंशाअल्लाह फ़रिश्ता ख़स्लत हो जाएगा।

'अस-स-म-दु' के मानी और इसके ख़्वास

69. अस-स-म-दु जल-ल जलालुहू اَلصَّمَدُ جَلَّ جَلَالُهٗ

हर चीज़ से बेनियाज़

ख़्वास पांच हैं :

1. जो कोई सहर के वक़्त सज्दे में सर रखकर एक सौ पंद्रह (115) या एक सौ पच्चीस (125) मर्तबा इस इस्म को पढ़ेगा उसको इंशाअल्लाह ज़ाहिरी व बातिनी सच्चाई नसीब होगी, और किसी ज़ालिम के हाथ में गिरफ़्तार न होगा।

2. जो शख़्स बावुज़ू इस इस्म का विर्द जारी रखे वह इंशाअल्लाह मख़्लूक़ से बेनियाज़ हो जाएगा।

3. जो कोई यह इस्म एक सौ चौंतीस (134) बार पढ़े, आसारे समदानी ज़ाहिर हों और इंशाअल्लाह कभी भूखा न रहे।

4. जो कोई इस इस्म को ब-कसरत पढ़े उसकी मुश्किलें आसान हों।

5. जो इसे एक हज़ार (1000) बार पढ़ा करेगा दुश्मन पर इंशाअल्लाह फ़तह पाएगा।

‘अल-क़ादिरु’ के मानी और इसके ख़्वास

70. अल-क़ादिरु जल-ल जलालुहू اَلْقَادِرُ جَلَّ جَلَالُهٗ

क़ुदरत वाला

ख़्वास चार हैं :

1. अगर कोई वुज़ू में हर अज़ू को धोते वक़्त ﴿اَلْقَادِرُ﴾ “अल-क़ादिरु” पढ़ेगा तो किसी ज़ालिम के हाथ इंशाअल्लाह गिरफ़्तार न होगा और कोई दुश्मन उस पर फ़तह न पाएगा।
2. अगर कोई मुश्किल पेश आए तो इक्तालीस (41) बार यह इस्म मुबारक पढ़े, इंशाअल्लाह वह काम आसान हो जाएगा।
3. जो इसको लिखकर अपने पास रखे इंशाअल्लाह जमीअ आफ़ात से बचा रहे।
4. जो शख़्स दो रकअत नमाज़ पढ़कर सौ (100) मर्तबा ﴿اَلْقَادِرُ﴾ “अल-क़ादिरु” पढ़ेगा अल्लाह तआला उसके दुश्मन को ज़लील व रुसवा फ़रमा देगा—अगर वह हक़ पर होगा—और ज़ाहिरी ताक़त के अलावा उसे इबादत की बातिनी ताक़त भी अता फ़रमाएगा।

'अल-मुक़्तदिरु' के मानी और इसके ख़्वास

71. अल-मुक़्तदिरु जल-ल जलालुहू

اَلْمُقْتَدِرُ جَلَّ جَلَالُهُ

पूरी क़ुदरत रखने वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. जो कोई सोकर उठने के बाद बकसरत ﴿اَلْمُقْتَدِرُ﴾ "अल-मुक़तदिरु" का विर्द करे या कम से कम बीस (20) मर्तबा पढ़ा करे, इंशाअल्लाह उसके तमाम काम आसान और दुरुस्त हो जाएंगे।

2. जो कोई इस इस्म को पढ़ा करे, इंशाअल्लाह उसका दुश्मन मग़लूब होगा।

3. जो इसका रोज़ाना बीस (20) मर्तबा विर्द रखेगा, इंशाअल्लाह रहमते इलाही में रहेगा।

4. जो इस नाम को तवज्जोह के साथ पढ़ता रहे, इंशाअल्लाह उसकी ग़फ़लत दूर हो जाएगी।

5. जो शख़्स हक़ीक़तन मज़्लूम हो वह महीने की आख़िरी रात में अंधेरे कमरे में नंगी ज़मीन पर दो रकअत नमाज़ पढ़े और दूसरी रकअत के आख़िरी सज्दे में ﴿اَلْمُقْتَدِرُ الشَّدِيْدُ الْقَوِيُّ الْقَاهِرُ﴾ "अल-मुक़तदिरुश शदीदुल क़विय्युल क़ाहिरु" पढ़कर ज़ालिम के ख़िलाफ़ दुआ करे, इंशाअल्लाह क़बूल होगी।

'अल-मुक़द्दिमु' के मानी और इसके ख़्वास

72. अल-मुक़द्दिमु जल-ल जलालुहू اَلْمُقَدِّمُ جَلَّ جَلَالُهٗ

आगे करने वाला

ख़्वास चार हैं :

1. जो शख़्स जंग के वक़्त ﴿اَلْمُقَدِّمُ﴾ ''अल-मुक़द्दिमु'' कसरत से पढ़ता रहेगा अल्लाह तआला उसे पेशक़दमी की क़ुव्वत अता फ़रमाएगा और दुश्मनों से महफ़ूज़ रखेगा, ज़ख़्म व रंज नहीं पहुंचेगा।
2. जो शख़्स हर वक़्त ﴿يَا مُقَدِّمُ﴾ ''या मुक़द्दिमु'' का विर्द रखेगा इंशाअल्लाह वह अल्लाह तआला का मुतीअ व फ़रमांबरदार बन जाएगा।
3. जो कोई इस इस्म को कसरत से पढ़ेगा वह दुश्मन पर इंशाअल्लाह ग़ालिब रहेगा और इताअते इलाही में उसका नफ़्स फ़रमांबरदार होगा।
4. जो इसको नौ (9) बार शीरीनी पर पढ़कर किसी को खिलाएगा तो इंशाअल्लाह वह उससे मुहब्बत करेगा—ग़लत और नाजाइज़ मक़्सद के लिए यह अमल करना हराम है और सख़्त नुक़्सानदेह है।

'अल-मुअख़्ख़िरु' के मानी और इसके ख़्वास

73. अल-मुअख़्ख़िरु जल-ल जलालुहू اَلْمُؤَخِّرُ جَلَّ جَلَالُهٗ

पीछे रखने वाला

ख़्वास सात हैं :

1. जो शख़्स कसरत से ﴿اَلْمُؤَخِّرُ﴾ "अल-मुअख़्ख़िरु" का विर्द रखेगा उसे इंशाअल्लाह सच्ची तौबा नसीब होगी।

2. जो शख़्स रोज़ाना सौ (100) मर्तबा इस इस्म को पाबन्दी से पढ़ा करे उसको इंशाअल्लाह हक़ तआला का ऐसा क़ुर्ब नसीब होगा कि उसके बग़ैर चैन न आएगा।

3. उलमा किराम फ़रमाते हैं कि ﴿اَلْمُقَدِّمُ﴾ "अल-मुक़द्दिमु" और ﴿اَلْمُؤَخِّرُ﴾ "अल-मुअख़्ख़िरु" को एक साथ पढ़ता रहे, जब कोई मुश्किल पेश आए इक्कीस (21) बार इस इस्म को पढ़े, इंशाअल्लाह मुश्किल आसान हो जाएगी।

4. जो अड़तालीस (48) दिन तक रोज़ाना तीन हज़ार (3000) बार यह इस्म मुबारक पढ़ लिया करे इंशाअल्लाह, वह जो चाहेगा पाएगा।

5. जो इक्तालीस (41) बार यह इस्म मुबारक पढ़ेगा उसका नफ़्स इंशाअल्लाह मुतीअ होगा।

6. जो हर रोज़ सौ (100) बार यह इस्म मुबारक पढ़ता रहेगा, इंशाअल्लाह उसके सब काम अंजाम को पहुंचेंगे।

7. हुज़ूर अकरम सल्ल० से यह दुआ मंक़ूल है :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ وَاَنْتَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ۔

(بخاری شریف)

'अल-अव्वलु' के मानी और इसके ख़्वास

74. अल-अव्वलु जल-ल जलालुहू اَلْاَوَّلُ جَلَّ جَلَالُهٗ

सबसे पहला

ख़्वास पांच हैं :

1. जो मुसाफ़िर हो वह जुमा के दिन एक हज़ार (1000) मर्तबा इस इस्म को पढ़े, इंशाअल्लाह जल्द बख़ैरियत वतन वापस पहुंचेगा।
2. जिस शख़्स के लड़का न हो वह चालीस (40) मर्तबा रोज़ाना ﴿اَلْاَوَّلُ﴾ "अल-अव्वलु" पढ़ा करे, इंशाअल्लाह उसकी मुराद पूरी होगी और सब मुश्किलें आसान होंगी।
3. जो चालीस (40) शबे जुमा हर शब को इशा की नमाज़ के बाद एक हज़ार (1000) बार यह इस्म मुबारक पढ़े तो उसकी इंशाअल्लाह तमाम हाजतें पूरी होंगी।
4. जो हर रोज़ ग्यारह (11) बार यह इस्म मुबारक पढ़ेगा, तमाम ख़िल्क़त इंशाअल्लाह उस पर मेहरबानी करेगी।
5. जो सौ (100) बार यह इस्म मुबारक पढ़ेगा, इंशाअल्लाह उसकी बीवी उससे मुहब्बत करेगी।

'अल-आख़िरु' के मानी और इसके ख़्वास

75. अल-आख़िरु जल-ल जलालुहू اَلْاٰخِرُ جَلَّ جَلَالُهٗ

सबसे पिछला

ख़्वास पांच हैं :

1. जो शख़्स रोज़ाना एक हज़ार (1000) मर्तबा ﴿اَلْاٰخِرُ﴾ "अल-आख़िरु" पढ़ा करे तो उसके दिल से ग़ैरुल्लाह की मुहब्बत दूर हो जाएगी और इंशाअल्लाह सारी उम्र की कोताहियों का कफ़्फ़ारा हो जाएगा, और ख़ात्मा बिलख़ैर होगा और नेक आमाल सरज़द होंगे।
2. जिसकी अम्र आख़िर को पहुंच गई हो और नेक आमाल न रखता हो वह इस इस्म का विर्द करे, हक़ तआला उसकी आक़िबत इंशाअल्लाह बेहतर करेगा।
3. जो कोई किसी जगह जाए और इस इस्म को पढ़ ले वहां इज़्ज़त और तौक़ीर पाएगा।
4. जो इस इस्म को दफ़अ दुश्मन के लिए पढ़ेगा इंशाअल्लाह कामयाब होगा।
5. जो इशा के बाद एक सौ (100) मर्तबा यह इस्म पढ़ने का मामूल बनाए उसकी आख़िरी उम्र इंशाअल्लाह पहली उम्र से बेहतर होगी।

'अज़-ज़ाहिरु' के मानी और इसके ख़्वास

76. अज़-ज़ाहिरु जल-ल जलालुहू اَلظَّاهِرُ جَلَّ جَلَالُهٗ

नुमायां, वाज़ेह

ख़्वास छः हैं :

1. जो शख़्स नमाज़े इश्राक़ के बाद पांच सौ (500) मर्तबा ﴿اَلظَّاهِرُ﴾ "अज़-ज़ाहिरु" का विर्द करेगा, अल्लाह तआला उसकी आंखों में रौशनी और दिल में नूर अता फ़रमाएगा। इंशाअल्लाह।

2. अगर बारिश वग़ैरह का ख़ौफ़ हो तो यह इस्म मुबारक ब-कसरत पढ़े, इंशाअल्लाह अमान पाएगा।

3. अगर कोई घर की दीवार पर यह इस्म मुबारक लिखे तो इंशाअल्लाह दीवार सलामत रहे।

4. जो कोई सुर्मा पर ग्यारह (11) बार यह इस्म मुबारक पढ़कर आंखों में लगाए तो लोग उस पर मेहरबानी करें।

5. जो जुमा के दिन पांच सौ (500) बार यह इस्म मुबारक पढ़ेगा उसका बातिन पुरनूर होगा और इंशाअल्लाह दुश्मन मग़लूब होगा।

6. यह अरबाबे मुकाशिफ़ात का ज़िक्र है।

‘अल-बातिनु’ के मानी और इसके ख़्वास

77. अल-बातिनु जल-ल जलालुहू اَلْبَاطِنُ جَلَّ جَلَالُهٗ

पोशीदा, पिन्हाँ

ख़्वास आठ हैं :

1. जो शख़्स रोज़ाना तैंतीस (33) बार ﴿يَـا بَـاطِنُ﴾ “या बातिनु” पढ़ा करे इंशाअल्लाह उस पर बातिनी असरार ज़ाहिर होने लगेंगे और उसके क़ल्ब में उन्स व मुहब्बते इलाही पैदा होगी।
2. जो शख़्स दो रकअत नमाज़ अदा करे उसके बाद ﴿هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَ الْبَاطِنُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٌ﴾ “हुवल अव्वलु वल आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल बातिनु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०” एक सौ पैंतालिस (145) बार पढ़े, इंशाअल्लाह उसकी तमाम हाजतें पूरी होंगी।
3. जो कोई इस इस्म को इक्तालिस (41) बार पढ़े, इंशाअल्लाह उसका क़ल्ब नूरानी हो जाएगा।
4. जो इस इस्म को हर नमाज़ के बाद तैंतीस (33) बार पढ़ने का मामूल बनाए तो उसको जो देखेगा मुहब्बत करेगा।
5. जो कोई हर रोज़ अपने दिल में या ज़बान से तीन सौ साठ (360) बार इसका विर्द इशा या फ़ज्र या किसी भी नमाज़ के बाद करेगा, साहिबे बातिन और वाक़िफ़ असरारे इलाही होगा।
6. जो किसी को अमानत सौंपे, या ज़मीन में दफ़न करे वह काग़ज़ पर ﴿اَلْبَـاطِنُ﴾ “अल-बातिनु” लिखकर उसके साथ रख दे,0 इंशाअल्लाह कोई उसमें ख़ियानत न कर सकेगा।
7. जो हर रोज़ अस्सी (80) बार किसी नमाज़ के बाद इसको पढ़ेगा वाक़िफ़ असरारे इलाही होगा। इंशाअल्लाह।
8. जो हर रोज़ तीन (3) बार एक घंटे तक इसको पढ़े उसको उन्सियते इलाही नसीब होगी।

‘अल-वाली’ के मानी और इसके ख़्वास

78. अल-वाली जल-ल जलालुहू اَلْوَالِیُ جَلَّ جَلَالُہٗ

मुतवल्ली व मुतसर्रिफ़, हाकिम व फ़रमांरवा, कारसाज़ व मालिक

ख़्वास सात हैं :

1. जो कोई अपना या किसी और का घर हर बला और बर्बादी से बचाना चाहता है तीन सौ (300) बार ﴿اَلْوَالِیُ﴾ “अल-वाली” पढ़े, इंशाअल्लाह वह घर महफ़ूज़ रहेगा।
2. अगर किसी को तस्ख़ीर करने की नीयत से ग्यारह (11) बार पढ़ेगा, वह आदमी उसका मुतीअ व मुंक़ाद होगा। इंशाअल्लाह।
3. बिल्कुल नए और कोरे आबख़ोरे पर ﴿اَلْــوَالِــی﴾ “अल-वाली” लिखकर और पढ़कर उसमें पानी भरे, फिर पानी को घर के दरो दीवार पर छिड़के तो वह घर इंशाअल्लाह आफ़तों से महफ़ूज़ रहेगा।
4. जो कोई इस इस्म को बहुत पढ़े मख़्लूक़ में इंशाअल्लाह ज़ी मर्तबा होगा।
5. जो शख़्स कसरत से ﴿اَلْــوَالِــی﴾ “अल-वाली” का विर्द रखेगा वह इंशाअल्लाह नागहानी आफ़तों से महफ़ूज़ रहेगा।
6. इसे कसरत से पढ़ना बिजली की कड़क से हिफ़ाज़त के लिए मुफ़ीद है।
7. इस इस्म का ज़िक्र उन लोगों के लिए बहुत मुफ़ीद है जिनको लोगों पर बालादस्ती हासिल है। मस्लन : हाकिम, अफ़सर, शैख़ वग़ैरह।

‘अल-मुतआली’ के मानी और इसके ख़्वास

79. अल-मुतआली जल-ल जलालुहू اَلْمُتَعَالِیْ جَلَّ جَلَالُهٗ

बहुत बुलन्द व बरतर

ख़्वास सात हैं :

1. जो शख़्स कसरत से ﴿اَلْمُتَعَالِیْ﴾ “अल-मुतआली” का विर्द रखे, इंशाअल्लाह उसकी तमाम मुश्किलात रफ़अ होंगी।
2. जो औरत हालते हैज़ में कसरत से इस इस्म का विर्द रखे, इंशाअल्लाह उसकी तकलीफ़ रफ़अ होगी।
3. जो बदकिरदार औरत अय्याम की हालत में इस इस्म को बहुत पढ़ेगी वह अपनी बदफ़ेअली से नजात पाएगी।
4. जो शख़्स इतवार की रात को ग़ुस्ल करके आसमान की तरफ़ मुंह करके इसको तीन (3) बार पढ़कर जो दुआ मांगेगा इंशाअल्लाह क़बूल होगी।
5. इसका ब-कसरत ज़िक्र करने से रिफ़अत (बुलन्दी) हासिल होती है।
6. जो हाकिम के पास जाते वक़्त यह इस्म पढ़ ले उसे हुज्जत और ग़लबा नसीब होगा। इंशाअल्लाह।
7. दुश्मन की हलाकत के लिए सात (7) दिन तक रोज़ाना एक हज़ार (1000) बार पढ़ना मुफ़ीद है।

'अल-बररु' के मानी और इसके ख़्वास

80. अल-बररु जल-ल जलालुहू اَلْبَرُّ جَلَّ جَلَالُهٗ

नेकूकार, नेक सुलूक करने वाला

ख़्वास नौ हैं :

1. जो कोई शराबख़ोरी या ज़िनाकरी जैसे गुनाहों में गिरफ़्तार हो वह रोज़ाना सात (7) बार यह इस्म पढ़े, इंशाअल्लाह उसका दिल गुनाहों से हट जाएगा।
2. जो इसको आंधी वग़ैरह की आफ़तों के डर से पढ़े, इंशाअल्लाह अम्न में रहेगा।
3. जो शख़्स हुब्बे दुनिया में मुब्तला हो वह इस इस्म को ब-कसरत पढ़े, इंशाअल्लाह दुनिया की मुहब्बत उसके दिल से जाती रहेगी।
4. जो कोई इस इस्म मुबारक को एक सांस में सात (7) बार अपने लड़के पर पढ़कर अल्लाह तआला के सुपुर्द करेगा वह बच्चा इंशाअल्लाह बलूग़ तक तमाम आफ़तों से महफ़ूज़ रहेगा।
5. जो कोई इस इस्म को पढ़ेगा वह अज़ीज़े ख़लाइक़ होगा। इंशाअल्लाह!
6. यह इस्म ख़ुश्की और समुन्दर के मुसाफ़िर के लिए अमान है।
7. जो इस इस्म को अपने बच्चे के सर पर पंद्रह (15) बार पढ़कर यह दुआ मांगे : ﴿اَللّٰهُمَّ بِبَرَكَةِ هٰذَا الْاِسْمِ رَبِّهٖ لَا يَتِيْمًا وَّلَا لَئِيْمًا﴾ "अल्ला हुम-म बि ब-र-क-ति-क हाज़ल इस्मि रब्बिही ला यतीमन वला लईमन०" तो इंशाअल्लाह यह दुआ क़बूल होगी, और बच्चा न यतीम होगा और न लईम।
8. गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब अगर सात सौ (700) बार यह इस्म मुबारक पढ़े तो इंशाअल्लाह गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ पाए।
9. अगर इसके साथ ﴿اَلرَّحِيْمُ﴾ "अर-रहीमु" मिलाकर ﴿يَا بَرُّ يَا رَحِيْمُ﴾ "या बररु या रहीमु" पढ़ा जाए तो यह क़बूलियत के ज़्यादा क़रीब है।

'अत-तव्वाबु'' के मानी और इसके ख़्वास

81. अत-तव्वाबु जल-ल जलालुहू اَلتَّوَّابُ جَلَّ جَلَالُهٗ

तौबा क़बूल करने वाला, तौबा की तौफ़ीक़ देने वाला

ख़्वास छः हैं :

1. जो कोई नमाज़े चाश्त के बाद तीन सौ साठ (360) मर्तबा इस इस्म को पढ़ा करेगा, इंशाअल्लाह उसे सच्ची तौबा नसीब होगी।
2. जो शख़्स कसरत से इस इस्म को पढ़ा करेगा, इंशाअल्लाह उसके तमाम काम आसान होंगे और नफ़्स को ताअत में ख़ुशी होगी।
3. अगर किसी ज़ालिम पर दस (10) मर्तबा यह इस्म पढ़कर दम किया जाए तो इंशाअल्लाह उससे ख़ुलासी नसीब होगी।
4. जो कोई चाश्त की नमाज़ के बाद ﴿اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَتُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ﴾ ''अल्लाहुम्मग़फ़िरली वतुब अलय-य इन्न-क अंतत-तव्वाबुर्रहीमु'' पढ़े उसके गुनाह इंशाअल्लाह बख़्शे जाएंगे।
5. जो इक्तालिस (41) दिन तक आठ सौ (800) बार यह इस्म मुबारक पढ़ेगा, इंशाअल्लाह ज़ाहिर व बातिन की नेमतों से नवाज़ा जाएगा।
6. जो कोई इस इस्म को लिखे और बारिश के पानी से धोकर शराब के आदी को पिलाए तो उसकी आदत छूट जाएगी और वह इंशाअल्लाह ताइब हो जाएगा।

‘अल-मुंतक़िमु’ के मानी और इसके ख़्वास

82. अल-मुंतक़िमु जल-ल जलालुहू اَلْمُنْتَقِمُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बदला लेने वाला

ख़्वास चार हैं :

1. जो शख़्स हक़ पर हो और दुश्मन से बदला लेने की उसमें क़ुदरत न हो वह तीन (3) जुमा तक बकसरत ﴿يَامُنْتَقِمُ﴾ “या मुंतक़िमु” पढ़े, अल्लाह तआला दुश्मन से ख़ुद इंशाअल्लाह इंतक़ाम ले लेंगे।

2. जो कोई आधी रात को यह इस्म मुबारक जिस नीयत से पढ़ेगा वह काम इंशाअल्लाह सरअंजाम होगा।

3. जो कोई इशा या फ़ज्र की नमाज़ के बाद चालीस (40) दिन तक रोज़ाना एक हज़ार एक (1001) बार ﴿يَاقَهَّارُ يَا مُذِلُّ يَا مُنْتَقِمُ﴾ “या क़ह्हारु या मुज़िल्लु या मुंतक़िमु” पढ़ेगा तो इंशाअल्लाह ज़ालिम हलाक होगा।

4. जो इस इस्म को ब-कसरत पढ़ेगा, इंशाअल्लाह उसकी आंख हरगिज़ नहीं दुखेगी।

‘अल-अफ़ुव्वु’ के मानी और इसके ख़्वास

83. अल-अफ़ुव्वु जल-ल जलालुहू اَلعَفُوُّ جَلَّ جَلَالُهٗ

बहुत माफ़ करने वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. जो शख़्स कसरत से ﴿اَلْـعَـفُـوُّ﴾ “अल-अफ़ुव्वु” पढ़ेगा, इंशाअल्लाह उसके गुनाहों को अल्लाह तआला माफ़ फ़रमा देगा और अच्छे आमाल की तौफ़ीक़ बख़्शेगा।
2. जो तीन (3) हफ़्ते तक इस इस्म का विर्द रखेगा, सब दुश्मन उसके दोस्त बन जाएंगे और लोगों में मुअज़्ज़िज़ होगा।
3. जो कोई किसी शख़्स से डरता हो तो इस इस्म मुबारक को बहुत पढ़े, इंशाअल्लाह ख़ौफ़ दूर होगा।
4. अगर इस इस्म के साथ ﴿اَلْـغَـفُـوْرُ﴾ “अल-ग़फ़ूरु” को भी मिला लिया जाए तो यह क़बूलियत के ज़्यादा क़रीब होगा।
5. जो इसे एक सौ छप्पन (156) बार पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसे ख़ौफ़ से अम्न अता फ़रमाएगा।

'अर-रऊफ़ु' के मानी और इसके ख़्वास

84. अर-रऊफ़ु जल-ल जलालुहू اَلرَّؤُوْفُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बड़ा मेहरबान, इंतिहाई शफ़ीक़

ख़्वास तीन हैं :

1. जो किसी मज़्लूम को ज़ालिम के हाथ से छुड़ाना चाहे ﴿يَـــارَؤُوْفُ﴾ "या रऊफ़ु" दस (10) बार पढ़े, वह ज़ालिम उसकी शफ़ाअत क़बूल करेगा।

2. जो कोई इसे ब-कसरत पढ़ेगा, ज़ालिम का दिल उस पर मेहरबान होगा और सब लोग उसको दोस्त रखेंगे, और इंशाअल्लाह उस पर मेहरबान होंगे।

3. जो शख़्स दस (10) मर्तबा दुरूद शरीफ़ और दस (10) मर्तबा इस इस्म को पढ़ेगा, इंशाअल्लाह उसका गुस्सा रफ़ा हो जाएगा—और दूसरे ग़ज़बनाक शख़्स पर दम करे तो उसका गुस्सा भी दूर हो जाएगा।

'मालिकुल मुल्कि' के मानी और इसके ख़्वास

85. मालिकुल मुल्कि जल-ल जलालुहू

مَالِکُ الْمُلْکِ جَلَّ جَلَالُهٗ

सारे जहान का मालिक

ख़्वास चार हैं :

1. जो शख़्स ﴿یَـامَـالِکَ الْـمُـلْکِ﴾ "या मालिकल मुल्कि" को हमेशा पढ़ता रहेगा, अल्लाह तआला उसको ग़नी और लोगों से बेनियाज़ फ़रमा देगा और इंशाअल्लाह वह किसी का मुहताज नहीं रहेगा।

2. जो बादशाह किसी मुल्क को फ़तह करना चाहता हो वह इस इस्म को बहुत पढ़े, इंशाअल्लाह कामयाब होगा।

3. जो ﴿یَامَالِکَ الْمُلْکِ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ﴾ "या मालिकल मुल्कि या ज़ल-जलालि वलइकरामि" बहुत पढ़ेगा वह अगर फ़क़ीर होगा तो ग़नी हो जाएगा—मगर यह इस्म कमाल जलाल रखता है।

4. जो बादशाह अपनी हुकूमत का इस्तहकाम चाहता हो वह इस इस्म को ब-कसरत पढ़े।

‘ज़ुल जलालि वल-इकराम’ के मानी और इसके ख़्वास

86. ज़ुल जलालि वल-इकरामि जल-ल जलालुहू

ذُوْ الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ جَلَّ جَلَالُهٗ

अज़्मत व जलाल और इनाम व इकराम वाला

ख़्वास तीन हैं :

1. जो शख़्स कसरत से ﴿يَـا ذَا الْـجَلَالِ وَالْإِكْـرَامِ﴾ “या ज़ल-जलालि वल-इकरामि” पढ़ता रहे, अल्लाह तआला उसको इज़्ज़त व अज़्मत और मख़्लूक़ से इस्तग़ना अता फ़रमाएंगे।

2. बाज़ इसको इस्मे आज़म कहते हैं— जो शख़्स ﴿يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ بِيَدِكَ الْخَيْرُ وَأَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٌ﴾ “या ज़ल-जलालि वल-इकरामि बियदिकल ख़ैरु व अन-त अला कुल्लि शैइन क़दीर” सौ (100) बार पढ़कर पानी पर दम करे और वह पानी बीमार को पिलाए तो इंशाअल्लाह बीमार शिफ़ा पाएगा। अगर दिल ग़मगीन होगा तो इस अमल से इंशाअल्लाह मसरूर होगा।

3. जो कोई रोज़ाना पाबन्दी से तीन सौ तैंतीस (333) बार ﴿يَـا مَـالِكَ الْـمُـلْكِ يَاذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ﴾ “या मालिकल मुल्कि या ज़ल-जलालि वल-इकरामि” पढ़ेगा, दुनिया उसकी फ़रमांबरदार रहेगी।

'अल-मुक़्सितु' के मानी और इसके ख़्वास

87. अल-मुक़्सितु जल-ल जलालुहू اَلْمُقْسِطُ جَلَّ جَلَالُهٗ

अद्ल व इंसाफ़ करने वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. जो कोई रोज़ाना इस इस्म को पढ़ा करे वह इंशाअल्लाह शैतानी वस्वसों से महफ़ूज़ रहेगा।
2. अगर कोई शख़्स किसी ख़ास और जाइज़ मक़्सद के लिए सात सौ (700) मर्तबा इस इस्म को पढ़ेगा तो इंशाअल्लाह वह मक़्सद पूरा होगा।
3. जो किसी रंज में मुब्तला हो वह हर रोज़ सत्तर (70) बार यह इस्म मुबारक पढ़े, इंशाअल्लाह रंज से नजात पाएगा।
4. जो कोई इस इस्म को सौ (100) बार पढ़ेगा शैतान के शर और वस्वसे से बेख़ौफ़ होगा।
5. इस इस्म की कसरत इबादात में वस्वसों से बचने का बेहतरीन इलाज है।

‘अल-जामिउ’ के मानी और इसके ख़्वास

88. अल-जामिउ जल-ल जलालुहू اَلْجَامِعُ جَلَّ جَلَالُهٗ

सबको जमा करने वाला

ख़्वास चार हैं :

1. जिस शख़्स के रिश्तेदार और अहबाब मुंतशिर हो गए हों वह चाश्त के वक़्त ग़ुस्ल करे और आसमान की तरफ़ मुंह करके दस (10) मर्तबा ﴿يَا جَامِعُ﴾ “या जामिउ” पढ़े, और एक उंगली बन्द कर ले। इसी तरह हर दस (10) मर्तबा पर एक एक उंगली बन्द करता जाए, जब सारी उंगलियां बन्द हो जाएं तो आख़िर में दोनों हाथ मुंह पर फेरे, इंशाअल्लाह जल्द जमा हो जाएंगे।

2. अगर कोई चीज़ गुम हो जाए तो ﴿اَللّٰهُمَّ يَا جَامِعَ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ اِجْمَعْ ضَالَّتِيْ﴾ “अल्लाहुम-म या जामिअन्नासि लियौमिल लारै-ब फ़ीहि इज्मअ ज़ाल्लती” पढ़ा करे, वह चीज़ इंशाअल्लाह मिल जाएगी।

3. जाइज़ मुहब्बत के लिए भी मज़्कूरा बाला दुआ बेमिसाल है।

4. अपने बिछड़े हुए अक़ारिब से मिलने के लिए इस इस्म का एक सौ चौदह (114) बार खुले आसमान के नीचे पढ़ना मुफ़ीद है।

'अल-ग़निय्यु' के मानी और इसके ख़्वास

89. अल-ग़निय्यु जल-ल जलालुहू اَلْغَنِیُّ جَلَّ جَلَالُهٗ

बड़ा बेनियाज़

ख़्वास आठ हैं :

1. जो शख़्स सत्तर (70) बार रोज़ाना ﴿یَاغَنِیُّ﴾ "या ग़निय्यु" पढ़ा करे, अल्लाह तआला उसके माल में बरकत अता फ़रमाएगा और इंशाअल्लाह किसी का मुहताज न रहेगा।
2. जो शख़्स किसी ज़ाहिरी या बातिनी मर्ज़ या बला में गिरफ़्तार हो वह अपने तमाम आज़ा और जिस्म पर ﴿یَــاغَــنِــیُّ﴾ "या ग़निय्यु" पढ़कर दम किया करे, इंशाअल्लाह नजात पाएगा—यह मर्ज़े तमअ (लालच) का भी इलाज है।
3. जो कोई इस इस्म को एक हज़ार (1000) बार पढ़ा करे वह इंशाअल्लाह मालदार हो जाएगा और मुहताज न होगा।
4. जो इसको लिखकर अपने पास रखे मुफ़्लिस न हो।
5. जो कोई इसको लिखकर अपने माल में रखे इंशाअल्लाह उसमें बरकत होगी।
6. जो कोई इस इस्म का विर्द रखेगा उसके आज़ा का दर्द जाता रहेगा।
7. जो कोई जुमेरात के दिन हज़ार (1000) बार यह इस्म मुबारक पढ़ेगा, इंशाअल्लाह दौलत पाएगा।
8. जो शख़्स जुमा की नमाज़ के बाद सत्तर (70) बार पाबन्दी से यह दुआ मांगा करेगा अल्लाह तआला उसे ग़नी फ़रमा देगा :

اَللّٰھُمَّ یَا غَنِیُّ یَا حَمِیْدُ یَا مُبْدِئُ یَامُعِیْدُ یَا فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ یَا رَحِیْمُ یَا وَدُوْدُ

اِكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَبِطَاعَتِكَ عَنْ مَعْصِيَتِكَ وَبِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ.

अल्लाहुम-म या ग़निय्यु या हमीदु या मुबदिउ या मुईदु या फ़अ्आलुल्लिमा युरीदु या रहीमु या वदूदु इकफ़िनी बिहलालि-क अन् हरामि-क व-बिताअति-क अन् मअ्-सि-यति-क व-बि-फ़ज़्लि-क अम्मन् सिवा-क।

'अल-मुग़नी' के मानी और इसके ख़्वास

90. अल-मुग़नी जल-ल जलालुहू اَلْمُغْنِىْ جَلَّ جَلَالُهٗ

ग़नी और बेनियाज़ करने वाला

ख़्वास ग्यारह हैं :

1. जो शख़्स अव्वल और आख़िर में ग्यारह-ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़कर ग्यारह सौ (1100) मर्तबा वज़ीफ़ा की तरह यह इस्म पढ़े तो अल्लाह तआला उसको ज़ाहिरी व बातिनी ग़िना अता फ़रमाएगा—यह अमल फ़ज्र या इशा की नमाज़ के बाद करे और इसके साथ सूरा मुज़्ज़म्मिल भी तिलावत करे।

2. जो कोई इस इस्म को एक हज़ार दो सौ सड़सठ (1267) बार हर रोज़ बिला नाग़ा पढ़ेगा। इंशाअल्लाह ग़नी हो जाएगा।

3. जो कोई इस इस्म मुबारक को लिखकर अपने पास रखे कभी फ़क़ीर न हो।

4. जो कोई दस जुमों तक हर जुमा को एक हज़ार (1000) बार या दस (10) बार यह इस्म पढ़ेगा, इंशाअल्लाह मख़्लूक़ से बेनियाज़ होगा।

5. जो कोई क़ुर्बत से पहले सत्तर (70) बार यह इस्म पढ़ ले तो बहुत इम्साक होगा।

6. जो बहुत मुफ़्लिस हो फ़ज्र के वक़्त फ़र्ज़ व सुन्नत के दर्मियान दो सौ (200) बार और ज़ुहर, अस्र और मग़रिब के बाद दो सौ (200) बार और इशा के बाद तीन सौ (300) बार यह इस्म मुबारक पढ़े, इंशाअल्लाह ग़नी होगा।

7. जो कोई इस इस्म मुबारक को ग्यारह सौ (1100) बार रोज़ाना पढ़ा करे उसे सफ़ाई क़ल्ब हासिल होगी।

8. जो ग्यारह सौ (1100) मर्तबा ﴿يَا مُغْنِيْ﴾ "या मुग़नी" और बिस्मिल्लाह के साथ ग्यारह सौ (1100) बार ﴿لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ﴾ "ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि" और बग़ैर बिस्मिल्लाह के सौ (100) बार दुरूद शरीफ़ और दो (2) दफ़ा सूरा मुज़्ज़म्मिल पढ़ेगा उसकी रोज़ी में ख़ूब वुस्अत होगी।

9. जिस जगह तकलीफ़ हो यह इस्म पढ़कर हाथों पर दम करके उस जगह मलने से इंशाअल्लाह तंदुरुस्त हो जाएगा।

10. जो शख़्स रोज़ाना ग्यारह सौ इक्कीस (1121) बार यह इस्म पढ़ता रहे इंशाअल्लाह वह कभी मुहताज नहीं होगा।

11. अगर कोई सूरा वज़्ज़ुहा पढ़कर यह इस्म पढ़ेगा फिर कहेगा :

اَللّٰهُمَّ يَسِّرْنِىْ لِلْيُسْرِ الَّذِىْ يَسَّرْتَهٗ لِكَثِيْرٍ مِّنْ خَلْقِكَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

"अल्लाहुम-म यस्सिरनी लिल युस्रिल्लज़ी यस्सरतहू लि कसीरिम मिन ख़ल्कि-क व अग़नि-नी बिफ़ज़्लि-क अम्मन सिवा-क"

तो अल्लाह तआला उसके लिए ग़ैब से मददगार भजेगा।

‘अल-मानिउ’ के मानी और इसके ख़्वास

91. अल-मानिउ जल-ल जलालुहू اَلْمَانِعُ جَلَّ جَلَالُهٗ

हलाकत व तबाही को रोकने वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. अगर बीवी से झगड़ा या नाचाक़ी हो तो बिस्तर पर लेटते वक़्त बीस (20) मर्तबा यह इस्म पढ़ा करे, इंशाअल्लाह झगड़ा ख़त्म और नाचाक़ी दूर हो जाएगी और बाहमी उन्स व मुहब्बत पैदा हो जाएगी।
2. जो कोई ब-कसरत इस इस्म का विर्द रखेगा इंशाअल्लाह वह हर शर से महफ़ूज़ रहेगा।
3. अगर किसी ख़ास और जाइज़ मक़्सद के लिए यह इस्म मुबारक पढ़ेगा तो इंशाअल्लाह मक़्सद में कामयाबी होगी।
4. जो कोई इस इस्म को सौ (100) बार पढ़ेगा, इंशाअल्लाह दो शख़्सों के दर्मियान लड़ाई ख़त्म हो जाएगी।
5. जो अपनी मुराद तक न पहुंच सके वह इसको सुबह व शाम पढ़ा करे, इंशाअल्लाह मुराद हासिल होगी।

'अज़-ज़ारु' के मानी और इसके ख़्वास

92. अज़-ज़ारु जल-ल जलालुहू اَلضَّارُّ جَلَّ جَلَالُهٗ

ज़रर पहुंचाने वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. जो शख़्स शबे जुमा में सौ (100) मर्तबा ﴿اَلضَّارُّ﴾ "अज़-ज़ारु" पढ़ा करे वह इंशाअल्लाह तमाम ज़ाहिरी और बातिनी आफ़तों से महफ़ूज़ रहेगा और क़ुर्बे ख़ुदावंदी उसे हासिल होगा।
2. जो कोई इस इस्म पाक को पढ़े और ज़ालिम का नाम ले, इंशाअल्लाह उसको ज़रर पहुंचेगा और पढ़ने वाला उसके ज़ुल्म से महफ़ूज़ रहेगा।
3. जिसको एक हाल व मक़ाम मुयस्सर हो सौ (100) बार शबे जुमा में इस इस्म को पढ़ने का मामूल बनाए, अल्लाह तआला इसको मक़ाम में साबित रखेगा और अहले क़ुर्ब के मर्तबे तक पहुंचा देगा। इस मर्तबे के आगे ज़ाहिरी कमाल की कुछ असल नहीं।
4. जिसकी इज़्ज़त कम हो, हर शबे जुमा और अय्यामे बैज़ में सौ (100) बार नमाज़े इशा के बाद यह इस्म मुबारक पढ़ा करे, इंशाअल्लाह मुहतरम रहेगा।
5. जो हर शबे जुमा सौ (100) बार ﴿اَلضَّارُّ النَّافِعُ﴾ "अज़-ज़ारुन नाफ़िउ" पढ़ा करेगा, इंशाअल्लाह अपनी क़ौम में मुअज़्ज़िज़ और जिस्मानी तौर पर बाआफ़ियत रहेगा।

'अन-नाफ़िउ' के मानी और इसके ख़्वास

93. अन-नाफ़िउ जल-ल जलालुहू اَلنَّافِعُ جَلَّ جَلَالُهٗ

नफ़ा पहुंचाने वाला

ख़्वास सात हैं :

1. जो कोई कश्ती वग़ैरह सवारी में सवार होने के बाद ﴿يَا نَافِعُ﴾ "या नाफ़िउ" कसरत से पढ़ता रहे, इंशाअल्लाह तमाम आफ़ात से महफ़ूज़ रहेगा।
2. जो शख़्स किसी काम को शुरू करते वक़्त इक्तालिस (41) मर्तबा ﴿يَا نَافِعُ﴾ "या नाफ़िउ" पढ़ा करे तो इंशाअल्लाह वह काम हस्बे मंशा होगा।
3. जो शख़्स बीवी से जिमाअ करते वक़्त यह इस्म पहले पढ़ लिया करे तो इंशाअल्लाह औलाद सालेह नसीब होगी।
4. जो कोई इस इस्म को पढ़कर मरीज़ पर दम करे तो इंशाअल्लाह वह शिफ़ा पाएगा।
5. जो माहे रजब में इसका विर्द करेगा, इंशाअल्लाह असरारे इलाही से आगाह होगा।
6. जो चार (4) रोज़ जहां तक हो सके पढ़ेगा, इंशाअल्लाह कभी किसी ग़म में न फंसेगा।
7. जो सफ़रे हज में इसे पढ़ा करे वह इंशाअल्लाह बख़ैर घर वापस आएगा।

'अन-नूरु' के मानी और इसके ख़्वास

94. अन-नूरु जल-ल जलालुहू اَلنُّوْرُ جَلَّ جَلَالُهٗ

निहायत रौशन, रौशन करने वाला

ख़्वास चार हैं :

1. जो शख़्स शबे जुमा में सात (7) मर्तबा सूरा नूर और एक हज़ार (1000) बार इस इस्म को पढ़ा करे, इंशाअल्लाह उसका दिल अनवारे इलाही से मुनव्वर हो जाएगा।
2. जो कोई इस इस्म को ﴿اَلنَّافِعُ﴾ "अन-नाफ़िउ" के साथ मिलाकर पढ़े और मरीज़ पर दम करे तो इंशाअल्लाह शिफ़ा होगी।
3. जो सुबह के वक़्त इसके ज़िक्र को लाज़िम पकड़ेगा उसका दिल रौशन होगा।
4. जो कोई अंधेरे कमरे में आंखें बन्द करके इस इस्म का इस क़द्र ज़िक्र करे कि हाल तारी हो जाए, वह अजीब व ग़रीब अनवार का मुशाहिदा करेगा और उसका दिल नूर से भर जाएगा—यह इस्म अहले बसीरत व मकाशिफ़ात के लिए बहुत मुनासिब है।

‘अल-हादी’ के मानी और इसके ख़्वास

95. अल-हादी जल-ल जलालुहू اَلْهَادِیُ جَلَّ جَلَالُهٗ

हिदायत देने वाला

ख़्वास आठ हैं :

1. जोशख़्स हाथ उठाकर आसमान की तरफ़ मुंह करके ब-कसरत ﴿يَاهَادِیُ﴾ “या हादियु” पढ़े और आख़िर में चेहरे पर हाथ फेर ले उसको इंशाअल्लाह कामिल हिदायत नसीब होगी और अहले मारिफ़त में शामिल हो जाएगा।
2. जो कोई ग्यारह सौ (1100) बार ﴿يَاهَادِیُ! اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ﴾ “या हादियु! इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ी-म” इशा की नमाज़ के बाद पढ़ लिया करे वह इंशाअल्लाह किसी का मुहताज न रहेगा और सीधे रास्ते की हिदायत नसीब होगी।
3. जब किसी को कोई मुश्किल पेश आए, वह दो रकअत नमाज़ पढ़े। और दोनों रकअतों में सूरा फ़ातिहा के बाद सूरा इख़्लास पढ़े और सलाम के बाद यह इस्म एक सांस में जिस क़द्र हो सके पढ़े। जब सांस टूट जाए तो दुआ मांगे, जो दुआ मांगेगा इंशाअल्लाह क़बूल होगी।
4. जो कोई सफ़र पर हो और उसे रास्ता न मिले तो वह कहे : ﴿يَاهَادِیُ اِهْدِ﴾ “या हादियु इहदि”, इंशाअल्लाह रास्ता मिल जाएगा।
5. इसके ज़िक्र से या लिखकर पास रखने से बसीरत और सही फ़हम पैदा होता है—इसका ज़िक्र अहले हुकूमत के लिए भी मुनासिब है।
6. जो फ़राइज़ों के बाद चार सौ (400) बार इसका विर्द करेगा उसे अज़ीम मदद हासिल होगी।
7. अगर बादशाह इसका इस क़द्र ज़िक्र करें कि हाल तारी हो जाए तो रिआया उनकी फ़रमांबरदार होगी।
8. सालिकीन की सैरे अलवी (आलमे बाला की सैर) के लिए इसका ज़िक्र मुफ़ीद है।

'अल-बदीउ' के मानी और इसके ख़्वास

96. अल-बदीउ जल-ल जलालुहू اَلْبَدِيْعُ جَلَّ جَلَالُهٗ

नया पैदा करने वाला, बग़ैर मिसाल के पैदा करने वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. जिस शख़्स को कोई ग़म या मुसीबत या कोई भी मुश्किल पेश आए वह एक हज़ार (1000) मर्तबा ﴿يَـابَـدِيْـعَ السَّمٰـوٰتِ وَالْاَرْضِ﴾ "या बदीअस्समावाति वल अर्ज़ि" पढ़े, इंशाअल्लाह कशाइश (कुशादगी) नसीब होगी।

2. जो शख़्स इस इस्म को बावुज़ू पढ़ते हुए सो जाए तो जिस काम का इरादा हो इंशाअल्लाह ख़्वाब में नज़र आ जाएगा।

3. जो कोई नमाज़ इशा के बाद ﴿يَـابَـدِيْـعَ الْـعَـجَائِبِ بِالْخَيْرِ يَابَدِيْعُ﴾ "या बदीअ़ल अजाइबि बिलख़ैरि या बदीउ" बारह सौ (1200) मर्तबा बारह (12) दिन पढ़ेगा तो जिस काम या मक़्सद के लिए पढ़ेगा वह इंशाअल्लाह पूरा अमल ख़त्म होने से पहले हासिल हो जाएगा।

4. किसी ग़म या अहम हाजत के लिए सत्तर हज़ार (70000) मर्तबा ﴿يَـابَدِيْعَ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ﴾ "या बदीअस्समावाति वल अर्ज़ि" पढ़े, इंशाअल्लाह ग़म रफ़अ होगा और हाजत पूरी होगी।

5. जो इस इस्म का ब-कसरत विर्द करेगा उसे अल्लाह तआला की तरफ़ से इल्म व हिक्मत अता की जाएगी और अल्लाह तआला उसकी ज़बान से उन उलूम को जारी फ़रमाएगा जिनको वह पहले न जानता हो।

‘अल-बाक़ी’ के मानी और इसके ख़्वास

97. अल-बाक़ी जल-ल जलालुहू اَلْبَاقِیْ جَلَّ جَلَالُہٗ

हमेशा बाक़ी रहने वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. जो शख़्स इस इस्म को एक हज़ार (1000) मर्तबा जुमा की रात में पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसको हर तरह के ज़रर व नुक़्सान से महफ़ूज़ रखेगा और इंशाअल्लाह उसके तमाम नेक आमाल मक़बूल होंगे और उसे ग़म से ख़लासी नसीब होगी।

2. जो सूरज निकलने से पहले सौ (100) बार रोज़ यह इस्म मुबारक पढ़ेगा, इंशाअल्लाह मरते दम तक कुछ दुख न पाएगा और आक़िबत (आख़िरत) में बख़्शा जाएगा।

3. जो इस इस्म को पाबन्दी से हफ़्ता के दिन किसी वक़्त दुश्मन की मग़लूबी की नीयत से बावुज़ू होकर बाद दो रकअत नफ़्ल सौ (100) बार पढ़ेगा इंशाअल्लाह दुश्मन उसके मुतीअ व फ़रमांबरदार होंगे।

4. जो इस इस्म को हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद एक सौ तेरह (113) बार पढ़ने का मामूल बनाएगा उसे उसके मंसब से कोई माज़ूल नहीं कर सकेगा, चाहे उसके ख़िलाफ़ जिन्न व इन्स जमा हो जाएं।

5. जो एक सौ (100) बार ﴿يَــا بَــاقِــیْ﴾ “या-बाक़ियु” पढ़ता रहेगा, इंशाअल्लाह उसके आमाल मक़बूल होंगे।

'अल-वारिसु' के मानी और इसके ख़्वास

98. अल-वारिसु जल-ल जलालुहू اَلْوَارِثُ جَلَّ جَلَالُهٗ

तमाम चीज़ों का हक़ीक़ी मालिक, वह ज़ात जो क़ायम व दायम है और हर चीज़ के फ़ना होने के बाद ज़मीन और उसकी तमाम चीज़ों का असली मालिक है

ख़्वास तीन हैं :

1. जो शख़्स तुलूअ आफ़ताब के वक़्त सौ (100) मर्तबा ﴿يَـــاوَارِثُ﴾ "या वारिसु" पढ़ेगा इंशाअल्लाह दुनिया व आख़िरत में हर रंज व ग़म और सख़्ती व मुसीबत से महफ़ूज़ रहेगा और ख़ात्मा बिलख़ैर होगा—यह ख़ुफ़िया राज़ों में से है।

2. जो कोई मग़रिब व इशा के दर्मियान एक हज़ार (1000) मर्तबा यह इस्म मुबारक पढ़े, हर तरह की हैरानी व परेशानी से इंशाअल्लाह महफ़ूज़ रहेगा।

3. जो कोई इस इस्म को कसरत से पढ़ता रहेगा उसके माल में बरकत होगी। उसके सब काम बर आएंगे और वह अम्न में रहेगा और इंशाअल्लाह उसकी उम्रदराज़ होगी।

'अर-रशीदु' के मानी और इसके ख़्वास

99. अर-रशीदु जल-ल जलालुहू اَلرَّشِيْدُ جَلَّ جَلَالُهٗ

सबका रहनुमा, सबको राहेरास्त दिखाने वाला

ख़्वास पांच हैं :

1. जिसको अपने किसी काम या मक़्सद की तदबीर समझ में न आए वह मग़रिब व इशा के दर्मियान एक हज़ार (1000) बार ﴿يَـارَشِيْدُ﴾ "या रशीदु" पढ़े, इंशाअल्लाह ख़्वाब में तदबीर नज़र आएगी, या दिल में उसका इल्क़ा हो जाएगा।
2. अगर रोज़ाना इस इस्म का विर्द रखे तो इंशाअल्लाह तमाम मुश्किलात दूर हो जाएंगी और कारोबार में ख़ूब तरक़्क़ी होगी।
3. जो इस इस्म मुबारक को मुबाशिरत से पहले पढ़े, इंशाअल्लाह फ़रज़न्द सालेह व परहेज़गार पैदा होगा।
4. दुरुस्त फ़ैसले की तरफ़ रहनुमाई के लिए इस इस्म को इशा के बाद एक सौ (100) बार पढ़ना मुफ़ीद है।
5. जो इशा के बाद सौ (100) बार यह इस्म मुबारक पढ़ेगा इंशाअल्लाह उसका अमल क़बूल होगा।

‘अस-सबूरु’ के मानी और इसके ख़्वास

100. अस-सबूरु जल-ल जलालुहू اَلصَّبُوْرُ جَلَّ جَلَالُهٗ

बहुत बरदाश्त करने वाला, बड़ा बुर्दबार

ख़्वास सात हैं :

1. जो शख़्स तुलूअ आफ़ताब से पहले सौ (100) मर्तबा इस इस्म को पढ़े वह इंशाअल्लाह हर मुसीबत से महफ़ूज़ रहेगा और दुश्मनों, हासिदों की ज़बानें बन्द रहेंगी।
2. जो कोई किसी भी मुसीबत में गिरफ़्तार हो वह एक हज़ार बीस (1020) मर्तबा इस इस्म को पढ़े, इंशाअल्लाह उससे नजात पाएगा और इत्मीनाने क़ल्ब नसीब होगा।
3. जो कोई इस इस्म को बहुत पढ़े उसका रंज दूर हो और सुरूर हासिल हो।
4. तमाम हाजात के लिए इसको दो सौ अट्ठानवे (298) बार हर रोज़ पढ़े।
5. जिसको दर्द, रंज या मुसीबत पेश आए तैंतीस (33) बार इस इस्म को पढ़े, इंशाअल्लाह उसकी परेशानी दूर होगी।
6. जो आधी रात में या दोपहर को इस इस्म को पढ़ने की मुदावमत करेगा उसको दुश्मनों की ज़बानबन्दी, ख़ुशनूदी और बादशाह की रज़ामंदी हासिल होगी– यह इस्म दिलों के ग़ज़ब और रंज व ग़म दूर करने की ख़ासियत रखता है।
7. यह इस्म मुबारक अहले मुजाहिदा का विर्द है कि इसके ज़रिये उन्हें साबित क़दमी नसीब होती है।

........कर ख़ातिमा सबका ईमान पर

ख़ुदा हम तेरे दर पर आए हुए ☆ ज़माने के हैं हम सताए हुए
तुझी से हैं बस लौ लगाए हुए ☆ करम हम पर कर दे तू रब्बे करीम
करीमुन, करीमुन, करीमुन, करीम

पढ़ें इल्मे दीन हम बड़े शौक़ से ☆ करें मेहनतें हम बड़े ज़ौक़ से
रहें बचते हम जुह्ल के तौक़ से ☆ हमें दौलते इल्म दे ऐ अलीम
अलीमुन, अलीमुन, अलीमुन, अलीम

करें उम्र भर हम इताअत तेरी ☆ रहे दिल पर क़ायम जलालत तेरी
हमा वक़्त हो बस इनायत तेरी ☆ हिफ़ाज़त में रख अपनी हमको हफ़ीज़
हफ़ीज़ुन, हफ़ीज़ुन, हफ़ीज़ुन, हफ़ीज़

ख़ताकार हैं हम गुनाहगार भी ☆ सियहकार हैं और बदकार भी
माफ़ी के हैं हम तलबगार भी ☆ तू कर रह्म हम पर कि है तू रहीम
रहीमुन, रहीमुन, रहीमुन, रहीम

ख़ताओं, गुनाहों से कर दरगुज़र ☆ मआसी से हम को बचा उम्र भर
भटकते रहें अब न हम दर-ब-दर ☆ तुझे सब यह हासिल है क़ुदरत क़दीर
क़दीरुन, क़दीरुन, क़दीरुन, क़दीर

रहें हम अमल पैरा क़ुरआन पर ☆ मरें आपके हुक्मो फ़रमान पर
तू कर ख़ातिमा सबका ईमान पर ☆ मआसी हैं वारिस के बेहद ग़फ़ूर
ग़फ़ूरुन, ग़फ़ूरुन, ग़फ़ूरुन, ग़फ़ूर

आप सल्ल० की होगी सबको ज़रूरत

बाद .ख़ुदा है सबसे बरतर
शाफ़ि-ए-महशर, शाफ़ि-ए-महशर

काली कमली ओढ़ने वाला ☆ ख़ल्क़े ख़ुदा में सबसे आला
दोनों जहां में जिससे उजाला ☆ माहे दरख़्शां महरे मुनव्वर

बाद .ख़ुदा है सबसे बरतर
शाफ़ि-ए-महशर, शाफ़ि-ए-महशर

रब का दुलारा, जग का प्यारा ☆ दिल का टुकड़ा, आंख का तारा
अर्ज़े समा और आलम सारा ☆ सब हैं उससे असफ़लो कमतर

बाद .ख़ुदा है सबसे बरतर
शाफ़ि-ए-महशर, शाफ़ि-ए-महशर

सोती बस्ती जिसने जगा दी ☆ डूबती कश्ती पार लगा दी
पसमांदों की शान बढ़ा दी ☆ गुमराहों का हादी व रहबर

बाद .ख़ुदा है सबसे बरतर
शाफ़ि-ए-महशर, शाफ़ि-ए-महशर

ज़ुल्मो तशद्दुद, सहने वाला ☆ कुछ न ज़बां से कहने वाला

बल्कि दुआएं देने वाला ☆ रहमो करम का यकता पैकर

बाद ख़ुदा है सबसे बरतर
शाफ़ि-ए-महशर, शाफ़ि-ए-महशर

महरे रिसालत, माहे नुबुव्वत ☆ रोज़े क़ियामत, वक़्ते सऊबत

आपकी होगी सबको ज़रूरत ☆ शाफ़िए वारिस, साक़ी-ए-कौसर

बाद ख़ुदा है सबसे बरतर
शाफ़ि-ए-महशर, शाफ़ि-ए-महशर